श्रीहित राधावल्लभ अष्टयाम

[सेवा-भावना पद-संग्रह]

श्रीहित साहित्य प्रकाशन

श्रीहित कृपा मूर्ति स्वामी श्रीहितदासजी महाराज
संस्थापक अध्यक्ष - श्रीहिताश्रम सत्संग-भूमि
गांधी मार्ग, वृन्दावन, पिन-२८११२१

❀ श्रीहितं वन्दे ❀

श्रीहित राधावल्लभ अष्टयाम

[सेवा-भावना पद-संग्रह]

प्रधान सम्पादक :-

डॉ॰ श्यामबिहारीलाल खण्डेलवाल

(एम.एस.सी.एल.टी, संगीत विशारद)

सम्पादक :

डा. श्री जयेश खण्डेलवाल

(श्रीहित जस अलीशरण) वाणी सेवी

संस्थापक :
श्री हितकृपा मूर्ति स्वामी श्रीहितदासजी महाराज

प्रकाशक
हित साहित्य प्रकाशन
गांधी मार्ग, वृन्दावन - २८११२१
फोन : (०५६५) २४४२१९१, २४४२८०७, ६४५४३८७

प्रधान सम्पादक :
डॉ॰ श्यामबिहारीलाल खण्डेलवाल

तृतीय संस्करण सं. २०६६
१००० प्रति

प्राप्ति स्थल :
श्रीहिताश्रम सत्संग भूमि
गांधी मार्ग, वृन्दावन

मुद्रक :
राधा प्रेस,
२४६५, मेन रोड कैलाश नगर, दिल्ली -३१

निभृत निकुंज
विलासी
ठाकुर
श्रीराधाबल्लभलालजी
महाराज

वंशी अवतार,
प्रेमस्वरूप रसिकाचार्य
अनन्त श्रीहित हरिवंशचन्द्र
महाप्रभु जी

।। श्रीराधा ।।
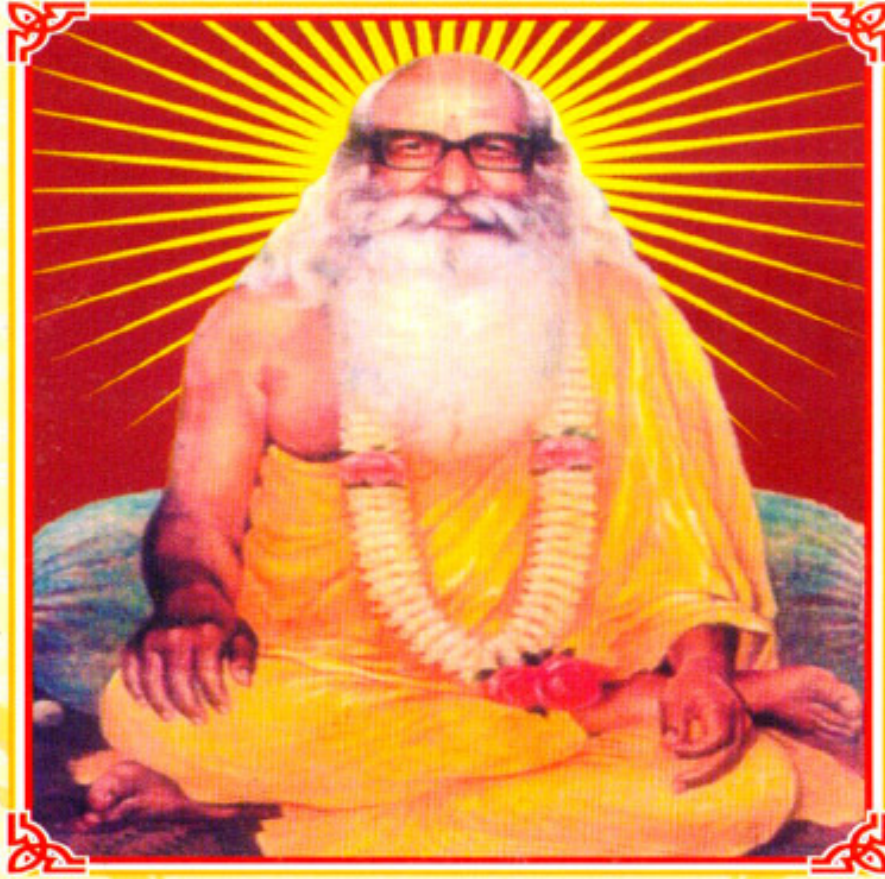
श्री हित कृपा मूर्ति परम भागवत

स्वामी श्री हितदास जी महाराज

श्री राधावल्लभ जी
की लाडली सखी
श्रेया अग्रवाल
(मुम्बई)

''श्रीहितं वन्दे''

दो शब्द

परमाचार्य श्री हित हरिवंश महाप्रभु ने अपने लाड़िले ठाकुर श्री हित राधावल्लभ लाल की रसोई पाक में प्रयुक्त होने वाली लकड़ी बीनने जैसी सेवा जिसे हम सामान्य बुद्धि के लोग अति लघु सेवा कार्य मानते हैं, निज कर-कमलों से कर जहाँ एक ओर प्रगट सेवा के महत्त्व को दर्शाया, वहीं दूसरी ओर सेवा कुंज की सघन निकुञ्जों में स्वेष्ट की सेवा-भावना में संलग्न रह मानसी-सेवा के महत्त्व को प्रगट किया, महत्त्व क्या प्रगट किया वह तो उनका नित्य चिन्तनीय विषय है, उसके बिना तो वह रह ही नहीं सकते । वास्तव में सेवक वही है, जो सेवा के बिना रह न पाये । यदि जिसे हम प्रियतम कहते हैं, उसका सतत् स्मरण न बना रहे तो हम कैसे प्रेमी ?

श्री हिताचार्य जी बात तो क्या कहें । उनके ग्रन्थों में युगल के रसमय लीला-विलास के बहुत भाँति से वर्णन मिलते हैं । नित्य सिद्ध बपुधारी होते हुए भी उन्होंने श्री राधा-सुधा निधि जी में एक साधक की भाँति अनेकानेक रसमयी अभिलाषाओं का चित्रन किया है । सम्प्रदायों के अन्यान्य अनेकों रसिक महानुभावों ने इस रसखेत वृन्दाविपिन में सतत् क्रीड़ा-पारायण हित दम्पति की अष्ट प्रहरीय सेवा परिचर्या का वर्णन अपनी वाणियों में किया है । समय-समय श्री राधावल्लभ लाल की अष्याम सेवा सम्बन्धी प्रकाशन होते रहे हैं । प्रस्तुत संस्करण से पूर्व हमारे परम पू० गुरुवर्य्य श्री हितकृपा मूर्त्ति श्री हितदास जी महाराज द्वारा दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं । इस संस्करण में हमारे परम हितैषी आदरणीय श्री श्याम बिहारी खण्डेलवाल ने सम्पादकीय में बड़े ही सार-संक्षिप्त रूप से सुन्दर सुष्ठु शब्दों में प्रिया-लाल की अष्ट प्रहरीय

सेवा का संकेत किया है। साथ-साथ हम श्री डा० जयेश खण्डेलवाल ''श्री हितजस अलिशरण'' जी के भी हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अथक परिश्रम कर पदों को संकलित करने में एवं श्री हित रसिक नामावली में श्री हित राधावल्लभीय रसिक सन्त महानुभावों का, जिनका दर्शन तो हमारे लिए सम्भव नहीं क्योंकि हर व्यक्ति 'सेवक' दामोदर दास जी नहीं होते जो महाप्रभु को अन्तर्ध्यान होने के पश्चात् भी प्रकट कर ले; उनके नाम स्मरण का अवसर प्रदान कर अति कृपा करी है । श्री हित रसिक नामावली जिसमें पूर्व में मात्र ५४ रसिकों का नाम स्मरण था, यह संख्या बढ़कर ५९० हो गई है, यह सब इनके गवेषणपूर्ण अध्ययन एवं परिश्रम का ही फल है । अतः धन्यवाद के पात्र हैं ।

अस्तु, भक्तिमती रसिक हृदय सुश्री सुशीला जी, जो अपनी पौत्री सुश्री श्रेया की पावन स्मृति में इसे प्रकाशित करवा रही हैं, वे भी धन्यवाद एवं आशीर्वाद की अधिकारिनी हैं । श्री जी कुमारी श्रेया अग्रवाल को अपने श्रीचरणों में अविचल स्थान प्रदान करें । अन्त में हम श्री राधाप्रेस के श्री व्यासनन्दन शर्मा एवं श्री वंशीवल्लभ शर्मा जी के भी अत्यन्त आभारी हैं जिनके अथक प्रयास से यह वाणी अल्प समय में ही रसिकजनों को प्राप्त हो गयी ।

इतिशम् ।

विनयावनत
महान्त श्री हित कमल दास
अध्यक्ष : श्री हिताश्रम, वृन्दावन
सचिव : श्री हितप्रिया किंकरी

प्राक्कथन द्वितीय संस्करण

वृन्दावनीय रसोपासना में श्रीहित मूर्ति युगल-किशोर की अष्टयाम (आठ प्रहर) सेवा का विशेष महत्व है। श्रीहित राधावल्लभ सम्प्रदाय के अनेक आचार्य एवं रसिक सन्तों ने विविध अष्टयाम ग्रन्थ लिखे हैं। परवर्त्ती काल में उन्हीं 'अष्टयाम' ग्रन्थों से समय समय की सेवा-भावना के पदों का संकलन करके कई अष्टयाम (सेवा भावना पदावली) के लघुकाय ग्रन्थ प्रकाशित होते रहे हैं।

प्रस्तुत संग्रहीत अष्टयाम भी उसी परम्परा का एक क्रम है। श्रीहित साहित्य प्रकाशन, द्वारा प्रकाशित अष्टयाम का प्रथम संस्करण समाप्त हो गया, अतएव यह द्वितीय संस्करण कुछ परिवर्तन एवं परिवर्द्धन के साथ पुनः मुद्रित-प्रकाशित होने जा रहा है। इस संस्करण में शयन के पदों का विपुल संग्रह किया गया है। साथ ही श्रीराधावल्लभ जी का व्याहुला एवं रसिक नामावलि भी संग्रहीत कर दी गई है जो रसिक भक्तों के लिए अधिक उपयोगी है। सायंकालीन सन्ध्या आरती के पश्चात् गेय पदावली के साथ श्रीसेवक-वाणी का पंचम प्रकरण-'श्रीहित इष्टाराधन' विशेष रूप से इस संस्करण में संग्रहीत है, क्योंकि सन्ध्या आरती के पश्चात् इस प्रकरण का गान प्रतिदिन ठा॰ श्रीहित ललित लाड़िली लालजी महाराज विराजमान श्रीहिताश्रम के समक्ष किये जाने की एक सुष्ठु परम्परा स्थापित हो गयी है।

ग्रन्थ की प्रकाशकीय सामग्री के संकलनादि कार्यों में मुझे प्रिय नागरीदास से पूर्ण सहयोग मिला है एतदर्थ वे मेरे लिये विशेष स्नेह के पात्र तो हैं ही, आशीष एवं कृपा के पात्र भी हैं।

ग्रन्थ के मुद्रण एवं प्रकाशन में सुश्री पुष्पलता देवी, श्री मुरारीलाल अग्रवाल, जबलपुर ने अपना अर्थ-सहयोग देकर श्रीहित-साहित्य प्रकाशन के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

– स्वामी हितदास

सम्पादकीय

अनन्तश्री विभूषित गोस्वामी श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित **'नित्यविहार प्राण श्रीराधा चरण प्रधान वृन्दावन रसोपासना'** में राधा किंकरी रूप ही उपासक का अपना नित्य सिद्ध वपु-निज रूप [१] है। इस किंकरी रूप की प्राप्ति कर परमोपास्य अद्वय युगल एकात्म श्रीहित दम्पतिजू की सेवा करना ही इस रसोपासना का परम लक्ष्य किंवा परम साध्य [२] है। आचार्य चरण ने इस साध्य की प्राप्ति के लिए अन्य कोई साधन न बताकर इस साधक शरीर से स्वेष्ट की मानसी सेवा तथा प्रगट सेवा करने का मधुर मंगल विधान किया है।

यह सेवा विधान आचार्यचरण के चिरस्मरणीय चरित्रों और स्वरचित वाणियों में तो मूर्त्त हुआ ही है। आपने अपने शिष्यों को स्वयं श्रीमुख से यह आज्ञा भी प्रदान की है–

१. आज्ञा तिनकौं दई गुसाँईं। हरि-हरिजन-सेवा पधराई।।
२. हित-पद्धति सौं प्रभु पधराये। राग-भोग सेवत गुन गाये।।

---

१. वृन्दारण्ये नव रसकला कोमलप्रेममूर्तेः
श्रीराधाश्चरण कमलामोद माधुर्यसीमा।
राधा ध्यायन् रसिक तिलकेनात्त केलि विलासां
तामेवाहं कथमिह तनुं न्यस्य दासी भवेयम्।
– श्रीराधासुधानिधि- गो॰ हित हरिवंश जी, श्लोक सं॰ २६१

२. दुकूलं विभ्राणामथ कुचतटे कंचुकपटं
प्रसादं स्वामिन्याः स्वकरतलदत्तं प्रणयतः।
स्थितां नित्यं पार्श्वे विविध परिचर्यैक चतुरां
किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये।।
– श्रीराधासुधानिधि- गो॰ हित हरिवंश जी, श्लोक सं॰ -५२

३. सेवा संग हुती जो तिनकी। तासौं इकरस वृत्ति जु चित की॥
सदाचार सौं भोग लगावैं। ता प्रसाद बिनु और न पावैं॥

–रसिक अनन्य माल, भगवत मुदित जी गौड़ीय कृत

तदनुसार इन दोनों प्रकार की सेवाओं की अखण्ड परम्परा अद्यावधि सुरक्षित है। सम्प्रदाय में जहाँ पर एक ओर प्रगट सेवा विराजमान करने की यह विधा अक्षुण्ण रूप से चली आ रही दिखाई देती है, वहीं पर दूसरी ओर सम्प्रदाय के अनेकानेक वाणीकारों द्वारा इस सेवा-विधान के वाङ्मय स्वरूप **'अष्टयाम सेवा समय प्रबन्ध'** रचना की अखण्ड परम्परा भी अद्यावधि संजीवित बनी हुई है, किन्तु ये रचनायें हस्तलिखित होने के कारण सर्व सुलभ नहीं रहीं।

प्रस्तुत **'श्रीराधाबल्लभ अष्टयाम सेवा-भावना पद-संग्रह'** अनेक रसिक सन्तों के उन पदों का संकलन है जिनका श्रीराधावल्लभलाल की अष्ट प्रहरीय सेवा भावना से सम्बन्ध है।

वृन्दावनीय रसोपासना में युगल की आठ प्रहर की सेवा अपना विशेष महत्व रखती है। जो रसिक भक्त जन इस पद्धति से अपने इष्टदेव युगलवर की सेवा करते हैं या करना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए इन पदों का एक विशेष क्रम से संकलन करने की प्राचीन परिपाटी का-ही इस संग्रह में अनुसरण किया गया है। अष्टयाम सेवा का क्रम संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार समझना और करना चाहिये–

१. प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में शैय्या त्याग करके इष्ट-स्मरण नीचे लिखे शीर्षकों में उल्लिखित पदों के अनुसार करे–

श्रीहित मंगल गान और प्रभाती गान (पृष्ठ १ से ६)

२. तत्पश्चात् शौच, स्नानादि दैनिक कृत्यों से निवृत्त होकर, स्वच्छ एवं शुद्ध वस्त्र (धोती, दुपट्टा, बगलबन्दी आदि) धारण करके, ललाट पर तिलक स्वरूप धारण करके अपने इष्ट मंत्र के जाप से

अन्तर्मन की शुद्धि करे; पश्चात् मन्दिर के द्वार पर प्रणाम करके श्रीराध ाकिंकरी भाव से भावित होकर मन्दिर में प्रवेश करे। मन्दिर की सोहनी-सेवा **'सोहनी-सेवा'** गान (पृष्ठ-६) के साथ करे। तत्पश्चात् पूजा-सेवा के पार्षदों (वर्तनों) को स्वच्छ साफकर मन्दिर मार्जन करे, जल भरकर रखे और **'आजु देखि ब्रज सुंदरी'** इत्यादि पदों (पृष्ठ-९) का गान करते हुए युगल के चरण चाँपकर उन्हें जगाकर चौकी पर विराजमान कराके मुख प्रक्षालन करावे, पश्चात् माखन, मिश्री, उष्ण दुग्ध, मोदक आदि सामग्री भोग रखे। भोग आरोगाने के पश्चात् मंगल आरती (पृष्ठ-१२) करके पुनः मंगल गान (पृष्ठ-१) करे और साष्टांग प्रणिपात पूर्वक दण्डवत् प्रणाम करे।

३. मंगल आरती प्रसाद ग्रहण के उपरान्त युगल के वन विहार की भावना वाणियों में वर्णित पदों के अनुसार करे (पृ०-१३-२०) और युगल को फुलेल मर्दन, उद्वर्त्तन (उवटन) करावे। (पृ०-२०-२२) ऋतु के अनुकूल जल से स्नान कराके उन्हें नख-शिख वस्त्राभूषण धारण करावे, इत्र परिमल लगावे, खौर चन्दन पत्रावली से श्रृंगार कराके व मुकुट-चन्द्रिका आदि धारण कराके सिंहासन में विराजमान करे; फिर धूप प्रज्जवलित करके मन्दिर के प्रांगण को सुगन्धित करे। इसके साथ ही (पृ०-२२-२३) **'आजु नीकी बनी श्रीराधिका नागरी'** एवं **'आजु नागरी किशोर भाँवती विचित्र जोर.....'** का गायन करे।

४. तत्पश्चात् पटान्तर करके श्रृंगार भोग में मोदक मिष्ठान्न-पकवान भोग रखे और श्रृंगार भोग के पदों का गायन करे। (पृ०-२३) भोग आरोगाकर ताम्बूल वीटिका अर्पित करे और श्रीलालजी को वंशी धारण कराके श्रृंगार-आरती (पृष्ठ-२४) **'श्रीराधावल्लभलाल की आरती'**

अथवा **'बनी श्रीराधामोहन की जोरी'** इस पद के गान पूर्वक करे, और **'बेसर कौंन की अति नीकी'** इस पद से जल वारे। फिर **'युगल ध्यान'** (पृष्ठ-२६) शीर्षक के दोहों का ध्यान पूर्वक गान करे। गान सम्पन्न करके इष्ट-चरणों में साष्टांग प्रणिपात पूर्वक प्रणाम करे।

५. संभव हो तो घड़ी (४८ मिनट) तक इष्टदेव के समक्ष अन्यान्य लीला गुण माधुरी के पद-गीतों का गान करे। (पृ०-२७-३२)और मध्याह्न पूर्व राजभोग में सखरी-निखरी सभी सामग्री भोग रखे और राजभोग के पद (पृष्ठ-३२) गान करे। भोग कम से कम आधा घंटा रखे पश्चात् आचमन (पृष्ठ-३४) के पद गान पूर्वक मुख प्रक्षालन कराके ताम्बूल अर्पित करे और आरती **'आरती मदनगोपाल की कीजिये'** आदि पद-गान के साथ (पृष्ठ-३४-३५) करे तत्पश्चात् युगलवर को विश्राम के लिये शैय्या में पधरावे। इस समय युगल सरकार के मुकुट-चन्द्रिका कुंडल एवं आभूषणों को उतार कर श्रीअंगों को हल्का कर दे। विश्राम कालीन समस्त व्यवस्था (जल झारी, पंखा आदि) समुचित स्थान पर रखे दे। शयन पद (पृष्ठ-३६-३७) के अनुसार गान और व्यवस्था करे।

६. दोपहर ढलने पर लगभग ३ बजे पुनः मन्दिर में प्रवेश करके उत्थापन (मंगला के अनुसार ही) व्यवस्था करे। (पृ०-३८) पद पर दिये गये पदानुसार युगल को शय्या से उठाकर चौकी पर विराजमान करके, मुख प्रक्षालन, उत्थापन भोग कराके श्रृंगार (श्रृंगार कालीन सेवा के समान) धारण करावे और सिंहासन पर विराजमान करके **''श्रीराधा मेरे प्रानन हूँ ते प्यारी''** (पृष्ठ-३९) पद के गान पूर्वक धूप प्रज्जवलित करे। तदुपरान्त पटान्तर करके वंशी धारण कराके दर्शन करावे। और (पृष्ठ ३९ से ४१) तक की समस्त पद-शृंखला का भाव पूर्वक गान करे।

७. संध्या पूर्व (ऋतु के अनुसार ५ से ६।। बजे तक) संध्या भोग रखे और संध्या भोग के पदों (पृष्ठ-४२ से पृष्ठ-४५) का गान करे पश्चात् कीर्तन **'जै जै राधावल्लभ श्रीहरिवंश'** करके फिर **'आरती कीजै श्याम सुन्दर की'** (पृष्ठ-४५) गान के साथ संध्या आरती करे और इष्ट-स्तुति (पृष्ठ-४६-५०) गान करे। गान-स्तुति सम्पन्न करके श्रीराधा सुधा-निधि एवं श्रीराधा उप सुधा-निधि के कतिपय भावपूर्ण श्लोकों का सस्वर पाठ (पृ०-५१-५४) भी करे। पश्चात् इष्ट-चरणों में साष्टांग प्रणिपात करे व चरणामृत-प्रसाद ग्रहण करे।

८. संभव हो तो रात्रि ८ बजे तक युगल के समक्ष रूप-गुण लीलादि के पद साहित्य का वाद्यादि के साथ समाज गान करे (पृ०-५४-५८) पश्चात् शयन-भोग रखे और शयन-भोग के पदों (पृष्ठ- ५८-६१) का गान भाव-भावना पूर्वक करे। भोग का समय कम से कम आधा घंटा रखने का है पश्चात् आचमन, मुख प्रक्षालन कराके ताम्बूल वीटिका अर्पित करके आरती (पृष्ठ-६१) पद- **रस निधि सैन आरती......** के गान पूर्वक आरती करे और युगल-किशोर के वस्त्र धारण कराके शय्या में शयन करावे। शय्या के समीप चौपड़, इत्र, मोदकादि भोग, दूध-जल झारी, आदि उपभोग्य वस्तुयें रात्रि-विहार की भावना (पृ०-६२-९०) से शय्या गृह में रख दे। युगल शयन की सुखद व्यवस्था करके मन्दिर के पट-मंगल करे। प्रणाम करके मन्दिर से बाहर आकर ही प्रसाद ग्रहण करे।

संक्षेप में यह अष्ट प्रहर सेवा का सामान्य विधान एवं भाव है। श्रीसुधर्मबोधिनीकार महात्मा श्रीलाड़िलीदासजी प्रगट सेवा की आवश्यकता वर्णन करते हुए लिखते हैं कि-

प्रगट भाव की नींव दृढ़, कीजै कृपा मनाय।
तब निश्चल हित महल रस, रहै चित्त ठहराय।।

प्रगट भाव आवेस सौं, कीजै विजै स्वभाव।
वृन्दावन रसरीति में, तब उपजै विश्वास॥
प्रगट भाव सेवा बिना, चित्त न आवै प्रेम।
प्रेम बिना दरसै नहीं, नित्य केलि वन नेम॥

प्रस्तुत अष्टयाम में श्रीराधावल्लभीय सेवा विधान के पदों का संग्रह तो है ही साथ ही नित्य विवाहोत्सव के पदों, को भी दे दिया गया है। इस प्रकाशन की नूतन देन यह है कि अब तक के प्रचलित अष्टयामों के अन्तर्गत शयन- 'भोग के जिन पदों में पद-निर्माता का नामोल्लेख नहीं है उनके नाम युक्त पदान्त के अन्तिम चरण भी टिप्पणी में प्रकाशित कर दिये गये हैं।

इस संग्रह में अनेक रसिक वाणीकारों के उन अप्रचलित पदों को भी स्थान दिया गया है जो रस भारती संस्थान वृन्दावन की विभिन्न पाण्डुलिपियों में सुरक्षित हैं।

अभी तक के प्रकाशनों में रसिक नामावली के अन्तर्गत केवल ५४ हित रसिकों के नाम ही पढ़ने को मिलते थे किन्तु प्रस्तुत प्रकाशन में अब उनकी संख्या-५९० पर पहुँच गई है। यह रसिक नामावली भी रसभारती संस्थान वृन्दावन में सुरक्षित रसिक चरित्र ग्रन्थों, वृन्दावन परिक्रमा वर्णनात्मक ऐतिहासिक ग्रन्थों, गुरु-परम्परा वर्णनात्मक ग्रन्थों, और अनेकानेक अज्ञात रसिक वाणीकारों द्वारा प्रणीत प्राचीन वाणी ग्रन्थों से खोज-खोजकर तैयार की गई है। यदि इस संकलन से भावुक भक्तों को किंचित भी हार्दिक संतुष्टि व पुष्टि हुई तो हमारे श्रम का साफल्य ही माना जायगा।

– डॉ० श्यामबिहारी खण्डेलवाल

विषय-सूची

❀ श्रीहितं वन्दे ❀

श्रीहित राधावल्लभ अष्टयाम

(सेवा भावना पद-संग्रह)

श्रीहित मंगल गान

[१]

जै जै श्रीहरिवंश व्यास कुल मण्डना।
रसिक अनन्यनि मुख्य गुरु जन भय खण्डना॥
श्रीवृन्दावन वास रास रस भूमि जहाँ।
क्रीड़त श्यामा-श्याम पुलिन मंजुल तहाँ॥
पुलिन मंजुल परम पावन, त्रिविधि तहँ मारुत बहै।
कुंज भवन विचित्र शोभा, मदन नित सेवत रहै॥
तहाँ संतत व्यासनन्दन, रहत कलुष विहंडना।
जय जय श्रीहरिवंश व्यास कुल मंडना॥१॥
जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र उद्दित सदा।
द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा॥
पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी।
करुना-सिन्धु कृपाल काल भय सब हरी॥
हरी सब कलि काल की भय, कृपा रूप जु वपु धर्यौ।
करत जे अनसहन निंदक, तिनहुँ पै अनुग्रह कर्यौ॥
निरभिमान निर्वैर निरुपम, निष्कलंक जु सर्वदा।
जय जय श्रीहरिवंश चन्द्र उद्दित सदा॥२॥
जय जय श्रीहरिवंश प्रसंशित सब दुनी।
सारासार विवेकित कोविद बहु गुनी॥
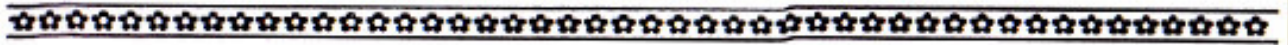
गुप्त रीति आचरन प्रगट सब जग दिये।
ज्ञान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये॥
भक्ति हित जे शरन आये, द्वंद दोष जु सब घटे।
कमल कर जिन अभय दीने, कर्म बंधन सब कटे॥
परम सुखद सुशील सुंदर, पाहि स्वामिनि मम धनी।
जय जय श्रीहरिवंश प्रसंशित सब दुनी॥३॥
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुन गाइहैं।
प्रेम लक्षना भक्ति सुदृढ़ करि पाइहैं॥
अरु बाढ़ै रसरीति प्रीति चित ना टरै।
जीति विषम संसार कीरति जग विस्तरै॥
विस्तरै सब जग विमल कीरति, साधु संगति ना टरै।
वास वृन्दाविपिन पावै, श्रीराधिका जु कृपा करैं॥
चतुर जुगल किशोर 'सेवक' दिन प्रसादहिं पाइहैं।
जय जय श्रीहरिवंश नाम गुन गाइहैं॥४॥

[२]

मधुरितु माधव मास सुहाई।
भाग प्रकाश व्यासनन्दन मुख, फूल्यौ कमल अमल छबि छाई॥
श्रवत मधुर मकरंद सुजस निज, कुंज-केलि-सौरभ सरसाई।
सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन, 'कृष्णदास' सुख सार सदाई॥

[३]

नमो-नमो जय श्रीहरिवंश।
रसिक अनन्य वैंनु कुल मंडन, लीला मानसरोवर हंस॥
नमो जयति श्रीवृन्दावन सहज माधुरी, रास-विलास-प्रसंश।
आगम-निगम अगोचर राधे, चरन-सरोज 'व्यास' अवतंस॥
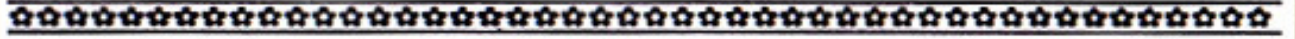
[४]

प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाऊँ।
करहु कृपा श्रीदामोदर मोपै, श्रीहरिवंश-चरन-रति पाऊँ॥
गुन गंभीर व्यासनंदन जू के, तुव परसाद सु जस-रस गाऊँ।
नागरीदास के तुमहिं सहायक, रसिकअनन्यनृपति मन भाऊँ॥

प्रभाती गान

[५]

प्रात समय श्रीतारासुत कौ, उठतहि रसना लीजै नाम।
कलि मल तारन अधम उधारन, प्रेम भक्ति दृढ़ पूरन काम॥
वंशी रूप जगत हितकारी, लाड़ लड़ावत स्यामा-स्याम।
'जैश्री जोरीलालजू' की आशा पुजवौ, वास देहु वृन्दावनधाम॥

[६]

वन्दे तारातनयमुदारम्।
आगम-निगम अलक्ष्य अगोचर, प्रगटित विशद सु विपिन विहारम्॥
रसिक सभा मंडन रस भूषन, निज हित-रीति प्रीति विस्तारम्।
श्रीराधा रति केलि कुंज रस, रसिक अनन्य वहन रसभारम्॥
निरभिमान करुना-वरुनालय, आरत सरनागत प्रतिपारम्।
'नेहलता हित' देहि दयामय, निज पद-पल्लव रस घन सारम्॥
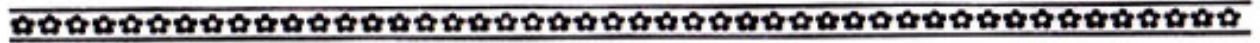
[७]

वन्दे सेवक स्वामिनि रूपम्।
करुना-वपु धरि परम कृपा करि, प्रकट कियौ हरिवंश स्वरूपम्।।
अविगत गति दुर्लक्ष्य सबनि तें, प्रगटौ मो हिय रूप अनूपम्।
'नेहलता' दामोदर सुन्दर, द्रवौ वेगि सह रसिक सुभूपम्।।

[८]

नमो-नमो वृन्दावन रानी।
रसिक किशोर लाल प्रीतम की, महारानी सुखदानी।।
परम उदार कृपालु छबीली, नव निकुंज रस सानी।
नवल किशोरी गोरी भोरी, सकल कला गुन खानी।।
सरनागत प्रतिपाल दयामयि, रसिकनि हित प्रगटानी।
आगम-निगम-पुरान-अगोचर, श्रीहरिवंश वखानी।।
रसिकसिरोमनिलाल-कृपा बिनु, बात जाति नहिं जानी।
'नेहलता हित' प्यारी मोकौं, करौ दासि मन-मानी।।

[९]

हित प्रभु! तुम पद हौं सिर नायौ।
तुम्हरी कल कीरति नित गाऊँ, यह मेरे मन भायौ।।
कबहूँ तौ सुनि हौ करुणानिधि, यह विश्वास समायौ।
मदनमोहन हित जीवत ही अब, यौं जीवन फल पायौ।।

[१०]

हे हित! क्यौं त्यागी निजु बानि।
कहौ कृपालु कृपा को करिहै, कहा जु मन में ठानि।।

प्रफुलित होत जलज जब जल में, रोष रविहि ह्वै आय।
यह महान दुख वारिज अपनौं, कापै जाय सुनाय।।
बैठनि देय न तरु निज छाया, देय नदी नहिं नीर।
तौ प्रभु कहौ पथिक अरु प्यासे, कहैं कौन पै पीर।।
रहै चकोरनि तें छिपि-छिपि शशि, काठ न तैरै नीर।
दीपक हरै तिमिर कौं नहिं जो, सहै कौंन ये पीर।।
जो नहिं दाहै अगिनि सती कौं, कापै करै पुकार।
श्रीहित करुणा-निधि! करि करुणा, करौ सुदृढ़ भव पार।।
दासि मदनमोहन अपनावौ, दरसावौ निजु केलि।
प्यारी-प्रीतम श्रीवृन्दावन, हित ललितादि सहेलि।।

[११]

श्रीहित प्रभु! यतननि करि-करि थक्यौ।
तौ हू ये मूरख मन मेरौ, विषयनि-जाल फँस्यौ।।
जहाँ वार्ता होत विषय की, तहाँ अधिक सुख पात।
चंचल चपल भजन कौ बैरी, कहत न आवै बात।।
विविध भाँति कहि-कहि समुझायौ, धरम-मरम जु सुनाय।
चौरासी लख जन्मनि की सब, दुखद जु गाथा गाय।।
कीनौं क्यौं अब गहर कृपा करि, एकहि यहै उपाव।
दासि मदनमोहन कौं अपनी, रस-सम्पति दरसाव।।

[१२]

प्रभु! अब कीजै वेगि सँभार।
कहत-कहत हार्‌यौ जदपि, तद्दपि जु करत पुकार।।
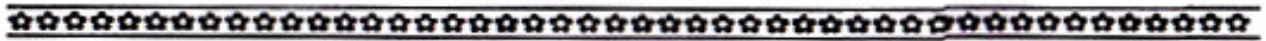
भयौ मैं अति विकल बल करि, हीन कहूँ कहा टेरि।
मानि निज सम्बन्ध मो तन, लेहु रंचक हेरि॥
रखौ अपने रूप माँहीं, प्रिया-प्रियतम संग।
मदनमोहन दासि तुम बिनु, को लगावै अंग॥

सोहनी-सेवा

[१३]

दोहा-

रे मन! नवल निकुंज की, सुमिरि सोहनी प्रात।
लपटी प्यारी-चरन-रज, लसत सहचरी हाथ॥१॥
अहो सोहनी सोहनी! यह मति मोकौं देहु।
अति अधीनता दीनता, पद-रज सौं नित नेह॥२॥
तो समान कब सहचरी, मोहू कौं अपनाँय।
नव निकुंज रति माधुरी, प्रात सुनावैं गाय॥३॥
विरमि-विरमि हा सोहनी! देखि प्रिया-पद-अंक।
प्रीतम मन अटक्यौ जहाँ, मेटत तिन्हें निशंक॥४॥
श्रीप्यारी-पद-रेणु में, उमगत लोटत लाल।
कोमल कर चुटकीनु लै, तिलक बनावत भाल॥५॥
कण-कण में जा रेणु के, बसत लाल कैं प्रान।
हाय सोहनी! ताहि यौं, साधारण मत मान॥६॥
अहो सोहनी सोहनी! यह न सोहनी रीति।
मो प्राणन की प्राण रज, ता सँग करत अनीति॥७॥

कण-कण पै वारौं यहाँ, कोटिन तन-मन-प्रान।
सो रज दूर न डार तू, नैंकु निहोरौ मान॥८॥
अवसि झारि जो डारिवौ, यह रज प्राणाधार।
तौ मो तन-मन-प्राण में, हिय में जिय में हार॥९॥
कोटि विश्व ऐश्वर्य सुख, नाहिं एक कण तूल।
सो रज तोकौं खेल है, मेरी जीवन-मूल॥१०॥
हरि-हर-विधि ललकत रहत, लहत नहीं कण एक।
ताहि झारि यौं फैंकिवौ, तुम्हें कौंन यह टेक॥११॥
इतने हू पर सोहनी! लागौ प्यारी मोहि।
अहो कौंन यह मोहनी, लेत जु प्राणनि मोहि॥१२॥
मो प्राणनि की प्राण रज, तासन करत अनीति।
तदपि सोहनी! तोहि में, बाढ़त मेरी प्रीति॥१३॥
रसिक सहचरी करनि कौ, पायौ तुमने प्यार।
तेहि मदमाती चलत हौ, नीति-अनीति बिसार॥१४॥
याही सौं प्यारी लगौ, जदपि करत विपरीति।
छकनि छकी रति-केलि की, सुनि सहचरि मुख गीत॥१५॥
अहो सोहनी! मोहनी, सर्वोपरि यह प्रीति।
यह रस मादिक है जहाँ, तहाँ न नीति-अनीति॥१६॥

कुण्डलिया-

मोहू अपनी सी करौ, सौंपहु सखियनि हाथ।
परम प्रीति की छकनि उर, चरण-रेणु में माथ॥
चरण-रेणु में माथ, श्रवण रति-केलि सुधा रस।
अंगराग उर हार, परैं रति में जु अवनि खस॥

अंगराग उर हार, प्रात उठि झारौं सोहू।
बिसरै नीति-अनीति, प्रीति अस दीजै मोहू॥१७॥

दोहा--

यह रज यह गति यह रहनि, यह सुहाग यह भाग।
देहु सोहनी करि कृपा, यह अपनौं अनुराग॥१८॥
तुम मेरे हाथनि परौ, मो मन तुम तन माँहिं।
एकमेक ह्वै सोहनी, चरन-रेनु विलसाँहिं॥१९॥
मैं रज मिलि रज होउँगी, तुम जु बुहारौ आय।
तुम मोहि ठेलत चलौगी, मैं तुमसौं लपटाय॥२०॥
अहो सोहनी! मम हृदय, रहै तोहि लपटाय।
प्यारी-प्रीतम चरन-रज दुरलभ देहु मिलाय॥२१॥
धन्य-धन्य वे रसिकजन, मन-तन कुंजनि आय।
तुम्हैं हाथ लै सोहनी, भवन बुहारत गाय॥२२॥
या तन हू मैं प्रीति सौं, तुमही कौं दुलरात।
श्रीवन वीथिनु रमत हैं, लियैं सोहनी हाथ॥२३॥
तिन चरनन में सोहनी देहु प्रीति अति मोहि।
'हितभोरी' यह आश धरि, दिन-दिन सुमिरौं तोहि॥२४॥

❀

मंगल समय

[१४]

आजु देखि ब्रजसुंदरी मोहन बनी केलि।
अंश-अंश बाँहु दै किशोर जोर रूप-रासि,
मनु तमाल अरुझि रही सरस कनक-बेलि॥
नव निकुंज भ्रमर-गुंज मंजु घोष प्रेम-पुंज,
गान करत मोर पिकनि अपने सुर सौं मेलि।
मदन मुदित अंग-अंग बीच-बीच सुरत रंग,
पल-पल हरिवंश पिवत नैंन-चषक झेलि॥

[१५]

सखी लखि कुंज धाम अभिराम।
मणिनु प्रकास हुलास जुगलवर, राजत स्यामा-स्याम॥
हास-विलास विनोद मोद मद, होत न पूरन काम।
जय श्रीरूपलाल हित अलि दंपति-रस, सेवत आठौं याम॥

[१६]

अबहि नैंकु सोये हैं अरसाय।
काम-केलि अनुराग रस भरे, जागे हैं रैंन विहाय॥
बार-बार सुपने हू में सूचत, सुरत रंग के भाय।
यह सुख निरख सखीजन प्रमुदित, नागरीदासि बलि जाय॥

[१७]

मुदे दृग पानिप आनन चारु।
सुपने माँहिं सुरत रँग बूड़त, हितअलि मन क्रीड़ा ये चारु॥

नेति-चाटु वच द्वन्द पर्‌यौ है, मच्यौ है दपटि रसिकमनि सारु।
झगर निवार दियौ रस दुहुँवनि, अदलि बदलि विस्तार॥
इहै भौ हठी हठीलौ निजु मन, हित हरिवंश उदार।
तन-मन मथन कियैं सचु पावै, 'प्रियादासि' बलिहार॥

[१८]

प्रात समय नव कुंज द्वार ह्वै, ललिता जू ललित बजाई बीना।
पौढ़े सुनत स्याम-श्रीस्यामा, दंपति चतुर प्रवीन-प्रवीना॥
अति अनुराग सुहाग परस्पर, कोक-कला गुन निपुन नवीना।
बिहारिनिदासि बलि-बलि बंदिस पर, मुदित प्रान न्यौछावर कीना॥

[१९]

जागौ मोहन प्यारी श्रीराधा।
ठाढ़ीं सखी दरस के काजैं, दीजै कुँवरि जु होय न बाधा॥
हँसत-हँसत दोउ उठे हैं जुगलवर, मरगजे बागे फबि रहे दुहुँ तन।
वारत तन-मन लेत बलैयाँ, निरखि-निरखि फूलत मन ही मन॥
रंग भरे आनंद जम्हावत, अंश-अंश धरि बाँहु रहे गसि।
जैश्रीकमलनैंन हित या छबि ऊपर, वारौं कोटिक भानु मधुर शशि॥

[२०]

भोर भयैं सहचरि सब आईं। यह सुख देखत करत बधाई॥
कोउ वीना-सारंगी बजावैं। कोउ इक राग विभासहि गावैं॥
एक चरन हित सौं सहरावैं। एक वचन परिहास सुनावैं॥
उठि बैठे दोउ लाल रँगीले। विथुरी अलक सबै अँग ढीले॥

घूमत अरुन नैंन अनियारे। भूषन-वसन न जात सम्हारे॥
कहुँ अंजन कहुँ पीक रही फबि। कैसैं कही जाति है सो छबि॥
हार-वार मिलिकैं अरुझाने। निशि के चिह्न निरखि मुसिकाने॥
निरखि-निरखि निशि के चिह्ननि, रोमांचित ह्वै जाहिं।
मानौं अंकुर मैंन के, फिर निपजे तन माँहिं॥

[२१]

राधा-नंदकुमार कुञ्ज में, आलसजुत जागे रस पागे।
घूमत अरुन नैंन अनियारे, झूमि-झूमि दोउ अंकनि लागे॥
बैनी अरुझि रही अलकनि सौं, कुंचित केश कुण्डल सौं खागे।
'सेवादास' परस्पर विंवित, क्यौं सुरझैं तन-मन अनुरागे॥

[२२]

जुगल किशोर भोर उठि बैठे, रस भीने कीने दृग तारे।
ओढ़ैं नील-पीतपट सुन्दर, छबि-निधि कुँवर लड़ैते प्यारे॥
सहचरि बीन-मृदंग बजावति, गावत गुन गन रति अनुसारे।
जैश्रीहितहरिलाल निरखि दम्पति मुख, हरषि-हरषि तन-मन-धन वारे॥

मंगल भोग

[२३]

मंगल भोग अधिक रुचिकारी।
माखन मिश्री मोदक मेवा, सखियन आनि धरी भरि थारी॥

आलस बलित नैंन झपकौहैं, सोहैं करत लजत सुखकारी।
पिय निहोरि मुख देत ग्रास पुनि, खात खवावत करत हहारी॥
गीत निर्त्त अरु वाद्य करन हित, सब सखि आनि भई इकठाँ री।
ललिता ललित देत मुख बीरी, जैश्रीकमलनयन छबि पर बलिहारी॥

मंगल आरती

[२४]

निरखि आरती मंगल भोर। मंगल स्यामा-स्याम किसोर॥
मंगल श्रीवृन्दावन धाम। मंगल कुंज महल अभिराम॥
मंगल घंटा नाद सु होत। मंगल थार मणिनु की जोत॥
मंगल दुंदुभि-धुनि छबि छाई। मंगल सहचरि दरसन आई॥
मंगल वीन मृदंग बजावैं। मंगल ताल झाँझ झर लावैं॥
मंगल सखी जूथ कर जोरैं। मंगल चँवर लियैं चहुँ ओरैं॥
मंगल पुष्पावलि वरषाई। मंगल जोति सकल वन छाई॥
जैश्रीरूपलाल हित हृदय प्रकाश। मंगल अद्भुत जुगल विलास॥

[२५]

प्रातहिं मंगल आरति कीजै।
जुगलकिसोर रूप-रस-माते, अद्भुत छबि नैंननि भरि लीजै॥
ललिता ललित बजावति वीना, गुन गावति सोइ जीवन जीजै॥
जैश्री रूपलाल हित मंगल जोरी, निरखि प्रान न्यौछावर कीजै॥

प्रात:कालीन वन विहार

[२६]

आजु प्रभात लता मंदिर में, सुख वरषत अति हरषि जुगलवर॥
गौर-स्याम अभिराम रंग भरे, लटकि-लटकि पग धरत अवनि पर॥
कुच कुमकुम रंजित मालावलि, सुरत नाथ श्री स्याम धाम धर॥
प्रिया प्रेम कैं अंक अलंकृत, चित्रित चतुर सिरोमनि निजु कर॥
दंपति अति अनुराग मुदित कल, गान करत मन हरत परस्पर॥
जैश्रीहित हरिवंश प्रसंशि परायन, गायन अलि सुर देत मधुर तर॥

[२७]

लाल के आलस जुत सखि नैंन।
चितै-चितै मुसिकाय वदन-विधु, सूचत हैं सुख रैन॥
लटपटे पेंचन बाँधैं अलकन, भृकुटि चारु सुख दैन।
नासा बिच मोती अति झलकत, अधर-विम्ब चमकैंन॥
उर वनमाल लटकि लट टूटी, शिथिल वसन छबि मैन।
बैठे हैं भुज मेलि परस्पर, बोलत मधुरैं बैन॥
रहीं निहारि रसिक सखि भीजीं, कहा कहौं हित सैन।
जै श्री गोविन्द हित चितवति हैं प्यारी, पलक ओट तिरछैंन॥

[२८]

श्याम-गौर नव किशोर संग सखी चहूँ ओर,
बिहरत वृन्दा अरण्य आजु भोर री॥
कोकिल-पिक-शुक-चकोर करत फिरत शब्द घोर,
डोलि रहे हंस-जोर बोल मोर री॥

फूल रहे फूल डार झूले द्रुम फलनि-भार,
पंछी बहु बार-बार करत शोर री॥
रविजा के तीर-तीर परसत त्रिविध समीर,
निरखत हैं नव निकुंज जल-हिलोर री॥
अनुपम छबि अति अपार शोभा-सौन्दर्य-सार,
मोचत मद कोटि मार चित्त-चोर री॥
चेतन गति जड़न देत चेत होत जड़ अचेत,
निरखत हैं जासु ओर नैंन-कोर री॥
देखैं घन रूप श्याम दामिनि ज्यौं संग भाम,
जीवत शिव-दग्ध काम भौं-मरोर री॥
'कान्हदासि' कह्यौ मान निरखन हित विवि सुजान,
देह सौं दुराइ प्रान दै अँकोर री॥

[२९]

वन की शोभा देखौ प्यारे।
वन कौ देत निमंत्रन पुनि-पुनि, मधु माते ये अलि जु विचारे॥
कुहुकि-कुहुकि कैं तुमहिं बुलावत, ये मयूर आसक्त तिहारे।
तानौ सौ मारति यह कोकिल, आजु सुखद सुन्दर सब कारे॥
कौतुक कोऊ दिखावौ चलि बलि, कहा धरे उर माँहिं सुखारे॥
अली किशोरिनु कौं सुख दीजै, रुख लै उझकति खरीं दुवारे॥

[३०]

लटकि चलीं कुंजनि तें नागरि, सखी अंस भुज दीने।
अपर सखी कर लियैं आरसी, एक विजन कर लीने॥
मृदु मुसकाइ विलोकत पिय-दिसि, तेहिं रस पिय अति भीने।
श्रीहितदास विलासैं कुंज थल, निरुपम नेह नवीने॥
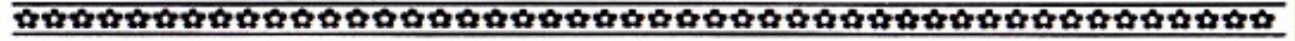
[३१]

कहाँ चली इतरात लाड़िली, प्रीतम कैं भुज अंशनि दीनी।
पीक कपोल अधर लग्यौ अंजन, कुच-नख-रेख कंचुकी झीनी॥
आलस जुत डगमगत परत पग, अरुन पीत पट लसत नवीनी।
'चम्पकली' की तलप रची तहाँ, रति-रस विलसत नेह-प्रवीनी॥

प्रातःकालीन रास

[३२]

देखौ वन बिहरति पिय-प्यारी।
नाचत गावत वैंनु बजावत, जमुना तट सुखकारी॥
वंशीवट के निकट अली सँग, रासमण्डली धारी।
उरप तिरप गति लेत सुलप अलि, 'हित ब्रजपति' बलिहारी॥

[३३]

रास में जराइ जटित मर्कतमणि हेम खचित,
नील-पीत-हरित रंग मंडली की शोभा।
अति अद्भुत झलकी छबि रही अभूत शोभा फबि,
बीच-बीच सुरत-रंग उपजत अति गोभा॥
एक रूप एक वैस एक ही समान सबै,
एक तें विचित्र एक चितवत चित चोभा।
'नवलसखी' अति उदार देखत छबि बार-बार,
वारि फेरि डारत मन मनसिज-मन-लोभा॥
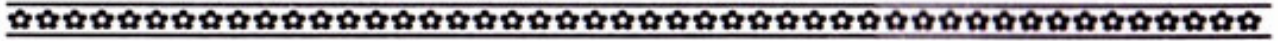
गेंद खेल

[३४]

दोउ मिलि खेलत हैं उठि भोर।
कुसुम गेंद लै करनि परस्पर, डारत हैं चित चोर॥
हँसत हँसावत खेल बढ़ावत, सखी माल चहुँ ओर।
दम्पति के हित में चित अटक्यौ, विवि मुख-चन्द्र-चकोर॥
गिरत गेंद लालन कर तें जब, गुलचा देत हँसि दौर।
हम हारे तुम जीतीं सब मिलि, कहत लाल कर जोर॥
प्यारी प्रेम-विवश लखि प्रीतम, लियैं अंक सिरमौर।
'निजुदासी' यह खेल झेल उर, लै बलाइ तृन तोर॥

लवंग लता मंदिर केलि

[३५]

ललित लवंग लता मन्दिर में, ललित लाल मिलि ललित नवाजी।
ललना लालन सहित अति प्रमुदित, ललिता ललित वीन वर साजी॥
ललित वदन में उठत ललित गति, आलापति दसनावलि राजी।
ललित चन्द में मनु चपला छबि, चंचलता तजि एकत भ्राजी॥
तैसैंई ललित कलित अलि-कुल मिलि,
ललित भाँति सब विपिन विराजी।
'चतुर्भुज मुरलीधरन' ललित अति,
देखत रतिपति गति सब लाजी॥
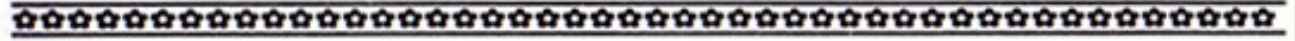
[३६]

लटकि-लटकि पग धरत लाड़िले लताभवन में रति रस ररैं।
सुख वरषत हरषत मन करषत, अंशनि पर विवि बाहुँ धरैं॥
मन्द-मन्द आवत कल गावत, नैंननि-भृकुटिनु भाव भरैं।
'चतुरअली हित' या छबि ऊपर, तन-मन-धन बलिहार करैं॥

बासंती क्रीड़ा

[३७]

भौंरनि-गुञ्ज सु लुञ्ज करै मन, कानन चित्र विचित्र रचावैं।
मान कौं मान न देत कछू, तिय लाल के हीय में हाल रचावैं॥
अद्भुत रंग अहो 'हित चातुर', दम्पति कैं जु उमंग खचावैं।
चाह-उछाह समेत अनंग, बसन्त अनन्तहि केलि मचावैं॥

[३८]

अहो चलि हो हो हो होरी खेलैं, लाल लाड़िली सौं कह्यौ।
रितु बसन्त रविजा तट कमनी, देखौ आनँद बरसि रह्यौ॥
रतन-सतेसनि पै चढ़ि होरी, खेलौ पिय विनती कीनी।
मनभाई बातनि सुनि स्वामिनि, हिय जिय अति आनँद भीनी॥
तब श्रीहितअलि कैं सँग दम्पति, चले अलिन की भीर लियैं।
वन की कुंज-निकुंजनि निरखत, बाढ़्यौ अति अनुराग हियैं॥
कूजत कोकिल-कुल आनंदित, अति विचित्र शब्दनि बोलैं।
निर्तत मोरी-मोर-मण्डली, मुदित भये जित तित डोलैं॥
सुनि रसाल कलरव पंक्षिन कौ, मगन भये दोऊ प्यारे।
हँसत लसत सहचरिनु-संग तहँ, खेल विविध विधि विस्तारे॥

आये रविजा-तीर बढ़ी छबि, छटा छबीली अति भारी।
सात खनन नौका बहु शोभित, लोभित मन मणियन-जारी॥
चोबा-अँतर-फुलेल-कुमकुमा, पहिलैं ही सब सौंज सचीं।
और न कछू सुहाय सहेलिनु, दम्पति ही कैं लाड़ रचीं॥
कहुँ-कहुँ वंदन कहुँ-कहुँ चंदन, कहूँ अरगजा घोरि धस्यौ।
कहुँ-कहुँ अबीर गुलाल विविध रँग, केशरि-रँग कहुँ हौज भस्यौ॥
खन-खन प्रति जतननि सौं राची, नरगिस गसि क्यारी न्यारी।
ऐसी शोभा नैंन निहारी, प्रमुदित भये प्रीतम-प्यारी॥
तब अपनी सब सजनिनु लैकैं, चढी एक नौका प्यारी।
हो हो होरी हो हो होरी, बोलत दै दै करतारी॥
खेलन खेल प्रिया कछु सखि दई, तब इक नौका पिय बैठे।
अपने-अपने दाइनु ताकत, मन में सब जन अति ऐंठे॥
काहू करन पखावज-आवझ, काहू करन मुरज राजै।
गावत ललित धमार मधुर धुनि, बिच-बिच मुरली-रव गाजै॥
कोउ मंजीर-झाँझ-सारंगी, कोउ कर कनक डफनि साजैं।
कोउ लियैं करन तँबूरा-वीणा, एकहि स्वर सब मिलि बाजैं॥
दोउ ओर द्वै-द्वै सखि खेवत, नौका दोउन की रुचि लै।
अपनौं अति बड़ भाग्य मनावत, इहिं विधि उनही कौं सुख दै॥
ताल-तान नव गतिनु सहित कोउ, निर्तत हो होरी गावैं।
भरि-भरि मुठी गुलाल उड़ावैं, प्रेम-पुलकि रँग वरषावैं॥
उड़्यौ गुलाल गगन में घमड़्यौ, सुरँग वितान मनौं छायौ।
किधौं लियैं घन अपनी सैंना, अति अद्भुत रस वरषायौ॥
मर्दत मुखनि कुमकुमा-चंदन, सखी सहेली इत उत की।
अपनी-अपनी जीत मनावत, मूरति सब श्रीहित ही की॥

ताकि-ताकि घातन बहु लालन, छबि सौं जलजंत्रनि छाँड़त।
चतुरशिरोमणि उदार भामिनी, करि कटाक्ष मन मुसिकावत॥
एकहु घात न चलत लाल की, तब मन में अति सकुचावत।
हँसत हँसावत ग्रीव ढुरावत, स्वामिनि यौं रँग वरषावत॥
मणिनु-जटित पिचकारी रँग भरि, पिय पर अलबेली मेली।
मुख अंचल दै हँसत सहेली, बाढी अति ही रँग रेली॥
मिही बूँद रंगनि की पिय-मुख, पै इहिं विधि शोभा पावैं।
मानौं नील कमल कैं ऊपर, रँग-रँग मणिकन झलकावैं॥
पट अरु कमनी गात रँगमगे, कह वरनौं छबि अधिकाई।
बैठि विमाननि में सजि-सजिकैं, मदन-बरात मनौं आई॥
मोंहन अपने मनहिं विचार्यौ, अब तौ बदलौ ही लैहौं।
रँग भरि प्रिया भिंजैहौं तब ही, निजु मन में अति सुख पैहौं॥
तब भरि रतन-कमोरी रँग सौं, प्यारी कैं ऊपर ढारी।
छबि निरखत यौं कहत बिहारी, भली बनी अब सुकुमारी॥
चल्यौ रंग बहि जमुना-जल में, मनु अनुराग-प्रवाह बह्यौ।
भींजे वसन लसे अँग-अंगनि, सो सुख प्रीतम-नैंन लह्यौ॥
कुपित भईं सब सखी प्रिया की, यहै देखि पिय लालन पै।
छल सौं जाइ लाल की नौका, काजर माँड़्यौ गालन पै॥
पीय-ओर की कछु सजनी हू, प्यारी सौं जा मिलि जु गईं।
करि छल छन्द लाल की नौका, प्यारी-ओर मिलाय लईं॥
तब ऊँचे खन चढ़ि अलि ललिता, भुज भरि साँवल गात गहे।
तीय बनावैं नाच नचावैं, अमित सुखनि सब दृगनि लहे॥
कोउ अली कहै मुख सौं बोलौ, क्यौं अब रहे ग्रीवा नाईं।
पाँइ लगौ श्रीहित स्वामिनि के, और न अब कछु बनि पाईं॥

भरि अति ही अनुराग हियैं में, पाँय परन पिय झुकत भये।
भोरी स्वामिनि अति गुन-ग्रामिनि, मुसकि रवकि भरि अंक लये॥
प्रीति प्रगाढ़ देखि दोउन की, हितसजनी हरषित मन में।
देत असीस लाल-ललना नित, इहिं विधि विलसहु कुंजन में॥
इक अलि कहत धन्य ये रविजा, जा मधि खेल रच्यौ दम्पति।
कहत फाग की प्रभुता इक अलि, लही रसिकवर सुख-सम्पति॥
इहिं विधि नौका चढि होरी-सुख, श्रीहित दम्पति मनभायौ।
जैश्रीहित हरिवंश कृपा-प्रसाद सौं, 'हित जस अलि' कछु दुलरायौ॥

स्नान-श्रृंगार-सेवा

[३९]

इतहिं बाल उतहिं लाल उवटति अलि दृग विशाल,
खोलि दियौ जूरा पट कछू-कछू उतारे।
रूप-सिन्धु तजि म्रजाद उमग्यौ अति करि विवाद,
बढ़ीं लहरि ढाहत मनु नैंन-पल करारे॥
अंगनि तें जगी जोति आलिनु चकचौंधि होति,
भूलि गईं उवटनि कर कंप होत भारे।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप प्रिया समुझि-समुझि,
ढाँपे पट अंगनि तब सखिनु तन सम्हारे॥

[४०]

अरबरात लाल जबै समुझि गईं सखी तबै,
उवटन की वार जानि धीरज मन धरियैं।
देखैं बिनु व्याकुल अति लोल भई नैंननि-गति,
मर्दन तन करति तनक लाल बिलंब करियैं॥
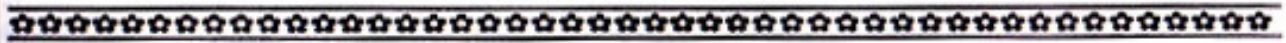
भूल्यौ ज्यौं कुरंग चकित अन्तरपट ओर तकित,
लोभी नव रंग छैल प्रियै नैंकु डरियैं।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप पिय सनेह सहित,
सौरभ सौं सींचि दसा देखि प्रेम भरियैं॥

[४१]

उचित जो सुगंधि डारि सीत उष्ण जल सँवारि,
प्रिया कौं न्हवावति हैं बैठी मणि चौकी।
अंग कौं पखारति हैं केस करनि टारति हैं,
वदन-कान्ति उघरि परी मानौं शशि सौ की॥
सुहथ लट निवारि जाति दमकति है नखनि-कांति,
उपमा लघु मानौं गति रोकी ग्रह नौ की।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप महा अचरजमय,
कहा कहौं रोम-रोम अवधि रस विभौ की॥

[४२]

सम्हरिकैं अँगौंछि अंग पहिरे पट रुचित रंग,
निजु अलि लै संग मुकर महल में पधारी।
लाल कौं न्हवावति हैं सहचरि छबि पावति हैं,
घन कौ अभिषेक करति दामिनि हितकारी॥
दर्पन से स्याम अंग रूप-सिन्धु दुति तरंग,
नैंन-पथिक गोता तहाँ खात बार-बारी।
बलि बलि वृन्दावन हित कोमल तन पट अँगोछि,
पीत वसन धोती पहिरि मुदित भये भारी॥
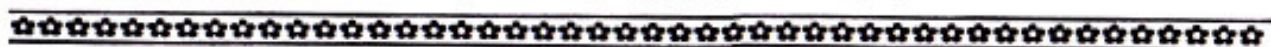
[४३]

श्यामा जू ठाढ़ी हैं मज्जन कीयैं,

टारति मुख तें सगवगी आछी अलकैं।

नीलाम्बर छवि फवि जु रही तामें, राजति अंगनि झलकैं॥

ताहू में अति चपल नैंन पिय कैं आनन,

संभ्रम चैंन न पावत पलकैं।

जैश्रीहित गोपीनाथ आइ तिहि औसर,

निरखत छबि मन बाढ़ी रति-ललकैं॥

धूप आरती

[४४]

आजु नीकी बनी राधिका नागरी।

ब्रज जुवति जूथ में रूप अरु चतुरई,

शील सिंगार गुन सबनि तें आगरी॥

कमल दक्षिन भुजा वाम भुज अंश सखी,

गावती सरस मिलि मधुर सुर राग री।

सकल विद्या विदित रहसि श्री हरिवंश हित,

मिलत नव कुंज वर स्याम बड़ भाग री॥

[४५]

आजु नागरी किशोर भाँवती विचित्र जोर,

कहा कहौं अंग-अंग परम माधुरी।

करत केलि कंठ मेलि बाहु दंड गंड-गंड,

परस सरस रास लास मंडली जुरी॥

श्याम सुंदरी बिहार बाँसुरी मृदंग तार,
मधुर घोष नूपरादि किंकनी चुरी।
जय श्री देखत हरिवंश आलि निर्तनी सुधंग चालि,
वारि फेर देत प्रान देह सौं दुरी॥

श्रृंगार भोग

[४६]

दर्पन लखि मोद भरे पाक विविध भोग धरे,
रूप गर्व दोऊनि कैं वदन झलकि आयौ।
मुकर कर न छोरत हैं आनन कौं मोरत हैं,
हित की मरमी सहेली मन कौ भेद पायौ॥
दर्पन देहु मो जु हाथ जेंवौ मिलि दोउ साथ,
जाने मैं छबि गरूर नैंननि दरसायौ।
सजनी कौ राख्यौ रुख ग्रास लैंन लागे मुख,
जो जो मन रुच्यौ पाक बहुरि सो मँगायौ॥
कीनी मनुहारि घनी लाल रसिक चूड़ामनी,
प्यारी मन भाँवती सहेली जो चितायौ।
अदलि बदलि ग्रास लेत सखियनि आनंद देत,
चन्द्रकला घेवर ने स्वाद अति बढ़ायौ॥
बतरस परे स्याम गौर कहत जात लाउ और,
तुष्टि पुष्टि होत कियौ भोजन मन भायौ।
सिता मिल्यौ गाढ़ौ दही पीयौ पुनि ललक रही,
मेवा फल पाइ स्वाद अधिक सो जनायौ॥

सीतल अति मिष्ट जानि जमुनोदक कियौ पानि,
वदन कर अँगोछि सखी पान रचि खवायौ।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप साजि आरती कौं,
पंच नाद होत सीस चँवर लै ढुरायौ॥

श्रृंगार आरती

[४७]

श्रीराधाबल्लभलाल की आरती।
रतन-जटित कंचन की मणिमय, हित सौं सहचरि वारती॥
अंग-अंग की आभा झलकत, अद्‌भुत रूप निहारती।
हित ध्रुव सखी प्रेम की सीवाँ, कैसैंहुँ पलक न टारती॥

[४८]

बनी श्रीराधा-मोहन जू की जोरी।
इन्द्र नीलमनि स्याम मनोहर, शातकुंभ तन गोरी॥
भाल विसाल तिलक हरि कामिनि, चिकुर चंद्र बिच रोरी।
गज नायक प्रभु चाल गयंदनि, गति वृषभानुकिसोरी॥
नील निचोल जुवति मोहन पट, पीत अरुण सिर खोरी।
जय श्रीहित हरिवंश रसिक राधापति, सुरत रंग में बोरी॥

[४९]

बेसरि कौंन की अति नीकी।
होड़ परी लालन अरु ललना, चौंप बढ़ी अति जीकी॥
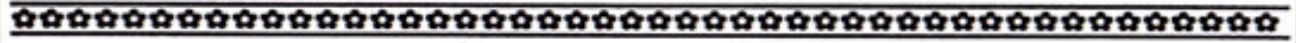
न्याव पर्यौ ललिता जू कैं आगैं, कौंन ललित कौंन फीकी।
जैश्रीदामोदर हिंत विलग न मानौं, झुकनि झुकी प्यारी जू की॥

[५०]

आरती रसिक जुगलवर की। श्रीहित लाड़िले नवलवर की॥
प्रिया-मुख-चन्द सुधा वरषै। रसिक प्रीतम पी-पी हरषै॥
छबीली भाँति, छिटकि रही कान्ति, अनूपम सोभा आगर की॥
॥आरती०॥
प्रिया तन नीलाम्बर सोहै। पीतपट धरैं लाल जोहै॥
चंचला वाम, चपल घनश्याम, नित्य नव नागरि-नागर की॥
॥आरती०॥
प्रिया के बैंन बीन अति मिष्ट। ललन की मुरली करै रस-सृष्टि॥
लाड़ भरीं प्रिया, लड़ावत पिया, रसिक 'अलि' प्रान-पोषकर की॥
॥आरती०॥

[५१]

आरती लाड़िली-लाल की कीजै। तन-मन सर्वस अर्पन कीजै॥
कनक-सिंहासन दंपति राजैं। देखि काम कोटिक जिय लाजैं॥
शोभा-सिन्धु निरखि छबि जीजै॥आरती०॥
हितसजनी आरती उतारति। प्रेम मुदित दोऊ लाल निहारति,
पानी वारि वारिकैं पीजै॥आरती०॥
झाँझ-मृदंग बजैं चहुँ पासा। घण्टा-ध्वनि पूरित आकासा॥
जयति-जयति उच्चारन कीजै॥आरती०॥
सेवकआली चँवर ढुरावै। हितदासी कुसुमनि बरसावै॥
यह छबि नैंननि में भरि लीजै॥आरती०॥
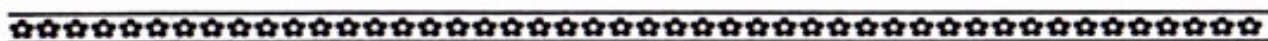
युगल ध्यान

[५२]

श्रीप्रिया-वदन छवि-चन्द्र मनु, प्रीतम-नैंन-चकोर।
प्रेम-सुधा-रस-माधुरी, पान करत निशि भोर॥१॥
अंगनि की छबि कहा कहौं, मन में रहत विचार।
भूषन भये भूषननि कौं, अति स्वरूप सुकुमार॥२॥
सुरँग माँग मोतिनु सहित, सीसफूल सुख मूल।
मोर चंद्रिका मोहिनी, देखत भूली भूल॥३॥
स्याम-लाल बैंदी बनी, शोभा बढ़ी अपार।
प्रगट विराजत शशिनु पर, मनु अनुराग-सिंगार॥४॥
कुंडल कल ताटंक चल, रहे अधिक झलकाइ।
मनु छबि के शशि-भानु जुग, छबि-कमलनि मिले आइ॥५॥
नासा बेसर नथ बनी, सोहत चंचल नैंन।
देखत भाँति सुहावनी, मोहे कोटिक मैन॥६॥
सुंदर चिवुक कपोल मुदु, अधर सुरंग सुदेश।
मुसिकनि बरसत फूल सुख, कहि न सकत छबि लेश॥७॥
अंगनि भूषन झलकि रहे, अरु अंजन रँग पान।
नवसत सरवर तें मनौं, निकसे करि स्नान॥८॥
कहि न सकत अंगनि प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ।
मानौं बागे रूप के, पहिरे दुहुँनि बनाइ॥९॥
रतनांगद पहुँची बनी, वलया-वलय सुढ़ार।
अँगुरिन मुँदरी फबि रहीं, अरु मँहदी रँग सार॥१०॥
चन्द्रहार मुक्तावली, राजत दुलरी पोति।
पानि पदिक उर जगमगै, प्रतिबिंबित अँग-जोति॥११॥
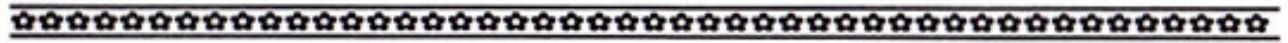
मणिमय किंकिनि-जाल छबि, कहौं जोइ सोइ थोर।
मनहुँ रूप-दीपावली, झलमलात चहुँ ओर॥१२॥
जेहरि सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारु।
और छाँड़िकैं या छबिहिं, हिय के नैंन निहारि॥१३॥
बिछुवनि की छबि कहा कहौं, उपजत रव रुचि दैन।
मनौं सावक कल हंस के, बोलत अति मृदु बैन॥१४॥
नख-पल्लव सुठि सोहने, शोभा बढ़ी सुभाइ।
मानौं छबि-चन्द्रावली, कंज-दलनि लगी आइ॥१५॥
गौर वरन साँवल चरन, रचि मेंहदी के रंग।
तिन तरुवनि तर लुठत रहैं, रति-जुत कोटि अनंग॥१६॥
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किसोर सुकुमार।
इकछत प्रेम छके रहैं, अद्‌भुत प्रेम बिहार॥१७॥
अनुपम स्यामल गौर छबि, सदा बसहु मम चित्त।
जैसैं घन अरु दामिनी, एक संग रहैं नित्त॥१८॥
वरने दोहा अष्टदस, जुगल-ध्यान रस-खानि।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छबि उर में आनि॥१९॥
पलकनि कैं जैसैं अधिक, पुतरिन सौं अति प्यार।
ऐसैंहि लाड़िली-लाल के, छिन-छिन चरन सम्हार॥२०॥

शृंगार-शोभा

[५३]

निज छबि छटा में छके पिय-प्यारी।
जा छबि देखि अपनपौ भूलत, रसिया चतुर बिहारी॥
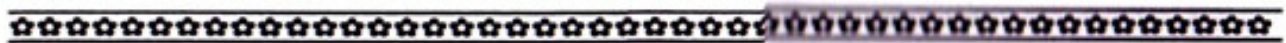
वे उन वे उनके मदमादे, दोऊ चतुर खिलारी।
ललितादिक हित दुहुँनि लड़ावत, तन की दशा बिसारी।।
'कृपाअली' हित परिकर की लखि, मगन भई सुकुमारी।।

[५४]

माते गयन्दनि की चूर होत गति जब,
लटकि चलत प्यारी नवल किशोरी है।
नीलपट प्यारौ प्यारी करत न न्यारौ यातें,
प्रीतम कौ रंग राखै संग निशि-भोरी है।।
पीताम्बर रंग अंग जानिकैं सु प्यारी जू कौ,
प्रीतम पियारौ राखै अंग लपट्यौ री है।
हिय अनुराग प्रानप्यारी कौ प्रगट मानौं,
सोहै मन मोहै पाग कही सिर खोरी है।।

दोहा—

कहत जु हितअलि निरखिकैं, ऐसैंई करौ विलास।
सुरत-रंग-बोरी रहौ, यह जोरी सुखरासि।।

[५५]

कहावत हैं हरि मन कौं हरन, मृगनैंनी मन हरि लीयौ।
अलक फंद मुख-चन्द सुधा पर, सहज माधुरी मोहिनी,
नैंकु चितै आधीन कीयौ।।
नवल किशोरी दिनन की थोरी भोरी,
बतवनी भोर्‌यौ सब विधि रूप-गुन तोही कौं दीयौ।

'जादौं हित' मोंहन की जीवनी नैंकु न बिसरत,
न्यारी होत छिन धरकै हीयौ॥

[५६]

रंग भरे प्यारे बैठे प्यारी संग एरी सखि!
छबि कह कहौं मोपै वरनी न जाति हैं।
लाल कर दर्पन लै दिखरावति हैं लाड़िली कौं,
दोऊ रीझि-रीझि हँसि-हँसि मुसिकाति हैं॥
मोरचन्द्रिका पर सु मन लग्यौ प्यारी जू कौ,
प्यारे जू कौ मन अँग-अंग में लुभाति है।
दुहुँन की कान्ति देखैं बलिहारी 'श्यामदास',
निरखि-निरखि शोभा हियरौ सिराति है॥

[५७]

राजत श्रीराधे मृगनैनी।
केश सुदेश सौंधे सौं भीने, गुही जुही सौं बैनी॥
मानौं नव नागिनि छबि कारी, किधौं ललित अलि सैनी।
वदन-चन्द कल अलकैं झलकैं, मोंहन मन हरि लैनी॥
चितवनि चारु चितै चित चोरत, चलत कटाक्ष सु पैनी।
'लालदास हित' चन्द्रसखी प्रभु, पिय-तन-मन सुख दैनी॥

[५८]

आजु निकुंज महल में गावत, प्रिया-लाल दोऊ रँगभीने।
बाजे सब मिलि बजत मधुर गति, मोहैं अलाप कहैं सुर झीने॥
राग-रागिनी मूरति धरिकैं, चकित भये मानौं लिखि दीने।
'इच्छासखी' निरखि या छबि कौं, प्रान वारि न्यौछावर कीने॥
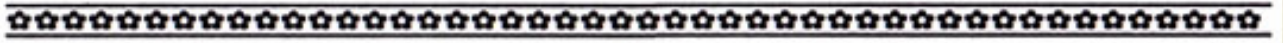
मध्याह्नकालीन वन विहार

[५९]

श्रीहित वृन्दावन दिनहिं, राजत अति अभिराम।
जहँ ललितादिक सखिन जुत, विलसत श्यामा-श्याम।।
समय पाय कीनी विनय, सखि वृन्दा तहँ आइ।
वन विहरन पग धारिये, बलि स्वामिनि सुखदाइ।।
हेरि प्रिया तन पीय तहँ, तन-मन बाढ़ी फूल।
उठी प्रिया लखि लाल रुचि, दै अंशनि भुज मूल।।
आये हँसत लसत दोऊ, संग सखिनु सुख-पुंज।
कालिन्दी तट रमि गये, धीर समीर निकुंज।।
तान तरंगनि बढ़ि चली, उत बढ़ी जमुन-तरंग।
अद्‌भुत लय परननि बढ़ी, उर अति बढ़ी उमंग।।
शीतल-मन्द-सुगन्ध बहि, पवन मनावत भाग।
सखि यमुना सजि आरती, वारति भरि अनुराग।।
आनँद में आनन्द की, वृष्टि सु बारम्बार।
उमड्यौ अम्बु आनन्द कौ, आनँद मध्य बिहार।।
आनँद ही हित रूप है, वन विहरन हित रूप।
हित रूपा राधाचरणदासिहिं सुखद अनूप।।

[६०]

वृन्दावन कमनीय अवनि में, मणिमय भवन रमाने।
नव दल-फूल फलित तरु-बल्ली, मानहुँ तान विताने।।
जमुना कूल कमल-कुल फूले, अलि अनुकूल भुलाने।
त्रिविध समीर भीर छबि 'सबसुख', खग मृगालि मिलि गाने।।
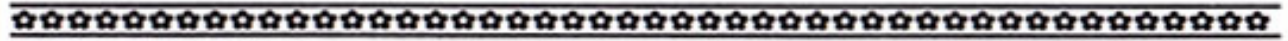
[६१]

आजु दोऊ निरखे रंग भरे।
नँदनन्दन-वृषभानकुँवरि वर, अंशनि भुजनि धरे॥
फूली फूल लता लपटी तरु, ता तर दोऊ खरे।
घूँघट खोल खोल हिय दोऊ, लागत सुभग गरे॥
अवलोकत पिय प्रिय मुख सुन्दर, पलकनि गति बिसरे।
बरसत रंग सरस परसत अँग, प्रेम की ढार ढरे॥
ललितादिक निरखत छबि ठाढ़ीं, इकटक नयन करे।
'सुन्दर' निरखि हरषि न्यौछावर, तन-मन प्रान करे॥

[६२]

आजु नव बँगला की छबि न्यारी।
फूल गुलाबनि कौ सिंहासन बैठे प्रीतम-प्यारी॥
अँतर महक आवति अति सुन्दर, सुख सरसावनिहारी।
'हीरासखी हित' या छबि ऊपर, तन-मन-धन बलिहारी॥

नौका विहार

[६३]

मणिमय कल नौकान में, राजत जुगल किशोर।
मन विनोद बीचीं बढ़ीं, तन छबि उठत हिलोर॥
मोराकृत कल नाव में, हितअलि जू कैं संग।
राजत श्रीहित स्वामिनी, अँग-अँग छविनु-तरंग॥
हंसाकृत नौका बनीं, तामें राजत लाल।
रस-सलिता मन में बढ़ी, सँग लियैं ललिता बाल॥
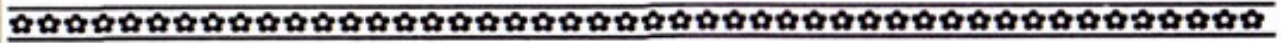
होड़ बदी नौकान में, भरिकैं कमलनि पुंज।
जीतै सो जो प्रथम ही, पहुँचै कमल-निकुंज॥
मन में बढ्यौ हुलास अति, अधरनि बाढ्यौ हास।
प्यारी के मुख-चन्द्र पै, कंजन की छबि-रासि॥
ललन देखि अद्भुत छटा, भूलि गये सब खेल।
नौका की गति भूलि कैं, नैंन रहे इहि गैल॥
छबि कौ जाल बिछाइकैं, गई अगमनी बाल।
पहुँची कमलनि-कुंज में, देखत रहि गये लाल॥
किलकि उंठीं सब सहचरीं, जीतीं स्वामिनि जोर।
को समुझै जो लाल मन, आनँद बढ़्यौ न थोर॥
प्रीतम की रस-बस दशा, लखि रीझीं सुकुँवारि।
भींजि गये मन दुहुँनि के, भये जबै चख चार॥
रीझनि भींजनि नित नई, यौं ही बाढ़ै नित्त।
मदनमोंहन दासीन के, डूबे तामें चित्त॥

राजभोग-सेवा

[६४]

आये भोजन कुंज किशोर री।
कर वर ध्वाइ धरे मणि पट्टा, बैठे एकै जोर री॥
कटि पटुका मुद्रिका उतारी, करि-करि अधिक निहोर री।
वृन्दावन हित रूप परोसति, विंजन रचे न थोर री॥

[६५]

मिलि जैंवत लाड़िली-लाल दोऊ, षट विंजन चारु सबै सरसैं।
मन में रस की रुचि जो उपजैं, सखी माधुरी कुंज सबै बरसैं॥

हठि कैं मनमोंहन हारि परे, निजु हाथ जिमावनि कौं तरसैं।
कर कंपित बीचहिं छूटि पर्‌यौ, कबहूँ मुख ग्रास लियैं परसैं॥
दृग सौं दृग जोरि रहे मुसिकाइ, भरे अनुराग सुधा बरसैं।
मनुहार बिहार अहार करैं, तनमय मन प्राण परे करषैं॥
सखि सौंज लियैं चहुँ ओर खरीं, हरषैं निरखैं दरसैं परसैं।
सुख-सिंधु अपार कह्यौ न परै, अवशेष सखी हरिवंश लसैं॥

[६६]

फूलनि आसन रचे बनाई। भोजन-कुंज में बैठे जाई।
मणिमय चौकी राखी आनि। हेम-थार तापर धर्‌यौ बानि॥
झलकि रहे बहु कनक-कचोरा। विंजन भरि-भरि धरे चहुँ ओरा।
मध्य अनूप खीर अति नीकी। भरी कटोरी सौंधे घी की॥
उज्ज्वल मिश्री पीसि मिलाई। रसना स्वादहि कहि न सकाई।
एक दूध के बहुत प्रकारा। कहि न सकत तिनकैं विस्तारा॥
विविध भाँति पकवान बनाये। ते सब नवल जुगल मन भाये।
मोहनभोग सरस घी माँहीं। अति कोमल उपमा कछु नाँहीं॥
पतरी रोटी घी सौं सनी। बरी फुलौरी अति ही बनी।
खाटे चरपरे वरे सलौने। घृत में नीके बने निमौंने॥
पापर कचरी घी के नीके। पावत रुचि सौं प्यारे जीके।
सालन साक और तरकारी। रसना स्वादहि लेत न हारी॥

दोहा–

जो विंजन कर-पल्लवनि, छुवत छबीली बाल।
तहाँ तें रुचि सौं लेत हैं, नवल रँगीले लाल॥

चंपकलता चौंप सौं जिमावै। ललिता बातनि रुचि उपजावै।
पीत भात सिखरनि सुठि गाढ़ी। ग्रास लेत अति ही रुचि बाढ़ी॥

दोहा—

हँसि-हँसि दोउ नागर नवल, ग्रास परस्पर लेत।
ललितादिक निजु सखिनु कैं, नैंननि कौं सुख देत।।

दूध पना सरबत रुचिकारी। बहुत भाँति सौं तक्र सँवारी।
हित की निधि सहचरि चहुँ ओरैं। कौर-कौर प्रति सबै निहोरैं।।
हँसि-हँसि जैंवत हैं पिय-प्यारी। तेहिं छिन कौ सुख कहौं कहा री।
मन जानै कै दोऊ नैंना। रसना पै कछु कहत बनै ना।।
यह आनंद कह्यौ नहिं जाई। रसना कोटि होंहिं जो माई।
तब सखियन आचमन दिवायौ। सबके नैंन प्रान सुख पायौ।।
ललिता रचि-रचि बीरी कीनी। नवल कुँवरि अरु कुँवरहि दीनी।
सो प्रसाद सब सखियनि लीनौ। अपनौ शेष 'ध्रुवहि' कछु दीनौ।।
इहि विधि कै जो भोग लगावै। ताकी चरन रेनु ध्रुव पावै।।

आचमन

[६७]

सजनी समुझि दुहुँनि के मन की, जमुनोदक अँचवावै हो।
खरिका दै कैं चरन ध्वाइकैं, पुनि बीरी रचि लावै हो।।
पद पाँवरी जटित मणि आगैं, राखि पौंछि पहिरावै हो।
वृन्दावन हित रूप रतन-सिंहासन तहाँ बिठावै हो।।

राजभोग आरती

[६८]

आरती मदन गोपाल की कीजियैं।
देव ऋषि, व्यास, शुक दास सब कहत निजु,
क्यौं न बिनु कष्ट रस-सिन्धु कौं पीजियैं।।

अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित नव-
वर्त्तिका घृत सौं पूरि राखौ।
कुसुम कृत माल नँदलाल के भाल पर,
तिलक करि प्रगट जस क्यौं न भाखौ॥
भोग प्रभु जोग भरि थार धरि कृष्ण पर,
मुदित भुज दंड वर चँवर ढारौ।
आचमन पान हित मिलत करपूर जल,
सुभग मुख वास कुल-ताप जारौ॥
संख दुंदुभि पणव घंट कल वैंनु रव,
झल्लरी सहित सुर सप्त नाचौ।
मनुज तन पाइ इहि दाइ ब्रजराज भजि,
सुखद हरिवंश प्रभु क्यौं न जाँचौ॥

[६९]

राजभोग आरती उतारति हैं प्रेम छकीं,
सारँग अलापति सुर कोकिलै लजावैं।
जुगल रूप भरीं अवेस निर्तत इक गति सुदेस,
भरि-भरि पुहुपांजुलीनु हरषैं वरषावैं॥
बाजेनु की मंजुल धुनि मुदित होत पंछी सुनि,
हितअलि-ललिता प्रवीन चौंर सिर ढुरावैं।
बलि-बलि वृन्दावन हित रूप मंजरी बुलाइ,
गौर-श्याम निर्त रीझि माला पहिरावैं॥

मध्याह्नकालीन शैया विहार

[७०]

नवल घनश्याम वर नवल वर राधिका,
नवल नव कुंज नव केलि ठानी।
नवल कुसुमावली नवल सिज्जा रची,
नवल कोकिल कीर-भृंग गानी॥
नवल सहचरी-वृन्द नवल वीना-मृदंग,
नवल सुर-ताल नव राग वानी।
नवल 'गोपीनाथ हित' नवल रसरीति सौं,
नवल श्रीहरिवंश अनुराग दानी॥

[७१]

कियौ गवन सैंन भवन प्रानप्यारी प्रानरवन,
रचत चोंज रस मनोज पौढ़े सचु पाई।
मणिनु कौ प्रकाश जहाँ सौरभ उद्‌गार तहाँ,
पान डबा झारी जल धरी तहाँ जाई॥
नेह भरी गुननि भरी दंपति-सुख लाड़ ढ़री,
मृदुल करनि चाँपि चरन बाहर सखि आई।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप जुगल रसिक भूप,
तिनकी रस-केलि हियैं संपति सचि लाई॥

[७२]

पल-पल प्रबल केलि पसरी।
पल-पल अधर पियूष पान करि, पल-पल परे हैं प्रेम के बस री॥

पल-पल मुख मधु स्वाद नये-नये,
पल-पल चौंप चसक की गस री।
नागरीदासि तलप सुख पल-पल,
पल-पल नव रति करननि कस री॥

[७३]

श्रीहरिवंश हँसैं विलसैं, कल केलि कलोल भरे हुलसावैं।
दम्पति रूप महाद्भुत धारि सु, मंजुल कुंज लसैं पुलकावैं॥
प्रेम अनंग अभंग तरंग, परे रस रंग हियैं कुलकावैं।
हित प्रीतमदासि पदाम्बुज सेवति, अंक धरे लखिकैं सचु पावैं॥

[७४]

श्रीवृन्दावन मञ्जुल वञ्जुल, कुञ्ज इकौसी।
रची सुपेशल सेज तहाँ, पिय ने जिय हौंसी॥
तहँ पौढ़ीं सुकुमारि, लाल चरनन सौं लागे।
महा मुदित मन माँहिं, भाग मनु आजुहिं जागे॥
यौं ही विपुल सुहाग सुख, विलसत पिय रस में रसौ।
ते पद-पंकज कुँवरि के, 'नेहलता' कैं उर बसौ॥

[७५]

ललित हिंडौरो झूलत विवि मिलि, रची सुपेशल सैंन।
अति रति नागरि नवल कुँवरि वर, कोक निपुन रस ऐंन॥
कर सौं कर उर सौं उर उरझे, हार-बार अरु नैंन।
सुरझ्यौ क्यौं चाहैं जिन कीने, विथकित मोहन-मैंन॥
'नेहलता' श्रम विन्दु दिपत मुख, तौहूँ नहिं चित चैंन।
रस-झूलनि समुझैं ही भावै, कहैं न आवै बैंन॥

उत्थापन-सेवा

[७६]

जाहि री तू मन्दिर माँहि दरेरी।
जुगल जगाइ रह्यौ दिन थोरौ, मानि वीनती मेरी॥
दंपति-अंग-सिंगारनि-सामा, मैं सचि धरी घनेरी।
गौर-स्याम कौ मुख देखैं बिनु, सबै अरवरत एरी॥
यह सुनि सखी अलंकृत ह्वै कैं, सैंन भवन गई नेरी।
वीन अंक लै गावत बलि-बलि, उठहु नींद दै डेरी॥
वन-कौतिक लोभी सुनि जागे, बातनि रंग ढरे री।
वृन्दावन हित रूप आइ जल-मज्जन वदन करे री॥

[७७]

दुहुँनि तन सखिनु सिंगार किये हैं।
अञ्जन दै पुनि तिलक भाल रचि, दर्पन करनि दिये हैं॥
धूप दीप करि चरचि सुगंधनि, घृत पक भोग धरे हैं।
मेवा मधुर मिष्ट फल नाना, जैंवत स्वाद ढरे हैं॥
सबके नाम बतावत सजनी, जैंवत करत बड़ाई।
धनि-धनि चंपकलता हेत हिय, अधिक भरी चतुराई॥
तुष्ट पुष्ट भये ग्रासनि लै पुनि, जमुनोदक अचवावैं।
वृन्दावन हित रूप अनुरागिनि, रचि-रचि पान खवावैं॥
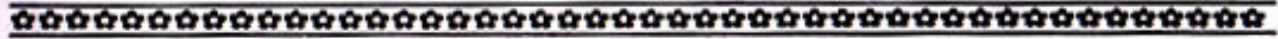
धूप आरती

[७८]

श्रीराधा मेरैं प्राननि हूँ तें प्यारी।
भूलैंहुँ मान न कीजै सुन्दरि, हौं तौ शरन तिहारी॥
नैंकु चितै हँसि हेरियैं मो तन, खोलियैं घूँघट सारी।
जैश्रीकृष्णदास हित प्रीति-रीति बस, भरि लीने अँकवारी॥

उत्थापन समय के फुटकर पद

[७९]

प्रीतम मेरे प्राननि हूँ तें प्यारौ।
निशि दिन जाहि लगाइ रहौं उर सौं, नैंकु न करिहौं न्यारौ॥
देखत जाहि परम सुख उपजत, रूप रंग गुन गारौ।
जैश्रीकमलनैन हित सुनि प्रिय बैंननि, तन-मन-धन सब वारौ॥

[८०]

प्रीतम तुम मेरे दृगनि बसत हौ।
कहा भोरे ह्वै पूछत हौ, कै चतुराई करि जु हँसत हौ॥
लीजियैं परखि स्वरूप आपुनौं, पुतरिनु में प्यारे तुमहि लसत हौ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई, कुञ्ज लड़ावत हिय हुलसत हौ॥

[८१]

ऐसी करौ नव लाल रँगीले जू, चित्त न और कहूँ ललचाई।
जे सुख दुःख रहे लगि देह सौं, ते मिटि जाँइ अरु लोक-बड़ाई॥

संगति साधु वृन्दावन कानन, तुव गुन गाननि माँझ बिहाई।
छबि कंज चरन्न तिहारे बसौ उर, देहु यहै 'ध्रुव' कौं ध्रुवताई॥

[८२]

शोभित आजु रँगीली जोरी।
सुन्दर रसिक नवल मनमोंहन, अलबेली नव वैस किसोरी॥
बेसरि उभै हँसनि में डोलत, सो छबि लेत प्रान चित चोरी।
हित ध्रुव फँदी मीन यह अँखियाँ, निरखति रूप प्रेम की डोरी॥

[८३]

सहज सुभाव पर्‌यौ नवल किशोरी जू कौं,
मृदुता-दयालुता-कृपालुता की रासि हैं।
नैंकु हूँ न रिस कहूँ भूलि हूँ न होत सखी,
रहत प्रसन्न सदा हियैं मुख हासि हैं॥
ऐसी सुकुमारी प्यारेलाल जू की प्रानप्यारी,
धन्य-धन्य धन्य तेई जिनके उपासि हैं।
हित ध्रुव और सुख देखियतु जहाँ लगि,
सुनियत तहाँ लगि सबै दुख-पासि हैं॥

[८४]

किशोरी तेरे चरननि की रज पाऊँ।
बैठी रहौं कुञ्जनि के कौनैं, स्याम-राधिका गाऊँ॥
जो रज शिव-सनकादिक जाँचत, सो रज सीस चढ़ाऊँ।
व्यास स्वामिनी की छबि निरखत, विमल-विमल जस गाऊँ॥

[८५]

किशोरीजू मोहि अपनी करि लीजै।
और दियैं कछु भावत नाहीं, वृन्दावन-रज दीजै॥
खग-मृग पशु-पंछी या वन के, चरन सरन रखि लीजै।
व्यास स्वामिनी की छवि निरखत, महल टहलनी कीजै॥

[८६]

परम धन राधा नाम अधार।
जाहि स्याम मुरली में गावत, सुमिरत बारम्बार॥
वेद-शास्त्र अरु जन्त्र-मन्त्र में, यही कियौ निरधार।
सहचरि रूप धर्‌यौ नँदनन्दन, तऊ न पायौ पार॥
श्रीशुक प्रगट कियौ नहिं यातें, जानि सार कौ सार।
व्यासदास अब प्रगट वखानत, डारि भार में भार॥

[८७]

ऐसौ कब करिहौ मन मेरौ।
कर करुवा कामरि काँधे पै, कुञ्जनि माँझ बसेरौ॥
ब्रजवासिनु के टूक भूख में, घर-घर छाछ महेरौ।
भूख लगै तब माँग खाउँगो, गनौं न साँझ-सबेरौ॥
रास-विलास वृत्ति करि पाऊँ, मेरे खूँट न खेरौ।
व्यासदास श्रीवृन्दावन में, रसिकजननि कौ चेरौ॥

संध्या समय के पद

[८८]

नमो-नमो जय श्रीहरिवंश।
रसिक अनन्य वैंनु कुल मंडन, लीला-मानसरोवर हंस।।
(नमो) जयति वृन्दावन सहज माधुरी, रास-विलास प्रसंश।
आगम-निगम अगोचर राधे, चरन-सरोज 'व्यास' अवतंस।।

[८९]

श्रीहरिवंश शरण जे आये।
श्रीवृषभानुकुँवरि-नँदनन्दन, निजु कर अपनी चिठी चढ़ाये।।
दियैं मुकराइ कछू नहिं गोये, कियैं मनोरथ मन के भाये।
श्रीव्याससुवन-चरननि-रज परसत, नागरिदास से रंक जिवाये।।

[९०]

जिनकैं श्रीहरिवंश सहायक।
तेई सजन भजन अधिकारी, वृन्दावन घन बसिवे लायक।।
अलकलड़े आनन्द भरे डोलैं, सिर पर व्याससुवन सुखदायक।
कुँवरि-कुँवर ताहि सुलभ 'नागरीदास',
रसिकसिरोमनि कैं गुन गायक।।

[९१]

(माई) मेरे बल श्रीवृन्दावन रानी।
जाहि निरन्तर सेवत मोंहन, वन विनोद सुखदानी।।

जिनकी चरन कृपा तें पाई, कुञ्ज केलि रस सानी।
जय श्रीरूपलाल हित हाथ बिकानी, निधि पाई मन मानी॥

[९२]

रहौ कोउ काहू मनहिं दियैं।
मेरे प्राननाथ श्रीस्यामा, सपथ करौं तृन छियैं॥
जे अवतार कदम्ब भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हियैं।
तेऊ उमगि तजत मर्यादा, वन विहार रस पियैं॥
खोये रतन फिरत जे घर-घर, कौंन काज अस जियैं।
जय श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं, बिनु या रजहिं लियैं॥

[९३]

हरि हम कब ह्वै हैं ब्रजवासी।
ठाकुर नन्दकिशोर हमारे, ठकुराइन राधा सी॥
सखी सहेली नीकी मिलि हैं, (श्री) हरिवंशी-हरिदासी।
वंशीवट की सीतल छाया, सुखद बहै जमुना सी॥
जा वैभव की करत लालसा, कर मींड़त कमला सी।
इतनी आस 'व्यास' की पुजवौ, वृन्दाविपिन-विलासी॥

[९४]

अब मैं श्रीवृन्दावन धन पायौ।
राधे जू चरन शरन मन दीनौं, श्रीहरिवंश बतायौ॥
सोयौ हुतौ विषय-मन्दिर में, हित गुरु टेरि जगायौ।
अब तौ 'व्यास' बिहार विलोकत, शुक-नारद मुनि गायौ॥
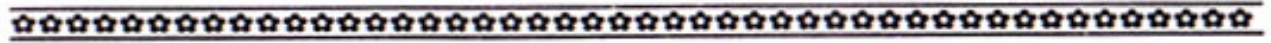
[९५]

प्यारी लागै श्रीवृन्दावन की धूरि।
राधे जू रानी मोहन राजा, राज सदा भरिपूरि॥
कनक-कलस करुवा महमूँदी खासा ब्रज-कमरिनु की चूरि।
'व्यासहिं' श्रीहरिवंश बताई, अपनी जीवनमूरि॥

संध्या भोग

[९६]

दोहा–

आय विराजे महल में, संध्या समयौ जानि।
आली ल्याई भोग सब, मेवा अरु पकवान॥

संध्या भोग अली लै आई।
पेड़ा-खुरमा और जलेबी, लड्डुआ-खजला और इमरती,
मोदक मगद मलाई॥
कंचन-थार धरे भरि आगैं, पिस्ता अरु बादाम रलाई।
खात-खवावत लेत परस्पर, हँसनि दसन-चमकनि अधिकाई॥

दोहा–

अद्‌भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी बनाइ।
ख्वावत प्यारे लाल कौं, पहिलैं प्रियहिं पवाइ॥

पानि परस मुख देत बीरी पिय, तब प्यारी नैंननि में मुसिकाई।
ललितादिक सखि 'कमलनयन हित', धनि दिन मानत आपुनौं माई॥

दोहा–

पाग बनी पटुका बन्यौ, बन्यौ लाल कौ भेष।
श्रीराधाबल्लभलाल की, दौरि आरती देख॥

नाम ध्वनि

[१७]
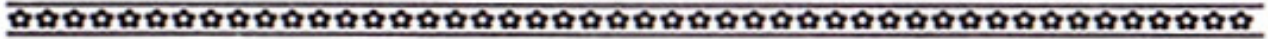
जय जय राधाबल्लभ गुरु हरिवंश।
रँगीलौ राधाबल्लभ हित हरिवंश॥
छबीलौ राधाबल्लभ प्यारौ हरिवंश।
रसीलौ राधाबल्लभ जीवन हरिवंश॥
जय हरिवंश जय जय जय हरिवंश।
श्रीराधाबल्लभ श्रीहित राधे राधे॥
जय जय राधाबल्लभ गुरु हरिवंश।
जै जै श्रीसेवक रसिकनि अवतंश॥

सन्ध्या आरती

[१८]

आरति कीजै श्यामसुन्दर की। नन्द के नंदन राधिका-वर की॥
भक्ति करि दीप प्रेम करि वाती। साधु-संगति करि अनुदिन राती॥
आरति ब्रजजुवति जूथ मन भावै। श्याम लीला श्रीहरिवंश हित गावै॥
सखि चहुँ ओर चँवर कर लीयैं। अनुरागनि सौं भीने हीयैं॥
सनमुख वीन मृदंग बजावैं। सहचरि नाना राग सुनावैं॥
कंचन-थार जटित मणि सोहै। मध्य वर्तिका त्रिभुवन मोहै॥
घंटा-नाद कह्यौ नहिं जाई। आनँद मंगल की निधि माई॥

जयति-जयति यह जोरी सुखरासी।
जयश्री रूपलाल हित चरन निवासी॥
आरति श्रीराधाबल्लभलालजू की कीजै।
निरखि नयन छबि लाहौ लीजै॥

इष्ट-स्तुति

[९९]

चन्द्र मिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुन विस्तार।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, मिटै न नित्यविहार॥१॥
जोरी जुगलकिशोर की, और रची विधि वादि।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, निवह्यौ आदि जुगादि॥२॥
निगम-ब्रह्म परसत नहीं, जो रस सब तें दूरि।
कियौ प्रगट हरिवंश जू, रसिकनि जीवनि मूरि॥३॥
रूप-बेलि प्यारी बनी, प्रीतम प्रेम-तमाल।
दोउ मन मिलि एकै भये, श्रीराधाबल्लभलाल॥४॥
निकसि कुंज ठाढ़े भये, भुजा परस्पर अंश।
श्रीराधाबल्लभ-मुख-कमल, निरखि नयन हरिवंश॥५॥
रे मन! श्रीहरिवंश भजि, जो चाहत विश्राम।
जिहिं रस-बस ब्रजसुन्दरिनु, छाँड़ि दिये सुख-धाम॥६॥
निगम नीर मिलि एक भयौ, भजन दूध सम स्वेत।
श्री हरिवंश-हंस न्यारौ कियौ, प्रगट जगत कैं हेत॥७॥

कुण्डलियाँ-

श्रीराधाबल्लभ लाड़िली, अति उदार सुकुमारि।
ध्रुव तौ भूल्यौ ओर तें, तुम जिन देहु बिसारि॥

तुम जिन देहु बिसारि, ठौर मोकौं कहुँ नाहीं।
प्रिय रँग भरी कटाक्ष, नैंक चितवौ मो माँहीं॥
बढ़ै प्रीति की रीति, बीच कछु होइ न बाधा।
तुम हौ परम प्रवीन, प्रानबल्लभ श्रीराधा॥८॥

दोहा–

बिसरिहौं न बिसारिहौ, यही दान मोहिं देहु।
श्री हित हरिवंश की लाड़िली, मोहि अपनी करि लेहु॥९॥
कैसैंहु पापी क्यौं न होइ, श्रीहरिवंश नाम जो लेइ।
अलकलड़ैती रीझिकैं, महल खवासी देइ॥१०॥
महिमा तेरी कहा कहौं, श्रीहरिवंश दयाल।
तेरे द्वारैं बँटत हैं, सहज लाड़िली-लाल॥१३॥
सब अधमनि कौ भूप हौं, नाहिंन कछु समझन्त।
अधम-उधारन व्याससुत, यह सुनिकैं हर्षन्त॥१४॥
बन्दौं श्रीहरिवंश के, चरण-कमल सुख-धाम।
जिनकौं वन्दत नित्य ही, छैल छबीलौ श्याम॥१५॥
श्रीहरिवंश स्वरूप कौं, मन-वच करौं प्रनाम।
सदा-सदा तन पाइयैं, श्रीवृन्दावन धाम॥१६॥
जोरी श्रीहरिवंश की, श्रीहरिवंश स्वरूप।
सेवकवानी-कुञ्ज में, बिहरत परम अनूप॥१७॥
करुनानिधि अरु कृपानिधि, श्रीहरिवंश उदार।
वृन्दावन-रस कहनि कौं, प्रगट धर्‌यौ अवतार॥१८॥
हित की यहाँ उपासना, हित के हैं हम दास।
हित विशेष राखत रहौं, चित नित हित की आस॥१९॥

हरिवंशी हरि-अधर चढ़ि, गुंजति सदा अमन्द।
दृग-चकोर प्यासे सदा, प्याय सुधा मकरन्द॥२०॥
श्रीहरिवंशहिं गाइ मन, भावै जस हरिवंश।
हरिवंश बिना न निकासि हौं, पद निवास हरिवंश॥२१॥

[१००]

दीजौ श्रीवृन्दावन वास, निरखूँ श्रीराधाबल्लभलाल कौं।
लड़ैती-लाल कौं।
यह जोरी मेरे जीवन प्रान, निरखूँ श्रीराधाबल्लभलाल कौं॥
लड़ैती-लाल कौं॥
मोर मुकट पीताम्बर, एजी पीताम्बर, उर बैजन्ती माल॥
हाँजी सोहै गल फूलनि की माल॥ निरखूँ॰॥ लड़ैती॰॥
जमुना पुलिन वंशीवट, एजी वंशीवट, सेवाकुञ्ज निजु धाम॥
हाँजी मंडल सेवा सुख-धाम, हाँजी मानसरोवर-बादग्राम॥ निरखूँ॰॥
वंशी बजावै प्यारौ मोहना, बजावै प्यारौ सोहना,
लै-लै राधा-राधा नाम, हाँजी लै-लै स्यामा-स्यामा नाम,
हाँजी लै-लै प्यारी-प्यारी नाम॥निरखूँ॰॥लड़ैती॰॥
देखौ या ब्रज की रचना, श्रीवृन्दावन की रचना,
नाचैं जुगल किशोर॥ हाँजी नाचैं नवल किशोर॥निरखूँ॰॥ लड़ैती॰॥
'चन्द्र सखी' कौ प्यारौ, श्रीराधा जू कौ प्यारौ, सखियन कौ प्यारौ,
बिरज (ब्रज) रखवारौ, श्रीहरिवंश दुलारौ,
दरसन दीजै दीनानाथ, हाँजी दर्शन दीजै हित लाल॥ निरखूँ॰॥
यह जोरी मेरे जीवन प्रान, निरखूँ श्रीराधावल्लभलाल कौं,
लड़ैती-लाल कौं। दीजौ श्रीवृन्दावन वास॥निरखूँ॰॥
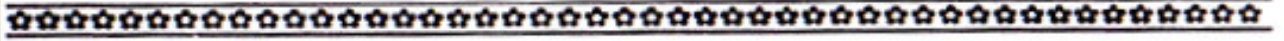
श्रीहित इष्ट आराधन

[१०१]

प्रथम प्रणम्य सुरम्य मति, मन-बुधि-चित प्रसंश।
चरन-सरन सेवक सदा, सु जै जै श्रीहरिवंश॥
श्रीहरिवंश विपुल गुन मिष्टं। श्रीहरिवंश उपासक-इष्टं।
श्रीहरिवंश-कृपा मति पाऊँ। श्रीहरिवंश विमल गुन गाऊँ॥
गाऊँ हरिवंश-नाम-जस निर्मल, श्रीहरिवंश-रमित प्रानं।
कारज हरिवंश प्रताप सु उद्दित, कारन श्रीहरिवंश भनं॥
विद्या हरिवंश मंत्र चतुरक्षर, जपत सिद्ध भव उद्धरनं।
जै जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश-चरन-शरनं॥
हरिरिति अक्षर बीज ऋषि, वंशी शक्ति सु अंश।
नख-सिख सुंदर ध्यान धरि, जै-जै श्रीहरिवंश॥
श्रीहरिवंश सु सुंदर ध्यानं। श्रीहरिवंश विशद विज्ञानं।
श्रीहरिवंश नाम गुन स्त्रूपं। श्रीहरिवंश प्रेम रस रूपं॥
रसमय हरिवंश परम परमाक्षर, श्रीहरिवंश कृपा-सदनं।
आत्मा हरिवंश प्रगट परमानँद, श्रीहरिवंश प्रमान मनं॥
जीवन हरिवंश विपुल सुख-संपति, श्रीहरिवंश बलित वरनं।
जै जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश-चरन-शरनं॥
शरन निरापक पद रमित, सकल अशुभ-शुभ नंस।
देत सहज निश्चल भगति, जै-जै श्रीहरिवंश॥
श्रीहरिवंश मुदित मन लोभं। श्रीहरिवंश वचन वर शोभं।
श्रीहरिवंश काय कृत कारं। श्रीहरिवंश त्रिशुद्ध विचारं॥
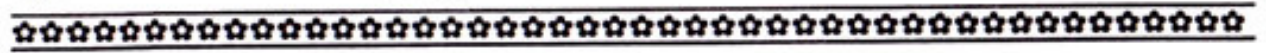
पूजा हरिवंश नाम परमारथ, श्रीहरिवंश विवेक परं।
धीरज हरिवंश विरद बल वीरज, श्रीहरिवंश अभद्र हरं॥
तृष्णा हरिवंश सुजस रस लंपट, श्रीहरिवंश कर्म करनं।
जै-जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश-चरन-शरनं॥

श्रीहरिवंश सु गोत कुल, देव जाति हरिवंश।
श्रीहरिवंश स्वरूप हित, रिद्धि-सिद्धि हरिवंश॥

श्रीहरिवंश विदित विधि वेदं। श्रीहरिवंश जु तत्व अभेदं।
श्रीहरिवंश प्रकाशित जोगं। श्रीहरिवंश सुकृत सुख भोगं॥
प्रज्ञा हरिवंश प्रतीति प्रमानत, प्रीतम श्रीहरिवंश प्रियं।
गाथा हरिवंश गीत गुन गोचर, गुपत गुनित हरिवंश गियं॥
सेवक हरिवंश सार संचित सब, श्रीहरिवंश धर्म धरनं।
जै-जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश-चरन शरनं॥

जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र द्विजवर कुल-मंडन।
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र कलि-तम-भव-खंडन॥
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र अकलंक प्रकाशित।
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र सब जग आभासित॥

हरिवंशचंद्र अमृत वरषि, सकल जन्तु तापनि हरनं।
'सेवक' समीप संतत रहै, सु श्रीहरिवंश-चरन-सरनं॥

❀

श्रीराधासुधानिधि से–

यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यै–
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनंतशक्तिं,
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि॥१॥

वृन्दावनेश्वरि तवैव पदारविन्दं,
प्रेमामृतैकमकरंदरसौघपूर्णम्।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्रं,
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि॥२॥

श्रीराधिके सुरतरंगिनितंबभागे,
कांचीकलापकलहंसकलानुलापैः।
मंजीरशिंजितमधुव्रत गुंजितांघ्रि,
पंकेरुहैः शिशिरयस्वरसच्छटाभिः॥३॥

श्रीराधिके सुरतरंगिणि दिव्यकेलि,
कल्लोलमालिनि लसद्वदनारविंदे।
श्यामामृतांबुनिधिसंगमतीव्रवेगि–
न्यावर्त्तनाभिरुचिरे मम सन्निधेहि॥४॥

संकेत कुञ्जमनुपल्लवमास्तरीतुं,
तत्तत्प्रसादमभितः खलु संवरीतुम्।
त्वां श्यामचन्द्रमभिसारयितुं धृताशे,
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपाकटाक्षम्॥५॥

सद्गन्धमाल्यनवचन्द्रलवंगसंग,

ताम्बूल सम्पुटमधीश्वरि मां वहन्ततीम्।

श्यामं तमुन्मदरसादभिसंसरन्ती,

श्रीराधिके! करुणयानुचरीं विधेहि॥६॥

संलापमुच्छलदनंगतरंगमाला,

संक्षोभितेन वपुषा ब्रजनागरेण।

प्रत्यक्षरं क्षरदपाररसामृताब्धिं,

श्रीराधिके! तव कदानु शृणोम्यदूरात्॥७॥

कुञ्जान्तरे किमपि जातरसोत्सवायाः,

श्रुत्वा तदालपितशिञ्जितमिश्रितानि।

श्रीराधिके! तव रहः परिचारिकाहं,

द्वारस्थिता रसहृदे पतिता कदा स्याम्॥८॥

दुकूलं विभ्राणामथ कुचतटे कंचुकपटं,

प्रसादं स्वामिन्याः स्वकरतलदत्तं प्रणयतः।

स्थितां नित्यं पार्श्वे विविधपरिचर्य्यैक चतुरां,

किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये॥९॥

यद्गोविंदकथासुधारसहृदे चेतो मया जृम्भितं,

यद्वा तद्गुणकीर्तनार्चनविभूषाद्यैर्दिनं प्रापितम्।

यद्यत्प्रीतिरकारि तत्प्रियजनेष्वात्यंतिकी तेन मे,

गोपेंद्रात्मजजीवनप्रणयिनी श्रीराधिका तुष्यतु॥१०॥

❀

श्रीराधा-उप सुधा-निधि से-

शृंगार-रस माधुर्य्य-सार-सर्वस्व विग्रहे।
नमो नमो जगद्वन्द्ये वृन्दावनमहेश्वरी॥१॥
चारु चम्पक गौरांगी कुरंगीभंग लोचने।
कृपया देहि मे दास्यं प्रेमसार-रसोदयम्॥२॥
हा राधे प्राण कोटिभ्योऽप्यति प्रेष्ठ पदाम्बुजे।
तव सेवां विना नैव क्षणं जीवितुमुत्सहे॥३॥
पतित्वा धरनीपृष्ठे गृहीत्वा दशनैस्तृणम्।
तवैव चरणेदास्यं याचे वृन्दावनेश्वरी॥४॥
कदा कान्तं परिष्वज्य सुप्तायाः कुञ्ज-मंदिरे।
तव सम्वाहयिष्यामि सुकुमार पदाम्बुजे॥५॥
त्वत्सेवा रीतिराश्चर्य लोकवेद-विलक्षणा।
तवैव कृपया लभ्या कदा सद्गुरु संगतः॥६॥
निज पदाम्बुज प्रेम रस ज्योतिर्घनाकृतिः।
कुरु मां किंकरी प्राणदयिते वार्षभानवि॥७॥
भूत्वाति सुकुमारांगी किशोरी गोप-कन्यका।
कदाहं लालयिष्यामि मृदुलं ते पदाम्बुजम्॥८॥
हा राधे स्वामिनि कदा किशोरी दिव्य रूपिणी।
प्रेमैक रसमग्नाहं भवेयं तव किंकरी॥९॥
वैष्णावानन्दकोटिर्वा ब्रह्मानन्दादि कोटयः।
मया ते पन्नखज्योतिः कणान्निर्मञ्छनी कृता॥१०॥
सर्वे धर्मामाधर्माः सर्व साधुमसाधु मे।
न यत्र लभ्यते राधे त्वत्पदाम्बुज-माधुरी॥११॥
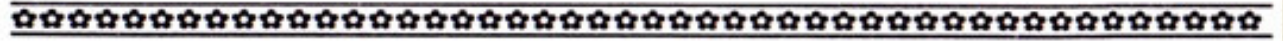
किं करोमि क्व गच्छामि कस्य पादे लुठाम्यहम्।
कथं वा लभते राधे तव दास्य रसोत्सवम्॥१२॥
श्रीराधे त्वत्पदाम्भोज पराग-परिरञ्जिते।
वृन्दारण्ये रसमये देहि मे निश्चला रतिम्॥१३॥
अयोगेऽपि विमूढेऽपि मयि-सर्वाधमेऽपि च।
अनन्ताश्चर्य्य कारुण्ये नैवोपेक्षितुमर्हसि॥१४॥
लोकवेद पथं त्यक्त्वा तवैव चरणाम्बुजम्।
गतोस्मि शरणं राधे न मां त्वां त्यक्तुमुत्सहे॥१५॥

संध्या कालीन रास

[१०२]

रास में रसिक मोंहन बने भामिनी।
सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन,
मत्त मधुकर निकर शरद की जामिनी॥
त्रिविध रोचक पवन ताप दिनमणि-दवन,
तहाँ ठाढ़े रवन संग सत कामिनी।
ताल वीना मृदंग सरस नाचत सुधंग,
एक तें एक संगीत की स्वामिनी॥
राग-रागिनि जमी विपिन वरषत अमी,
अधरबिंवनि रमी मुरलि अभिरामिनी।
लाग कट्टर उरप सप्त स्वर सौं सुलप,
लेत सुन्दर सुघर राधिका नामिनी॥

तत्त-थेई-थेई करत गतिव नौतन धरत,
पलटि डगमग ढ़रत मत्त गज गामिनी।
धाय नव रँग धरी उरसि राजत खरी,
उभै कल हंस हरिवंश घन-दामिनी।।

[१०३]

प्रिये अब जाँचक कौं देहु दान।
रविजा तट रजनीमुख आगम, परवी परम सुजान।।
तुम दानी वनरानी अमानी, जाँचक कौ करि मान।
जस लै रस दै विहँसि किशोरी अलि के पोषहु प्रान।।

[१०४]

ए हो आजु अति ही रीझि रही तिहारे बानिक,
छबि रूप चटक पर अटकी।
कही न जात शोभा पीतपट की अरु वनमाला टटकी,
री! पुनि मुकट की लटक पलट की।।
रोम-रोम रमि रही चितवनि-मुसिकनि,
सुधि न परत कछु मो या घट की।
'हित मुरलीधर' प्रभु निर्त गति भेदनि,
मटकनि नागर नट की।।

[१०५]

निर्तति रासमण्डल पिय-प्यारी।
उघटि-उघटि नाना छबि सौं गति, लेत अनूपम भारी।।

बाजत ताल मृदंग बीन मिलि, मुरली मधुर महारी।
गावनि मधुर सरस ताननि सौं, राग-रागिनि सँवारी॥
जमुना पुलिन शरद चन्द्र निशि, त्रिविध पवन सुखकारी।
विलसत छबि सौं बिहारी-बिहारिनि, हित ब्रजभूषण बलिहारी॥

[१०६]

शरद-निशि देखि विवि रास कौ मन कर्‍यौ।
तीर कालिन्दिनी मणिनु-मण्डल जहाँ,
तहाँ ठाढ़े भये सबनि कौ मन हर्‍यौ॥
मुरलि पिय अधर धरि तान नव विस्तरी,
मणिनु मण्डल मनौं अमी बिनुमित झर्‍यौ।
करत परसंश पुनि-पुनि जु नव नागरी,
और सबहीन कौ सुनत धीरज टर्‍यौ॥
भलैं जू रसिक तुम लई स्वामिनि रिझै,
कहत सब अली गुन अधिक वंशी भर्‍यौ।
विकट आलाप पुनि उरप-तिरपनि सहित,
तत्त थेई-तत्त थेई जुगल मुख उच्चर्‍यौ॥
फरहरत ललित पट सुलप लेत अति विकट,
भलैं जू भलैं कहि हितअली आदर्‍यौ।
वीन हितअलि सु कर प्रिया नव गति लई,
अहा-अहा मिष्ट रव पीय निजु मुख कर्‍यौ॥
गति जु ऐसी लई चकित थकित सब भई,
राग हू मूर्ति धरि प्रिया-पाँयन पर्‍यौ।

भये मन मुदित यौं देखि कौतिक सबै,
निशा सँग निशापति प्रेम-फन्दन पर्‍यौ॥
आज के रास कौ लास ऐसौ कछू,
मनहरन विपिन हू कौ गयौ मन हर्‍यौ।
दासि हित मदनमोहन जु विवि वदन की,
ओप लखि अपनपौ अलिनु वारन कर्‍यौ॥

[१०७]

प्यारी जू! यह गति मोहि सिखावौ।
वैसैंई पद लाघव सौं पुनि, उरप-तिरप लै आवौ॥
हस्तक भेद प्रभेद सबै, तिनमें मोहि कुशल बनावौ।
अलि किशोरि हौं बलि-बलि, तुम स्वामिनि संगीत कहावौ॥

चन्द्र चाँदनी के पद

[१०८]

मंजुल निकुंज फूल-फूलनि रची री।
लाल-पीत-सेत सुमन-सोसनी खची री॥
फूल जाल रन्ध्रनि में चन्द्रमनी कौंधैं।
लजी कोटि दामिनी की आँखैं चकचौंधैं॥
दुखनन-तिखनन झमक झरोखनि झाँई।
नाना विधि फूलनि की सौरभ महकाई॥
मोतिन-वितान तने जोतिन जगमगीं।
चन्द्र की मयूषन पग-भूषन ह्वै लगीं॥
फूलनि सिंहासन पर बैठे पिय-प्यारी।
वदन की जोति फूल फैली उजियारी॥
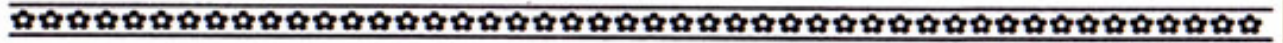
फूलनि के दल-दल प्रतिबिंब लसैं ऐसैं।
मनु मुकर-मन्दिर में चन्द्र बसैं जैसैं।।
फूलनि सिंगार कियैं फूल खेल खेलैं।
अरुझत हैं फूल-हार फूल की हमेलैं।।
फूली सखी गावैं जस प्रेम फूल हीयैं।
कृष्णदासि हित बजावैं वीना कर लीयैं।।

[१०९]

आजु अति ही बने, कुसुम-सदन बैठे पिय-प्यारी।
वरनी न जात बनक की तनक छबि, अँग-अँग आनँद ओप महारी।।
दियैं गरवहियाँ हँसत लसत दोउ, फैलि फूलि रही रूप-उजारी।
'हित अनूप' सुख समय निहारत, वारत प्रान होत बलिहारी।।

[११०]

जौन्ह सी फूलि रही चहुँ ओर।
निरखि लाल चकचौंधत वदन-शशि, उजियारी प्रीतम नैंन-चकोर।।
हाव-भाव लावण्य ललित गति, उपजत छबि नहिं थोर।
'जगन्नाथ' राधापति जीवन, अविचल रहौ यह जोरि।।

सैंन भोग

[१११]

लाड़िली-लाल राजत रुचिर कुञ्ज में।
अगरजा अंग रँग-रंग बागे बने,
दोउ जन प्रेम सौं सने रस-पुञ्ज में।।
निर्तत ठाढ़ीं अलीं भलीं गति भेद सौं,
रैंन पहिलौ जाम एक अलि गुञ्ज में।

पर्‌यौ परदा धर्‌यौ सैन कौ भोग,
पूरी भरि थार 'ब्रजलाल' कर मञ्जु में॥

[११२]

सैन भोग ल्याईं भरि थारी।
रुचिर कचौरी पूआ पूरी, मोहनभोग जैंवत पिय-प्यारी॥
धरे कटोरा भरे मुरब्बा, सरस सँधाने वर तरकारी।
औट्‌यौ दूध रजत भाजन भरि, ता मधि पीस सिता बहु डारी [१]॥

[११३]

भोजन सैन समय करवावत।
लुचई मोहनभोग इमरती, मिश्री फैंनी दूध मिलावत।
दृग कोरनि मधि हँसत परस्पर, रद छद परसत ललन खवावत [२]॥

[११४]

राधा-मोहनलाल वियारू कीजै।
पूरी दूध मलाई मिश्री, पहिलैं कौर प्रिया जू कौं दीजै।
जैंवत लाल-लड़ैती दोऊ, ललितादिक निरखत सुख भींजै [३]॥

[११५]

करत राधा-मोहन व्यारू, बैठे सदन मिलि सोहैं।
इक थारी एकै जल झारी, एक वैस इक रूप उजारी॥
मधु मेवा पकवान मिठाई, दंपति अति रुचिकारी।
प्यारी कैं कर पावत प्यारौ, प्यारे कैं कर पावत प्यारी॥

---

१. ललिता ललित करनि अँचवावति, जमुना जल कंचन की झारी।
जै श्री हित ब्रजलाल खवावत बीरी, दम्पति छवि संपति उर धारी॥
२. जै श्री कमलनैन हित देत आँचमन, बीरी लेत मुख अति सचु पावत।
३. जै श्री हित गोपीनाथ भामिनि मुख बीरी, पिकदानी मोंहन कर लीजै॥

दूध सिराइ लै आईं श्रीललिता,
प्यारी जू पियौ, लाल करै मनुहारी [१]॥

[११६]

हँसि-हँसि दूध पीवत बाल।
मधुर वर सौंधें सुवासित, रुचिर परम रसाल॥
भ्रुव भंग रंग अनंग वितरत, चितै मोहन ओर।
सुधानिधि मनौं प्रेम धारा, पुषित तृषित चकोर॥
(प्यारौ) लाल रस लंपट सु कर, अँचवाय मुख छवि हेर।
लेत तब अवशेष आपुन , परे मनमथ फेर [२]॥

[११७]

पिय पय धर्‌यौ कनक-कटोर।
सुगन्ध एला मिल्यौ मिश्री, देत लेत निहोर॥
कबहुँ ये लैं कबहुँ वे लैं, करि कटाक्षनि कोर।
वदन-विधु निधि सुधा पीवत, सखिनु नैंन-चकोर [३]॥

[११८]

हँसि-हँसि दूध पिवत पिय-प्यारी।
चन्दन वारि कनक चिरु औट्‌यौ वारी कोटि सुधा री॥
मिश्री लौंग चिरौंजी एला, कपूर सुगन्ध सँवारी।
उज्ज्वल सरस सचिक्कन सुन्दर, स्वाद सु मिष्ट महारी [४]॥६५॥

---

१. 'हित बालकृष्ण' जूठन कौं बोली, लै लै री लै लै प्राण अधारी।
२. रीझि-रीझि सराहि स्वादहिं, दियौ निजसखि पान।
पाइ अद्‌भुत हरषि 'सुख सखि', निरखि वारत प्रान॥
३. करे कुल्ला खाइ बीरी, रचे रंग तँबोर।
जुगल मुख हित वारि 'मोहन' डारि तिनका तोर॥
४. ललिता कर पट लीयैं ठाढी, चित्रा लै जल-झारी।
सब सखियनि कौं दई प्रसादी, 'लाल सखी' बलिहारी॥

[११९]

नवल नवेली अलबेली सुकुमारी जू कौ–
रूप, पिय प्राननि कौ सहज अहार री।
व्यंजन सु भाइन के नेह-घृत सौं जु बने,
रोचक रुचिर हैं अनूप अति चारु री॥
नैंननि की रसना तृपित न होत क्यौं हूँ,
नई-नई रुचि 'ध्रुव' बढ़त अपार री।
पानिप कौ पानी प्याइ पान मुसिकान ख्वाइ,
राखे उर-सेज स्वाइ पायौ सुख सार री॥

सैंन आरती

[१२०]

रस निधि सैन आरती कीजै।
निरखि-निरखि छबि जीवन जीजै॥
मणि-नग जगमग जोति जगमगै।
दम्पति रूप प्रकाश रँगमगै॥
सहचरि चँवर मोरछल ढौरैं।
पुहुप वृष्टि अंजुलि चहुँ ओरैं॥
झाँझ ताल झालरि दुन्दुभि-रव।
निर्त्त गान अलि हरति मनोभव॥
महा मोद धुनि मधुर मृदंगा।
जै जै वानी मिलि इक संगा॥
यह सुख रसिक उपासक गावैं।
जै श्रीरूपलाल हित चित दुलरावैं॥

चौपर खेल

[१२१]

खेलत चौपरि प्रीतम-प्यारी।
नेह बिसात बिछाइ परस्पर, विविध भाव-रँग सार सँवारी॥
पाँसे चलत मनोरथ दुहुँदिशि, मोद-विनोद बढ्यौ अति भारी।
बाजी बदी दैन आलिंगन, जो जीतै देहि लाज निवारी॥
बीच दई हितअली चतुर निधि, हार-जीत की समुझनिहारी।
रौंट करनि नहिं पावै कोऊ, न्याव करै मन माँझ विचारी॥
सुनि मुसिकाइ सेज पर लटके, पूरन करी आश पिय-प्यारी।
'जुगल' नैंन अवलोकत यह सुख, पल-पल माँहिं जात बलिहारी॥

शैया विहार

[१२२]

नागरी निकुंज ऐंन, किशलय दल रचित सैंन,
कोक कला कुशल कुँवरि अति उदार री।
सुरत रंग अंग-अंग, हाव-भाव भृकुटि भंग,
माधुरी तरंग मथत कोटि मार री॥
मुखर-नूपुरनि सु भाव, किंकिनी विचित्र राव,
विरमि-विरमि नाथ वदत वर विहार री।
लाड़िली-किशोर राज, हंस-हंसिनी समाज,
सींचत (श्री) हरिवंश नैंन सु रस-सार री॥
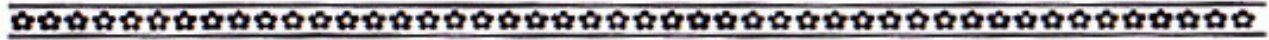
[१२३]

आजु निकुंज मंजु में खेलत, नवल किशोर नवीन किशोरी।
अति अनुपम अनुराग परस्पर, सुनि अभूत भूतल पर जोरी॥
विद्रुम फटिक विविध निर्मित धर, नव कर्पूर पराग न थोरी।
कोमल किशलय सैंन सुपेसल, तापर स्याम निवेसित गोरी॥
मिथुन हास-परिहास परायन, पीक कपोल कमल पर झोरी।
गौर-स्याम भुज कलह मनोहर, नीवी बंधन मोचत डोरी॥
हरि-उर-मुकर विलोकि अपनपौ, विभ्रम विकल मान जुत भोरी।
चिवुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधत, पिय प्रतिबिंब जनाइ निहोरी॥
नेति-नेति वचनामृत सुनि-सुनि, ललितादिक देखति दुरि चोरी।
जैश्रीहित हरिवंश करत कर धूनन, प्रनय-कोप-मालावलि तोरी॥

[१२४]

मंजुल कल कुंज देश, राधा-हरि विशद वेष,
राका नभ कुमुद-बन्धु सरद-जामिनी।
साँवल दुति कनक अंग, विहरत मिलि एक संग,
नीरद मनौं नील मध्य लसत दामिनी॥
अरुन पीत नव दुकूल, अनुपम अनुराग मूल,
सौरभ युत सीत अनिल मंद गामिनी।
किसलय दल रचित सैन, बोलत पिय चाटु बैंन,
मान सहित प्रतिपद प्रतिकूल कामिनी॥
मोंहन मन मथत मार, परसत कुच नीवी-हार,
वेपथ युत नेति-नेति वदति भामिनी।
नरवाहन प्रभु सु केलि, बहु विधि भर भरत झेलि,
सौरत रस रूप नदी जगत-पावनी॥

[१२५]

देखत नव निकुंज सुनि सजनी, लागत है अति चारु।
माधविका-केतकी लता लै, रच्यौ मदन आगारु॥
शरद मास राका निशि, सीतल मंद-सुगंध-समीर।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित, नदित कोकिला-कीर॥
बहु विधि रंग मृदुल किशलय दल, निर्मित पिय सखि सेज।
भाजन कनक विविध मधु पूरित, धरे धरनि पर हेज॥
तापर कुशल किशोर-किशोरी, करत हास-परिहास।
प्रीतम पानि उरज वर परसत, प्रिया दुरावति वास॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकत, दिन प्रतिपद प्रतिकूल।
आतुर अति अनुराग विवस हरि, धाइ धरत भुज-मूल॥
नागर नीवी-बंधन मोचत, ऐंचत नील निचोल।
वधू कपट हठ कोपि कहति कल, नेति-नेति मधु बोल॥
परिरंभन विपरित रति वितरत, सरस सुरत निजु केलि।
इंद्रनीलमणिमय तरु मानौं, लसत कनक की बेलि॥
रति रन मिथुन ललाट पटल पर, श्रम जल सीकर संग।
ललितादिक अंचल झकझोरति, मन अनुराग अभंग॥
जैश्री हित हरिवंश जथामति वरनत, कृष्ण-रसामृत-सार।
श्रवन सुनत प्रापक रति राधा-पद-अंबुज सुकुमार॥

[१२६]

विपिन घन कुंज, रति केलि भुज मेलि रुचि,
स्याम-स्यामा मिले सरद की जामिनी।
हृदै अति फूल समतूल पिय-नागरी,
करिनि-करि मत्त मनौं विविध गुन रामिनी॥

सरस गति हास-परिहास आवेस बस,
दलित दल मदन-बल कोक रस कामिनी।
जैश्री हित हरिवंश सुनि लाल लावन्य भिदे,
प्रिया अति सूर सुख सुरत संग्रामिनी।।

[१२७]

छाँड़ि दै मानिनी मान मन धरिवौ।
प्रनत सुंदर सुघर प्रानबल्लभ नवल,
वचन आधीन सौं इतौ कत करिवौ।।
जपत हरि विवस तव नाम प्रतिपद विमल,
मनसि तव ध्यान तें निमिष नहिं टरिवौ।
घटति पल-पल सुभग सरद की जामिनी,
भामिनी सरस अनुराग दिसि ढरिवौ।।
हौं जु कछु कहति निजु बात सुनि मानि सखि,
सुमुखि बिनु काज घन विरह दुख भरिवौ।
मिलत हरिवंश हित कुंज किशलय सयन,
करत कल केलि सुख-सिंधु में तरिवौ।।

[१२८]

नवल नागरि नवल नागर किसोर मिलि,
कुंज कोमल कमल-दलनि सज्जा रची।
गौर-स्यामल अंग रुचिर तापर मिले,
सरस मणि नील मनौं मृदुल कंचन खची।।
सुरत नीवी निबंध हेत पिय मानिनी,
प्रिया की भुजनि में कलह मोंहन मची।

सुभग श्रीफल उरज पानि परसत रोष,
हुंकार गर्व दृग भंगि भानिनि लची।।
कोक कोटिक रभस रहसि श्री हरिवंश हित,
विविध कल माधुरी किमपि नाहिंन बची।
प्रणयमय रसिक ललितादि लोचन-चषक,
पिवत मकरंद सुख-रासि अंतर सची।।

[१२९]

सोहति री दुहुँनि कौ लाड़।
हँसि-हँसि बात कहति जब पिय सौं, परति कपोलनि गाड़।।
निरखि थके नागरवर नैंना, मेटि पलनि की आड़।
जै श्री हित मोहन प्रिय प्रेम पिछान्यौ, मिली उर अंचल छाँड़।।

[१३०]

राजत निकुंज महल ठकुरानी।
कुसुम सेज पर पौढ़ी स्यामा, राग सुनत मृदु वानी।।
ललिता चरन पलोटन लागी, लाल दृष्टि ललचानी।
पाँइ परत सजनी के मोंहन, हित सौं हा-हा खानी।।
भई कृपाल लाल पर ललिता, दै आज्ञा मुसिकानी।
आऔ मोंहन चरन पलोटौ, जैसैं कुँवरि न जानी।।
आज्ञा दई सखी कौं प्यारी, मुख ऊपर पट तानी।
वीन बजाय गाइ कछु ताननि, ज्यौं उपजै सुख सानी।।
गावन लगे रसिक मनमोहन, तब जानी महारानी।
मिलि पौढ़ी 'व्यास' की स्वामिनि, वृन्दावन की रानी।।

[१३१]

ललन की बतियाँ चोंज सनी।
परम कृपाल चितै करुनामय, लोचन कोर अनी।।
उमँगि ढरे दोउ सुरत सेज पै, टूटी तरकि तनी।
परम उदार 'व्यास' की स्वामिनि, वखसत मौज घनी।।

[१३२]

चाँपत चरन मोहन लाल।
परजंक पौढ़ी कुँवरि राधा, नागरी नव बाल।।
लेत कर धरि परसि नैंननि, हरषि लावत भाल।
लाइ राखत हृदै सौं तब, गनत भाग विशाल।।
देखि पिय आधीनता, भई कृपा-सिन्धु रसाल।
'व्यास' स्वामिनि लियैं भुज भरि, अति प्रवीन कृपाल।।

[१३३]

नव नृपति चक्र चूड़ामनी साँवरौ,
राधिका तरुणिमनि पट्टरानी।
शेष गृह आदि बैकुंठ पर्यंत सब,
लोक थानैंत वन राजधानी।।
मेघ छ्यानवै कोटि बाग सींचत जहाँ,
मुक्ति चारौं जहाँ भरत पानी।
सूर्य-शशि पाहरु, पवन जन इंदिरा-
चरन दासी, भाट निगम वानी।।
धर्म कुतवाल शुक सूत नारद चारु,
फिरत चर चार सनकादि ग्यानी।
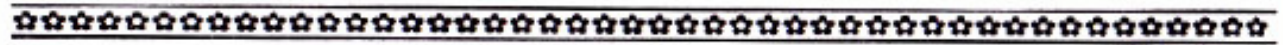
सत्तगुन पौरिया काल बँधुवा करम,
डाँड़ियै काम-रति सुख निसानी॥
कनक मरकत धरनि कुंज कुसुमित महल,
मध्य कमनीय सयनीय ठानी।
पल न बिछुरत दोऊ जात नहिं तहाँ कोऊ,
'व्यास' महलनि लियैं पीकदानी॥

[१३४]

कुंज के आँगन में दोऊऽब, चाँदनी बैठे राजैं।
वरन-वरन कुसुमनि की सज्जा, कोटि अनंगनि लाजैं॥
कहत बात मुसिकात परस्पर, अति अनूप छबि छाजैं।
'नित्यानंद' निरखि दम्पति-सुख, मिलि सहचरी समाजैं॥

[१३५]

वारी मेरे मोहन आउ, बले हू जाऊँ बले।
कुंज सदन में विविध कुसुमगन, वरषत सुरँग गुलाल दले॥
मनहुँ बसंतु सैन रचि राख्यौ, विलसहु दंपति काम कले।
कोकिल कलरव पारस कूजत, सारस विगसत अवनि तले॥
भृंग झकोरनि झरत पराग सु, मारग कोमल चलहु चले।
जलज भुजंग लवंग लता अवलंवित फोफल फलनि फले॥
मनहुँ दिव्य वीरी रचि राखी, खाहु खवावहु मदन गले।
इहि विधि कुसुमलता फूलति अध, झूलति मंद समीर हले॥
कुंज कुटी उत्कंठित मनु कर, माल डुलावति सगुण भले।
चंदन तर अध केसरि विगसति, सीकर वरषत यमुन जले॥

मरदत मलयानिल मनि भूमि सु, अँग-अंगनि चर चहूँ लले।
इहि विधि वचन सुनत ललिता के, प्रमुदित प्रवशित कुंज तले।।
वरषत हरषत मोद निरंतर, निरवधि रंगनि रहौ मिले।
बलि 'वैष्णवदास हित' राधाबल्लभ, सुख बल्ली कौं पालि पले।।

[१३६]

नैंना मिले नैंननि धाइ।
मान कौ अपमान कीयौ, लियैं लाल बुलाइ।।
मनहिं मन दुहुँ ओर चोरनि, बढ़े अनभय भाइ।
प्रेम-सागर उभय उमड़े, सेत हेत मिटाइ।।
गौर-श्यामल अंग संगम, कोक वेदनि चाइ।
देखि फूली 'कली' दम्पति, करत केलि अघाइ।।

[१३७]

क्रीड़त वर जोरि कुञ्ज वरषत आनन्द पुञ्ज,
निरखत ललितादि नैंन सरस केलि री।
नव किशलय सेज रचित विविध रतन भवन खचित,
सकल सौंज सुहथ बनी समर झेलि री।।
गौर-श्याम प्रचुर रंग बाढ्यौ रस अति अभंग,
पुलकि-पुलकि भुजनि भरत अंश मेलि री।
जै श्री कृष्णदासि हित उपासि निरखत हौं मन्द हासि,
कृपा करौ सुख निधान सरन मेलि री।।

[१३८]

दम्पति रूप अनूपम देखत नैंना न अघाने।
निरखि-निरखि मुसिकात परस्पर, अंग-अंग सुख साने।।
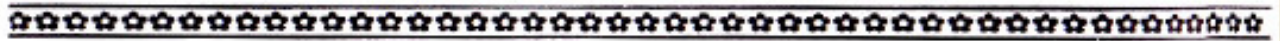
मिस ही मिस पिय कर उर लावत, नागरि तबही जाने।
'श्रीकमलनैन हित' लपटाइ लाल कौं, दीये सुख मनमाने॥

[१३९]

नवल निकुंज-विराजहीं, दम्पति रस-पागे।
मुहाँचुही ज्यौं ज्यावहीं, बतरस-अनुरागे॥
ग्रीव-लटकि-भृकुटी-मटकि, चल नैंन सुहाये।
करनि-डुलनि बेसर-नचनि, मृदु मुरि मुसिकाये॥
हाव-भाव भर्‌यौ भाँवतौ, कहि-कहि कल बानी।
कुच वैभव दरसाइकैं करि व्याज ऐंड़ानी॥
हा प्यारी! कहि पिय धुके, छबि सोत समायौ।
'मिष्ट' प्रिया भुज भरि लियौ, अधरामृत प्यायौ॥

[१४०]

पौढ़े माई श्रीराधाबल्लभलाल।
वृन्दावन घन नव निकुंज में, संग प्रिया नव बाल॥
एक सेज पर इक पट ओढ़ैं, करत रँगीले ख्याल।
उर सौं उर मुख सौं मुख जोरत, उरझी बाहु-मृनाल॥
आलसजुत घूमत रस झूमत, रस भरे नैंन विशाल।
दुरि देखत ललितादिक रन्ध्रनि, धनि जिय मानि निहाल॥
छूटी अलक टूटी हारावलि, श्रम जलकन बने भाल।
'भोरीसखी हित' चरन पलोटत, पीवत रूप रसाल॥

[१४१]

पौढ़े ऊँची अटा बिहारी।
कुञ्ज बनी हीरनि की सुन्दर, त्रिविध पवन रुचिकारी॥

ता मधि कुसुम-दलनि कल राजत, षटपद गुंज सुखारी।
झीने पट झलकत तन शोभा, 'हितदासी' बलिहारी।।

[१४२]

कुंज भवन मोहन करत हैं काम केलि।
बैठे पुहुप तलप ऊपर, प्यारी के कंठ भुज मेलि।।
हाव-भाव मृदु हास विलासनि पियत सखी नैंननि सौं रेलि।
'मथुरा हित' मोहन ढिंग राधा, सुरति समय रस झेलि।।

[१४३]

नहिं सुरझत उरझनि प्रेम की, रही रोम-रोम में भोइ।
राधे जू मोंहन ह्वै रहीं, अरु मोंहन राधे जू होइ।।
ललित लतनि तर रँगमगे हो, दोऊ मैंन सनमान।
नैंननि सौं नैंना मिले हो, पगे प्राननि सौं प्रान।।
चिवुक तरैं पिय कर दियैं, सोभित हैं इहि भाइ।
नील कमल पर अरुन कमल मनु, खिल्यौ है परम सचु पाइ।।
'नागरिया' रजनी घटै, अरु चंद मलिन दुति होइ।
त्यौं-त्यौं आलस रूप दुहुँनि कौ, इतै चौगुनौं होइ।।

[१४४]

आजु अति सोभित नवल निकुंज।
लता मंजु नव कंज विविध रँग, रची सहज सुख-पुंज।।
त्रिविध समीर बहै सुखदाई, बोलत पिक मधु बैंन।
अति सुरंग कोमल दल कमलनि, रची तहाँ सखि सैन।।
तापर रसिक राधिका-मोंहन, विलसत सहज विलास।
करत बिहार सुरत नाना विधि, बिच्च-बिच्च ईषद हास।।

सो सुख सार परम निजु दासी, वर बिहार बढ़वति दुहुँ ओर।
'हित ध्रुव' रहीं एकटक जोहत, ज्यौं प्रति चंद चकोर॥

[१४५]

मंजु कुंज मधि पौढ़े प्यारे।
कंज-दलनि ठनि तलप सुवासित, राजत षोड़ष द्वारे॥
लता माधुरी सुमन विकच तहाँ, भ्रमर-निकर मँड़रारे।
सुभग तरनिजा-तट अति राजत, नलिन प्रफुल्लित न्यारे॥
मारुत त्रिविधि गवाछनि आवत, किरन मयंक सुचारे।
चाँपत चरन 'श्रीहित नँदबल्लभ', विवि कोमल सुकुमारे॥

[१४६]

आलस झपकि आवत पलक।
श्रमित कछु सुकुमारि के तन, देखियत जल-झलक॥
कोक विद्या सूर नागरि, वदन विथुरी अलक।
वृन्दावन हित रूप प्रीतम-पोष की मन ललक॥

[१४७]

राधाबल्लभ कियौ सुख सैन।
सदन-शोभा कहा कहौं, सेवत जहाँ गन मैन॥
दुग्ध-फैन विशेष कोमल, पट बिछे सुख-दैन।
तातैं मृदुल सु गेंदुवा, उपमा जु देत बनै न॥
परस्पर प्रतिबिंब सोभा-निकर कौ मनु ऐन।
सीस तर राजत भुजा, चित अधिक पावत चैन॥
निरखति अली अनुरागिनी, पल सौं पलक लगैं न।
भवन आनन-चाँदनौं, वरनत बनै नहिं बैन॥

हित संधि सजनी पद पलोटत, वारनैं लगी लैन।
वृन्दावन हित रूप सागर, मीन संतत नैंन॥

[१४८]

पौढ़ी पिय हिय कुँवरि लसी है।
हंस-सुता गहरे जल मनु छबि-दामिनि न्हान धसी है॥
कै सिंगार कलपतरु कमनी, कंचन-बेलि गसी है।
कै मरकतमणि गिरि में मानौं, हेम-खान निकसी है॥
वदन सौं वदन बाहुँ बाहुँनि सौं, हित की कसनि कसी है।
मनहुँ दामिनी राहु-फंद में, जोट मयंक फँसी है॥
विथुरि रह्यौ सिर केसनि-जूरौ, इहिं विधि छबि दरसी है।
सुधा पिवन पन्नग-सुत-सैंना, मनु आई हुलसी है॥
यौं राजति प्रीतम ढ़िंग नागरि, लोचन नींद बसी है।
वृन्दावन हित रूप निरखि सब, उपमा देत खसी है॥

[१४९]

नींदरिया नैंननि आइ भरी।
ललकनि रही दुहुँनि मन रस की, बैरिनि बीच अरी॥
मनु छबि-बेलि तमालहिं लपटी, उरझनि नेह खरी।
बाढ़ी कांति उभय विधु वदननि, दुतिधर दुति निदरी॥
श्रमित भई सुकुँवारि, दसन-बीरी खंडित जु धरी।
सोवत हू शोभा अंगनि तें, अमित भाव उघरी॥
वरनौं कहा हियैं की हिलगनि, जो अब दरसि परी।
यौं अघसे मनु होत एक तन, प्रीति विलक्षन री॥

हित रूपा अलि चरननि चाँपत, ततसुख रीति ढरी।
वृन्दावन हित प्रेम भींजि उर, मानत रंग हरी॥

[१५०]

किंकनी-दुंदुभी चंद्रिका-धुज मनौं,
मदन-गढ़ लैन कौं नवल नागरि चली।
कियौ प्रस्थान उत्साह मन कौं दियौ,
सुरत-रन-खेत सिज्या सु शोभित भली॥
अंग हरषे सुभट अगमने पग धरत,
परम कौतिक करत मन जु यह अति बली।
लाल कैं भाल पर तेज अति जगमगै,
डहडहे नैंन ज्यौं खिले वारिज-कली॥
सजी सैंना जु अभिलाष नाना मनौं,
महल में अपूरव होहिगी रँग रली।
कोक की कला सबला जु अब हौंहिगी,
पलैंगी सुविधि चित-वृत्ति-रूपा अली॥
वलय-नूपुर विजय-सुजस अब गाइहैं,
प्रेम-बस निरखि वन्दै मदन पग-तली।
वृन्दावन हित रूप राधिका-लाल मिलि,
सेज-निवसित भये वारि पुहुपावली॥

[१५१]

कंप अँग-अँग जानि नागरि, कुंज मंदिर धँसी।
अंक भरे पिय सेज ऊपर, खोलि कंचुकि कसी।।
अधर अमृत प्याइ पिय-उर, दामिनी सी लसी।
केलि कोविद 'हित दामोदर', ताप मनसिज नसी।।

[१५२]

दम्पति सेज में रसमसे।
दामिनी पर घन रु घन पर, दामिनी यौं लसे।।
लाल बालनि भुज-मृनालनि, गाढ़ फंदनि कसे।
अधर-बिंब सु दसन दाड़िमि, अरस परसनि डसे।।
नैंन नैंननि हियौ हिय सौं, जंघ जुगलनि घसे।
भनित सुनत वचन जु सुनि-सुनि, मंद मुसिकनि हँसे।।
रतन-भूषन, कुसुम-भूषन, अंग-अंगनि खसे।
प्रेम-सागर माँहिं दोऊ, चौंप चौंपनि धसे।।
केलि-पंक अगाध में, ललितादि-मन-गज फँसे।
नित्य 'हित ब्रजलाल' चित में, इही विधि सौं बसे।।

[१५३]

कुंज रति केलि कमनीय दंपति करत।
परस्पर हित-विवस रूप-मादिक छके,
दूर करि वसन उर सुदृढ़ अंकनि भरत।।
पिवत मधु अधर सुख-सिन्धु में मगन मन,
निकट तिहिं समैं चख चारु खंजन लरत।
कबहुँ भ्रुव भंग जुत सी करति रंग सौं,
अंग प्रति अंग दै परस्पर मन हरत।।
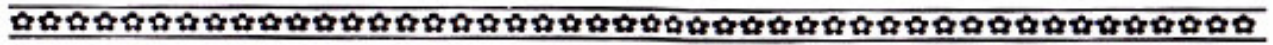
विथुरि कच कनक मुख गौर निसरति श्रमित,
चंद तें सघन मनु स्याम बादर टरत।
सुरत रस स्वेद तें महकि केसरि मिली,
वास लै 'नागरिदासि' धीर न धरत॥

[१५४]

आजु इहिं रंग महल में, लखि सखि मंगलचार।
गौर-स्याम अति रति-रन-झगरौ, त्यौं-त्यौं रस-बढ़वार॥
मुंचि-मुंचि इत-उत आतुरता, वदन रुखाई मन जु उदार।
वृन्दावन हित रूप मदन की, चौपर खेलत चतुर खिलार॥

[१५५]

अखियाँ नींद घुमाई हैं।
अमी श्रवत ही अबहीं पलकनि, माँहिं समाई हैं॥
प्रीतम सौं बतरानि लाड़ भरि, झूमि जु आई हैं।
वृन्दावन हित रूप चोट खुलि, करनि सिखाई हैं॥

[१५६]

लड़ैती जू के नैंननि नींद घुरी।
आलस बस जोवन बस मद बस, पिय कैं अंश ढुरी॥
पिय कर परस्यौ सहज चिवुक वर, बाँकी भौंह मुरी।
'बाबरी सखी' हित व्याससुवन-बल, देखत लतनि दुरी॥

[१५७]

आलस नैंन आवत घूम।
खसित भुज पिय अंश तें, सम्हराइ कर लै चूमि॥

लाल चुटकी दै जगावत, खुले ताकत भूमि।
वृन्दावन हित रूप घूँघट, वदन पर रह्यौ झूमि।।

[१५८]

देखौ चित्रसारी बनी।
मणिनु-दीपक रन्ध्र झलकत, विविध शोभा सनी।।
अरस परस सुगंध की, उदगार आवत छनी।
मध्य सेज विराजि पौढ़े, रसिक दंपति मनी।।
अंग रंग अनंग भीने, राधिका धन धनी।
पद-कमल सेवत तहाँ, 'हित रूप' एकै जनी।।

[१५९]

अरी इन बोलनि पै हौं वारी।
हाथ गहैं बतरात परस्पर, रूप छके पिय-प्यारी।।
कोउ-कोउ बात न मानत भामिनि, लाल करत मनुहारी।
'सदानंद हित' बात बनावनि, हँसि मुसिकी सुकुमारी।।

[१६०]

देखौ सखी सुख सैंन कौ, मिलि पौढ़े हैं पिय-प्यारी।
नैंन बैंन आलस बलित, हँसि कसिकैं अँकवारी।।
मरगजे वसन विराजहीं, लखि सखि सौंधे भीने।
दरसति दंपति देह-दुति, दोउ ओढ़े हैं पट झीने।।
भरे हैं कपोल तँबोल रँग, अद्‌भुत अति छबि पावैं।
वदन सदन सुख-सम्पदा, कहौ कापै कहि आवैं।।
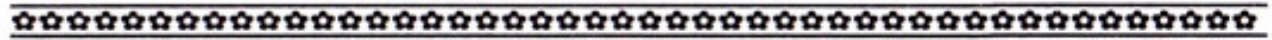
अलबेली आलिंगनी उर, अरु ऐंड़ानि जम्हानि।
'हित मोहन' पिय मन बसी, मृदु ईषद मुसिकानि।।

[१६१]

देखि सखि नवल निकुंज विहार।
राजत रसिक सेज पर दोऊ, रूप-सींव सुकुँवार।।
परम चतुर वृन्दावन रानी, करति अंक पिय सैंन।
निरखत सहज अंग छबि मोंहन, भये सजल पिय नैंन।।
यह गति जानि प्रिया प्रीतम की, परम मृदुल मन कीनौं।
जिहिं विधि रुचि प्यारे लालन की, तिांहं-तिहिं विधि सुख दीनौं।।
मुदित सखी अवलोकत, जिनकैं यह सुख जीवन माई।
इहि रस पगीं और कछु सुपनें, हित ध्रुव मन न सुहाई।।

[१६२]

सोहत हैं अलसौंहे नैंना।
लटकि-लटकि पिय पर अरसावति,
सिथिल कहत मुख आधे-आधे बैना।।
बहुत गई निशि प्रिया जँभावत, चुटकी देत लाल सुखदैंना।
नागरिदासि सखी छबि देखत, बिसरि जात है उर-उपरैंना।।

[१६३]

कुंज पधारौ राधे रँग भरी रैंन।
रँग भरी दुलहिनि रंग भरे पिय, स्यामसुंदर सुखदैंन।।
रँग भरी सेज रची ललितादिक, रँग भर्‌यौ उलहत मैंन।
रसिक बिहारी पिय-प्यारी दोउ हिलिमिलि, करहु सेज सुख सैंन।।
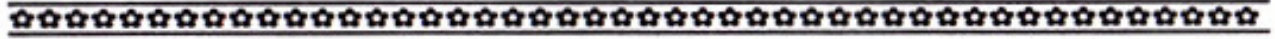
[१६४]

अब पौढ़नि कौ समय भयौ।
इत झुकि आई द्रुमनि पर छहियाँ, उत ढरि चंद गयौ॥
उमगि मिले दोउ सुरत सेज पै, बाढ्यौ रंग नयौ।
रसिक बिहारी पिय-प्यारी दोउ पौढ़े, यह सुख दृगनि लयौ॥

[१६५]

प्यारी जू आगैं चलि आगैं चलि,
गहवर वन भीतर जहाँ बोलैं कोइल री।
अति ही विचित्र फूल-पत्रनि की सज्या रची,
रुचिर सँवारी तहाँ तू सोइल री॥
छिन-छिन पल-पल तेरीयै कहानी, तुव मग जोइल री।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी,
कहत छबीलौ काम रस भोइल री॥

[१६६]

विलसत प्यारी-लाल कुंज रजनी।
वदन-वदन जौरैं मदन लड़ावत,
नूपुर के सुर मिलि बलया की बजनी॥
पुलकि-पुलकि तन आनँद मगन मन,
मधुरैं वचन श्रवन सुनि सजनी।
श्रीबीठल विपुल रस रसिकबिहारी बस,
नव त्रिया तिलक, सुरति जीति गज-गजनी॥
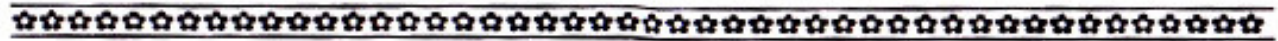
[१६७]

एक ओढ़नी ओढ़ि पौढ़े, प्रिया-पिय प्रेम-प्रजंक।
अरध निशा रस रीझि भींजि रहे, अपने-अपने कर,
ऐंचत हँसत निसंक॥
सखि राखति उर पर अंचल तर, लटपटाइ रहे सीत भीत है,
यौं गाढ़े गहि अंक।
श्रीबिहारिनिदासि निरखि सखी, या छिन की छबि पर,
वारति तन-मन अरु वारति सब रस रंक॥

[१६८]

हँसि चितई पिय-तन मृगनैंनी।
मुरझि पर्‌यौ ताही छिन लालन, पैठि गई हिय चितवनि पैंनी॥
अति अकुलाइ अंक भरि लीनौं, अधर-सुधा दै कोकिल-बैंनी।
रति रस विवस किशोर-किशोरी, रंग महल विलसैं सुख सैंनी॥

[१६९]

कुसुम सेज पिय-प्यारी पौढ़े, करत हैं रस बतियाँ।
हँसत परस्पर आनँद हुलसत, लटकि-लटकि लपटात छतियाँ॥
अति रस रंग भीने रीझे री रिझवार,
एक तन-मन भई इक मति गतियाँ।
रसिक सुजान निर्भय क्रीडत दोउनि,
अंग-अंग प्रतिबिंबित दोउनि के वसन भतियाँ॥

[१७०]

प्यारी-पिय कुंज महल सुख लूटैं।
लसत वदन छूटीं अलकावलि, मोतिन की लर टूटैं॥

उरज अरगजा-पंक अंक मिलि, अधर-सुधा-रस घूँटैं।
'रसिक' रूप छबि नित्य निहारैं, ललित जुगलवर जूटैं॥

[१७१]

श्रीराधा मोंहन कैं तन में।
कुंदन-बेलि तमालैं लपटी, किधौं दामिनी घन में॥
महल निकुंज सुरंग सेज पर, दंपति राजत वन में।
'रसिक' रूप ये ललित बलित छवि, सूर सुभट रति-रन में॥

[१७२]

प्रिया-पिय नैंन अरुनता छाई।
अंग-अंग अँगरात मदन-बस, फिरि फिरि लेत जँभाई॥
कोमल कुसुम विविध नाना रँग, सरस सुगंध सुहाई।
परम विचित्र ललित अपने कर, रुचि-रुचि सेज बनाई॥
अति अनुराग भरी श्रीश्यामा, मिलि पौढ़ी किलकाई।
भगवत रसिक रसमसे दोऊ, करत केलि मन भाई॥

[१७३]

आजु महा रस कुंज-भवन में, बतियनि रैंन सिरानी जात।
जालरन्ध्र सौं भरित चाँदनी, चलत मन्द कछु सीतल बात॥
सनसनात निशि झिलमिल दीपक, पात-खरकि बिच-बीच सुनात।
रँगमगे दोउ भुज दियैं सिरहाने, आलस बस मुसिकात जँभात॥
मधुर बिहाग सुनात दूरि सौं, लपटि रहे विथकित सब गात।
'हरिश्चंद' दोउ रूप-लालची, थकित तऊ जागे न अघात॥

[१७४]
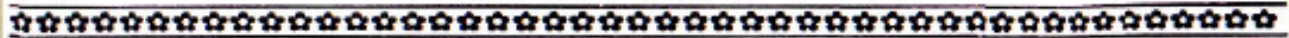
देखौ पिय चिवुक उचाइ, राजै रे नैंननि में अलसानि घनी।
झुकि रही नींद लोयन भरी लाली, कज्जल रेख अनी।।
अलकैं सिथिल सिथिल भई पलकैं, भोंहैं बंक तनी।
'रसिक विहारी' पिय-प्यारी जोरी चितवनि,
मिलि रही अनी सौं अनी।।

[१७५]

सुनौ बलि एक पहेरी मेरी।
एक भवन सुंदर में सुंदरि, रीति अनौखी हेरी।।
कमल भयौ आसक्त भ्रमर पै, निजु मकरंद चखावै।
गुंजा रव सुनि चकित होइ पुनि, ताही ढिंग चलि आवै।।
चंदा ऊपर स्वच्छ चाँदनी, करि रही अमित प्रकाश।
लूमि झूमि घन ऊपर वरषत, दामिनि रूप विलास।।
अंग-अंग प्रति अमित माधुरी, जो देखै सो मोहै।
हौं बलि जाऊँ बताइ 'किशोरी', ऐसी धौं कहौ को है?।।

[१७६]

चली है कुँवरि राधिका निकुंजभवन रवन-पास,
सजि सुवासित भँवर संग-संग संग।
आइ रसिकराइ निकट लई है भुजनि झेलि मेलि,
करत केलि परसत सुख अंग-अंग अंग।।
जुरत नैंन टुटत हार अंचल उर छुटत वार,
चलि कटाक्ष भृकुटि भंग रंग-रंग रंग।

ता घरिया देखि दुहुँनि 'नागरिया' लतनि-ओट,
तन-मन गति श्रवन नैंन पंग-पंग पंग॥

[१७७]

केलि के मन्दिर सेज सरोजनि, लाड़िली-लाल दियैं गरवाहीं।
देखनि मध्य निमेष महा दुख, लोचन लोल तृषा न सिराहीं॥
साँवल उज्ज्वल केलि कला रस, माधुरी सार सुधा वरषाहीं।
गाइन-चारत मल्ल-पछारत, कुंज कैं आँगन आवत नाहीं॥

[१७८]

पौढ़े साँवरे नँदलाल।
कुंज मंदिर सुभग सज्या, संग राधा बाल॥
मृदुल गेंदुक सीस तर पर, भुजा स्यामल गौर।
मिले उर सौं उरज प्रिया-पिय, रसिक वर सिरमौर॥
अधर अमृत पियत प्रीतम, घुरत मंजुल नैंन।
एक अंबर 'हित दामोदर', ओढ़ि मूरति मैन॥

[१७९]

सेज विराजत प्रीतम-प्यारी।
प्रफुलित कंज सु फूले दोउजन, तैसिय शरद उजियारी॥
बोलत कोकिल अनुपम शब्दनि, काम केलि अनुसारी।
निरखत सुख ललितादिक आली, प्रेम बढ्यौ अति भारी॥
मदन-जुद्ध अँग-अंग परस्पर, नागरि नवल बिहारी।
अवदति रसना कटि-वसना ऊपर, विरमि केलि बलकारी॥
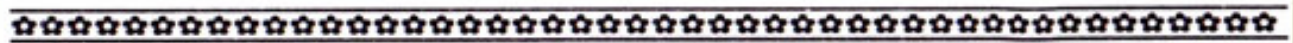
कल जस गावत नूपुर की धुनि, प्रीतम हरि मनुहारी।
अपनेई रँग रँगे जुगलवर, 'हित विलास' बलिहारी।।

[१८०]

लड़ैती जू के लोचन नींद भरे।
पलक झपत पिंजरनि रुकि खंजन, मृदु अकुलानि खरे।।
प्रीतम मन बाँधनि जु अति बली, बाँकी रीति अरे।
रजनी अलप रही अब लगि ये, रति-रन-सूर लरे।।
इत उत अति सनेह बस रहि गये, चिवुकनि कर जु धरे।
शशि सौं मनु अरि भाव मिटावन, वारिज पाँइ परे।।
बेसरि कौ मोती अधरनि बिच, लखि दृग थकित करे।
मनु भृगु-नंदन सरसुति धारा, गोता लै उछरे।।
किधौं अंजन के भार नवे पल, किधौं छबि भार भरे।
किधौं अति सूनी जानि नींद नें, पलक-कपाट जरे।।
सोवत हू दरसत जु अध खुले, प्रीतम-ओर ढरे।
वृन्दावन हित रूप अमल सौं, छकि-छकि सुधि बिसरे।।

[१८१]

पौढ़े श्रमित ललित किसोर।
बिनुमित सोभा सिन्धु सजनी, मो मति लहति न ओर।।
दियैं उसीसा सीस तर बनी, वदन मुसिकनि थोर।
अधर रहि गई खंडि वीरी, अधखुली दृग कोर।।
आनन ऊपर यौं विराजत, नील पट के छोर।
शशि मंडल पै मनहुँ रविजा, बहति छबि सौं जोर।।

सोवत हू जु सनेह-उरझनि, चिवुक कर टकटोर।
वृन्दावन हित रूप वरषत, मैन के चित चोर॥

[१८२]

शोभा देखि री अब आइ।
नींद बस भई प्रिया, प्रीतम रुचि पलोटत पाइ॥
आँगुरी चाँपत ललाई, लसति है इहिं भाइ।
हीय कौ अनुराग पिय मनु, तहाँ उझिल्यौ जाइ॥
मृदुल तरुवा परस तें कछु, लाल जीय सँकाइ।
सरसि आवतु प्रेम अति बल, हियौ लेत दवाइ॥
सनै-सनै पलोटिवौ, प्यारी जगि न ज्यौं अनखाइ।
हरतु है ज्यौं चोर पर-वितु, स्वाँस लेत डराइ॥
दुरी उर-अभिलाष पूरन, करत भाग मनाइ।
वृन्दावन हित रूप पिय कृत, देखि उठी मुसिकाइ॥

[१८३]

पौढ़े दोउ ललित लतानि तरे।
सुमन-सेज सुख-रासि सनेही, अधरनि-अधर धरे॥
उरजनि-उरज जोरि कटि सौं कटि, लपटि भुजानि भरे।
यह रस मत्त मगन मन सोयें, 'भगवत' विजन करे॥

[१८४]

प्यारी तेरी अँखियाँ नींद घुमाइयाँ।
अद्भुत औसर वदन-रूप-सर, खंजन जुग मनौं न्हाइयाँ॥

झुकनि झुकत ताटंक कपोलनि, निकट जानि अकुलाइयाँ।
मुँदत खिलत मनु कमल रस भरे, रवि-शशि लखि इक ठाँइयाँ॥
केलि गहर छबि मीन उभै मनु, दुरि-दुरि देत दिखाइयाँ।
वृन्दावन हित रूप भीर पर, प्रीतम रीझि बिकाइयाँ॥

[१८५]

लड़ैती जू के आलस नैंन भरे।
दीरघ चपल सुरत-सुख-पूरित, झपि-झपि पुनि उघरे॥
मनहुँ रूप पल-पिंजरनि भीतर, खंजन आनि धरे।
तिनहि उलंघि उड़्यौ चाहत हैं, जिय अकुलाइ खरे॥
जबहि जम्हाति छबीली नागरि, कर ऊँचे जु करे।
चुटकी देत रसिक प्रीतम तब, सरस सनेह ढरे॥
निजुअलि सुहथ जिमाइ सँवारति, सुंदर कच बगरे।
शीतल जल अँचवाइ पान दै, तत्सुख प्रान अरे॥
चाँपति चरन तोरि तृन छवि-सागर दृग मीन ररे।
वरनति प्रेम-पहेली मुख तें, अमृत वचन उचरे॥
निद्रा बस पौढ़े जु श्रमित सँग, मनमथ सैंन लरे।
वृन्दावन हित रूप सुरत-रन, जाने सूर परे॥

[१८६]

रंग भरे दोउ लाल री, छकनि छके छबि राजैं।
बैठे सेज गुलाब की, अंग अनंगनि साजैं॥
कोक-कलनि के भाय सौं, कर-दृग नचनि उमंगा।
विहँसत भरि अँकवारि लै, सखि लखि प्रेम अभंगा॥

परिरम्भन-चुम्बन चतुर, उर सौं उर जु मिलावैं।
सुरत-समर रस में मगन, हितअलि नैंन सिरावैं।।
कल कंकन-किंकिनि नदित, नूपुर धुनि रही छाई।
बिछियन रव कल हंस मनु, वलय रु चुरी घुराई।।
पग पेलनि झगरनि मुदित, चिवुक सुचारु प्रलोवैं।
नीवी-बन्धन डोरि कटि, शिथिल उरज पट गोवैं।।
मल्हकि बाँहु रुरकत सु उर-हार-हमेलनि तोरैं।
प्रेम-रसासव में मगन, अधर सुधा रस बोरैं।।
ललितादिक चहुँ दिशि खरीं, रंध्रनि-दृग टक लावैं।
हित ललितकिशोरी धन विलसि,
चट करजनि बलि जावैं।।

[१८७]

प्रिया उर फूलनि नई-नई।
छिन-छिन प्रति औरै गति बदलत, तन-मन फूल छई।।
फूल श्रृंगार बने तन शोभित, जगमग जोति भई।
फूलनि बरसत फूलनि सरसत, मनु गौर घटा उनई।।
छबि पावस रितु मनु झर लागी, पिय-तन-मन भिंजई।
फूले हाव-भाव कल कोकन, फूली केलि नई।।
विलसत मौज सौंज फूलनि लै, सुरत-समर-विजई।
पिवत रसासव दोऊ छिन-छिन, तन-मन सुधि भुलई।।
हितसजनी फूली गुन गावति, बीना अंक लई।
'विमलअली हित' वारत पुष्पनि, जै धुनि कुंज छई।।
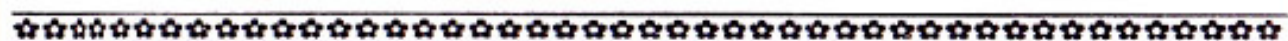
[१८८]

लाल की अँखियाँ रूप-लुभानी।
रूप प्रिया कौ विध्यौ उर अन्तर, ताही सौं अकुलानी।।
एक झलक प्यारी बिनु देखे, अलप कलप ज्यौं विहानी।
पीवत रहत सदा दृग भरि-भरि, तृपित तऊ नहिं मानी।।
उर भयौ नयन नयन भये उर अब, हितसजनी सम्हरानी।
यद्यपि कुँवरि लाल ढिंग बैठी, प्रीति हियैं घुमड़ानी।।
वेगहिं अति अकुलाय लाल कौं, आँकौ भरि लपटानी।
यह हित रूप विलोकत निजु अलि, 'शशिमुखि' सबहि भुलानी।।

शीतकालीन सैंन के पद

[१८९]

अद्‌भुत सेज आजु की बनाई।
अति ही कोमल वसन अनूपम, दुग्ध-फैंन की कहा बड़ाई।।
अरुन निहाली मजीठ रंग की, रुई केसरी अति झलकाई।
नाना सुगंधनि नव निकुंज में, पिय-प्यारी मन भाई।।
हरषत वरषत फूलनि तन-मन, अतन चौंप अधिकाई।
रीझि परस्पर भींजि रसिकवर, आनँद उर न समाई।।
यह सुख देखत सहज सखी जे, ललितादिक महलाई।
जैश्री कमलनैंन हित संतत विलसौ, गौर-स्याम सुखदाई।।

[१९०]

राजत दंपति मृदुल सेज पर, ओढ़ैं स्याम सुदेस रजाई।
कंचन के फूलनि सौं लाल रुई झलकत, सिंगार-भूमि तामें-
प्रीति-फुलवारी, सींचि अनुराग खिलाई।।

झमकि रहीं ललितादिक चहुँ दिसि, जाल रन्ध्र ह्वै निरखत शोभा,
तहाँ कछू उपमा मन आई।
प्रेमदासि हित मनौं सैंन-गृह, चन्द्रमान की पहिरी माला,
झलमलात अछवाई॥

[१९१]

रंगमहल बैठे गलवहियाँ, हिमरितु करत प्रसंश धनी-धन।
मूरति लाड़ उभय देखि सजनी, आजु भयौ चाहत मन इक तन॥
नेह निहोरि देत मुख बीरी, वेदनि मरम जनावत मन-मन।
वृन्दावन हित रूप असीसत, शोभा लखि बलि जात सखीजन॥

[१९२]

रंग के महल में रँगीले सब साज धरे,
प्यारी रँगी प्यारे-रँग प्यारौ रंग प्यारी के।
गिलम गलीचानि गद्दा मसलंद लगि,
विराजे प्रिया-लाल परदा छोरे जु तिवारी के॥
रुचिर अँगीठी हू रोशनी बहु भाँति करि,
अलिगन विलोकत हैं ठाढीं ढ़िंग जारी के।
'मोहन हित' दम्पति जू हिम की बहार में सु,
करत बिहार पट मूँदि चित्रसारी के॥

[१९३]

श्रीहरिवंश-सरोज-पद, 'अलिगोविन्द' आधार।
पिवत नेह-सौरभ, सदा मत्त भयौ गुंजार॥
मत्त भयौ गुंजार, हार हित-नाम-गिरा-जस।
करत मिथुन-गुन-गान, केलि क्रीड़ा सुख सर्वस॥
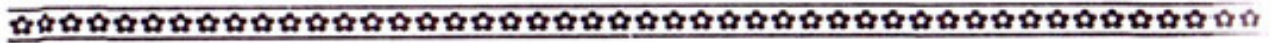
कंज कुसुम की कुंज में, बिहरत जुगलकिशोर हद।
श्रीव्यासनंद की कृपा तें, सहज पलोटौं कुँवरि पद॥

रसिक नाम ध्वनि

[१९४]

जय जय राधाबल्लभ गुरु हरिवंश।
रँगीलौ राधाबल्लभ हित हरिवंश॥
छबीलौ राधाबल्लभ प्यारौ हरिवंश।
रसीलौ राधाबल्लभ जीवन हरिवंश॥
जै हरिवंश जै जै हरिवंश जै जै जै हरिवंश॥ जै जै राधा०॥
श्रीवृन्दावन रानी राधावल्लभ नृपति प्रसंश।
हित के बस जस रस उर धरिये, करिये श्रुति-अवतंश॥१॥
वंशीवट जमुनातट धीरसमीर, पुलिन सुख-पुंज।
बिहरत रंग रँगीले हित सौं, मण्डल-सेवाकुंज॥२॥
ललित विशाखा चम्पक चित्रा, तुँगविद्या रँगदेवी।
इँदुलेखा अरु सखी सुदेवी, सकल जूथ हित-सेवी॥३॥
श्रीवनचन्द्र श्रीकृष्णाचंद्र, श्रीगोपीनाथ श्रीमोहन।
नाद-विन्दु परिवार रँगीलौ, हित सौं नित छबि जोहन॥४॥
नरवाहन ध्रुवदास व्यास, श्रीसेवक नागरीदास।
बीठल मोहन नवल छबीले, हित-चरननि की आस॥५॥
हरीदास नाहरमल गोविंद, जैमल भुवन सुजान।
खरगसेन हरिवंशदास, परमानँद के हित प्रान॥६॥
गंगा-जमुना कर्मठी अरु, भागमती ये बाई।
हित जू की चरन शरन ह्वै कैं इन, दंपति-संपति पाई॥७॥
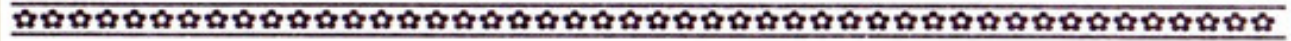
दास चतुर्भुज कन्हर स्वामी, अरु प्रबोध कल्यान।
स्वामी लाल दामोदर पुहुकर, सुन्दर हित उर आन॥८॥
हरीदास तुलाधार और यशवंत महामति नागर।
रसिकदास हरेकृष्ण दोउ ये, प्रेम भक्ति के सागर॥९॥
मोहन माधुरीदास द्वारिकादास परम अनुरागी।
श्यामशाह तूँमर कुल हित सौं, दंपति में मति पागी॥१०॥
श्रीहित शरन भये अरु अब हैं, फेरहु जे जन ह्वै हैं।
प्रेम भक्ति उर भाव-चाव सौं, वृन्दावन निधि पै हैं॥११॥
रसिक-मंडली में या तन कौं, नीकैं ढ़ंग लगावौ।
दम्पति-जस गावौ हरषावौ, हित सौं रीझि रिझावौ॥१२॥
देवनि कौं दुर्लभ नर देही, सो तैं सहजहिं पाई।
मन भाई निधि पाई सो क्यौं, जानबूझि बिसराई॥१३॥
एक अहंता ममता ये हैं, जग में अति दुखदाई।
ये जब श्रीजू की ओर लगैं तब, होत परम सुखदाई॥१४॥
मात-तात-सुत-दार देह में, मति अरुझै मति मंदा।
श्रीहित किशोर कौ ह्वै चकोर तू, लखि 'वृन्दावन चंदा'॥१५॥

फलस्तुति

[१९५]

अब कर दो कृपा की कोर, हित प्रभु! या अलि पै।
निशि-दिन तेरौ ही गुन गाऊँ, रटना लगाऊँ निशि भोर।हित०॥
भाँति-भाँति के भोग लगाऊँ, व्यंजन बनाऊँ घृत-बोर।हित०॥
भाँति-भाँति श्रृंगार बनाऊँ, मुकट बनाऊँ कलियाँ तोर।हित०॥
घृत-कपूर सौं आरति वारूँ, नजर उतारूँ तृण तोर।हित०॥

निर्त करत तेरौ हित जस गाऊँ, ना काहू कौ जोर।।हित॰।।
शशिमुखि अलि अब वेगि कृपा करौ,
कब होय जीवन कौ भोर।।हित॰।।

[१९६]

जय जय श्रीहरिवंश कहौ मिलिकैं।
सुन्दर व्याससुवन जन बल्लभ, करि दरसन पाँयन चलिकैं।।
प्रेम-पियालौ परगट कीयौ, पियौ साधु सब हिलमिलिकैं।
चढ़ी खुमारी महा मधुर रस, युगल रूप नैंननि झलकैं।।
मेटी आन कानि व्रत-संयम, एक भरोसे राधावर कैं।
अगनित जग में रंक जिवाये, श्रीराधा नामामृत फलिकैं।।
शरनाये अपनाये निज करि, कृष्णदास हित बलि-बलि कैं।।

[१९७]

जै जै राधावल्लभलाल, जै जै व्यासकुँवर वर लाल।
अधम-उधारन दीन के बन्धु, करुणा सिन्धु कृपाल।।
मोर मुकट मकराकृत कुण्डल, मुरली अधर रसाल।
नासा-मुक्ता लसत अनूपम, बैंदी झलकैं भाल।।
अलक झलक छबि वदन-कमल पर, लोचन लोल विशाल।
हँसन दसन दुति दामिनि दमकैं, बाजूबंद रसाल।।
घूमघुमारौ बागौ सोहै, उर बैजंती माल।
कटि-किंकिनि पग-नूपुर बाजैं, गज गति चाल मराल।।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, मोहि लईं ब्रजबाल।
जैश्रीकमलनयन हित रूप उजागर, शरणागत-प्रतिपाल।।
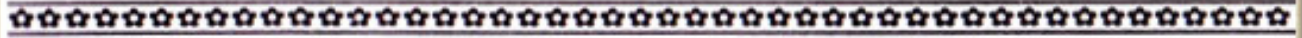
[१९८]

श्रीहरिवंश सार श्रुति वरन्यौ, राधा-हरि-जस गावौ रे।
जीवन थोरौ थिर कछु नाहीं, काहे जनम गमावौ रे॥
यह रविजा तट यह वृन्दावन, यह सत्संग न पावौ रे।
यह नर देह सजन प्रभु दीन्ही, ताहि न विषै हरावौ रे॥
यह कौतिक विलास रस लीला, गुरु दत मनहिं लगावौ रे।
यह अद्‌भुत औसर बसि कुंजनि, दम्पति कौं दुलरावौ रे॥
यह रसना गौरांग-श्याम-गुन, चरितनि में सरसावौ रे।
वृन्दावन हित रूप मिथुन कौं, नव-नव लाड़ लड़ावौ रे॥

[१९९]

पर की घट उत्कर्ष निज, प्रभु सौं सह्यौ न जात।
अपने पति हरिवंश की, किहि विधि कहियैं बात॥
किहिं विधि कहियैं बात, मौन ही ह्वै कैं रहिये।
निन्दक निन्दा करैं, मारि मन सोऊ सहिये॥
निन्दक निंदा करैं, उलटि नहिं दीजै उत्तर।
पति कौ रुख पहिचान, उबरिये पाँयन पर-पर॥

[२००]

हित धर्म को तो समझो, हित मर्मी हो जो तुम।
हृदय-बेधी न बनो तुम, मर्म भेदी हो जो तुम॥
हित-धर्म की ध्वजा-पताका, यौं न फहराओ तुम।
चोट खाये हुए को, आहत न पहुँचाओ तुम॥
दूसरे की आह में, सुख अपना ढूँढते हो।
काँटे की बात करते, आश फूल की करते हो॥
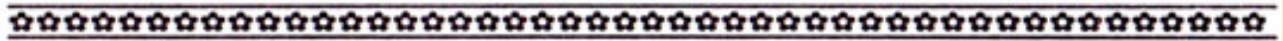
इन्सान बनो पहले, हित धर्म ना डुबाओ।
हित मर्म को तो समझो, हित धर्मी जो कहलाओ॥
शूरवीर ना बनो तुम, मरे को यौं मारकर।
हित धर्मी ना बनो, हित धर्म को उजाड़कर॥
'हित-धर्म' इस शब्द की, गरिमा को जरा समझो।
हित धर्मी जो कहाओ, हित मर्म को जरा समझो॥
हित जू के हैं जे भजनी, मत्सर न करो उनसे।
इष्ट है उन्हीं मैं बैठा, जरा द्वार खोलो मन के॥
जुल्म और कहर की, वर्षा न करो तुम।
हित धर्म को तो समझो, हित मर्मी हो जो तुम॥
जुल्म कितना भी करो उन पर, वख्त बरबाद जायेगा।
दीवानगी न उनसे, कोई छीन पायेगा॥
चलते हैं हित के पथ पर, रण-बाँकुरे हैं वे।
मरकर भी जिन्दा रहते, हृदयों में सबके वे॥

नित्य निकुंज में विवाहोत्सव

[२०१]

खेलत रास दुलहिनी दूलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक,
निरखि-निरखि नैंननि किन फूलहु॥
अति कल मधुर महा मोंहन धुनि,
उपजत हंस-सुता कैं कूलहु।
थेई-थेई वचन मिथुन मुख निसरत,
सुनि-सुनि देह दशा किनि भूलहु॥
मृदु पद-न्यास उठति कुमकुम रज,
अद्भुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहुँ स्याम स्यामा दसनांचल,
कच-कुच-हार छुवत भुज मूलहु॥
अति लावण्य रूप अभिनय गुन,
नाहिंन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस बरसत,
जै श्री हित हरिवंश प्रेम रस झूलहु॥

छन्द चारी- [२०२]

सखियनि कैं उर ऐसी आई। व्याह विनोद रचैं सुखदाई।
यहै बात सबकैं मन भाई। आनँद मोद बढ़्यौ अधिकाई॥
बढ़्यौ आनँद मोद सबकैं, महा प्रेम सुरँग रँगीं।
और कछु न सुहाइ तिनकौं, जुगल-सेवा-सुख-पगीं॥

निशि-द्यौस जानत नाहिं सजनी, एक रस भींजी रहैं।
गोप-गोपिनु आदि दुर्लभ, तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं।।१।।
यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलह लालबिहारी।
रँगभीने दोउ प्राननि प्यारे। नव-सत अंगनि-अंग सिंगारे।।
नवसत सिंगारे अंग-अंगनि, झलक तन की अति बढ़ी।
मौर-मौरी सीस सोहैं, मैंन-पानिप मुख चढ़ी।।
जलज-सुमन सु सेहरे रचि, रतन-हीरे जगमगैं।
देखि अद्‌भुत रूप मनमथ, कोटि रति पाँयन लगैं।।२।।
शोभा मंडप कुंजनि द्वारैं। हित की बाँधी वन्दनवारैं।
कुमकुम सौं लै अजिर लिपायौ। अद्‌भुत मोतिनु चौक पुरायौ।।
पुराइ अद्‌भुत चौक मोतिनु, चित्र रचना बहु करी।
आइ दोउ ठाढ़े भये तहाँ, सबनि की गति मति हरी।।
सुरंग मेंहदी रंग राचे, चरन-कर अति राजहीं।
विविध रागिनि किंकिनी अरु, मधुर नूपुर बाजहीं।।३।।
वेदी-सेज सुदेस सुहाई। मन-दृग-अंचल ग्रन्थि जुराई।
रीति भाँति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई।।
पूजि देवी नेह की दोउ, रति-विनोद बिहारहीं।
तिहि समैं सखि ललितादि हित सौं, हेरि प्राननि वारहीं।।
एक वैस सुभाव एकै, सहज जोरी सोहनी।
एक डोरी प्रेम की 'ध्रुव', बँधे मोहन-मोहनी।।४।।

[२०३]

अरिल्ल छन्द-

श्रीवृन्दावन धाम रसिक मन मोहहीं।
दूलह-दुलहिनि-व्याह सहज तहाँ सोहहीं।।

नित्य सहाने पट अरु भूषन साजहीं।
नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं॥
शोभा कौ सिर मौर चन्द्रिका मोर की।
वरनी न जाइ कछू छबि नवल किशोर की॥
सुभग माँग रँग रेख मनौं अनुराग की।
झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की॥
मणिनु खचित नव कुंज रही जगमग जहाँ।
छबि कौ बन्यौ वितान सोई मंडप तहाँ॥
वेदी-सेज सुदेश रची अति बानिकैं।
भाँति-भाँति के फूल सुरँग बहु आनिकैं॥
गावत मोर-मराल सुहाये गीत री।
सहचरि भरीं आनन्द करत रसरीति री॥
अलबेले सुकुमार फिरत तिहि ठाँव री।
दृग-अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी॥
कँगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटहीं।
पोयौ डोरी रूप सहज सो न टूटहीं॥
रचि रहे कोमल कर अरु चरन सुरंग री।
सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंग री॥
नूपुर कंकन किंकिनि बाजे बाजहीं।
निर्त्तत कोटि अनंग-नारि सब लाजहीं॥
बाढ़्यौ है मन माँहिं अधिक आनन्द री।
फूले फिरत किशोर वृन्दावन चन्द री॥
सखियन किये बहु चार अनेक विनोद री।
दूधाभाती हेत बढ़्यौ मन मोद री॥
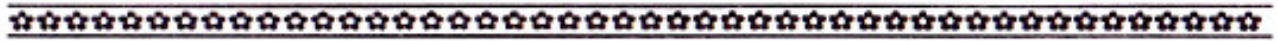
ललित लाल की बात जबहि सखियन कही।
लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही॥
नमित ग्रीव छबि-सींव कुँवरि नहिं बोलहीं।
बुधि बल करत उपाय घूँघट पट खोलहीं॥
कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी।
हँसत सखी सुख हेरि सहज शोभा घनी॥
वाम-चरन सौं सीस लाल कौ लावहीं।
पानी वारि कुँवरि पर पियहिं पिवावहीं॥
मेलि सुगन्ध उगार सो वीरी खवावहीं।
समुझि कुँवरि मुसिकाइ अधिक सुख पावहीं॥
और हास-परिहास रहसि रस रँग रह्यौ।
नित्यविहार-विनोद यथामति कछु कह्यौ॥
अंचल ओटि असीस सखी सब दैंहिं री।
पल-पल बढ़हु सुहाग नैंन सुख लैंहिं री॥
जैसैं नवल विलास नवल-नवला करैं।
मन-मन की रुचि जानि नेह-विधि अनुसरैं॥
बैठी हैं निजु कुंज कुँवरि मन मोहनी।
झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी॥
चाहि चाहि सो रूप रसिक सिरमौर री।
भरि आये दोउ नैंन भई गति और री॥
अति आनँद कौ मोद न उरहिं समात री।
रीझि-रीझि रस भींजि आपु बलि जात री॥
अरुझे मन अरु नैंन बढ़्यौ अनुराग री।
एक प्रान द्वै देह नागर अरु नागरी॥
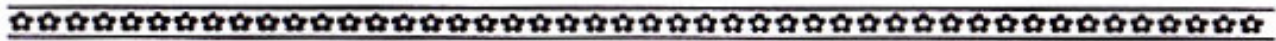
यौं राजत दोउ प्रीतम हँसि मुसिकात री।
निरखि परस्पर रूप न कबहुँ अघात री॥
तिनहीं के सुख रंग सखी दिन रँगमगीं।
और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं॥
उभय रूप रस सिन्धु मगन जहाँ सब भये।
दुर्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नये॥
जैश्रीहितध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावहीं।
सर्वोपरि सोई होइ प्रेम रस पावहीं॥

असीस

[२०४]

लाड़ी जू थारौ, अविचल रहौ जी सुहाग। हो हो हो॥ लाड़ी०॥
अलकलड़े रिझवार छैल सौं, नित नव बढ़ौ अनुराग॥
यौं नित बिहरौ ललितादिक सँग, वृन्दावन निजु बाग॥
जय श्री रूप अली हित जुगल-नेह लखि, मानत निजु बड़भाग॥

[२०५]

प्यारी कर कंकन बँध्यौ, भलैं हो लाल तुम खोल।
पानि परसि दुलही के दुलहु, पियरे भये कपोल॥
स्वेद सिथिल अति हरष हियैं में, मेटी दृग चंचलताई लोल।
श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी,
निरखि नागरी, आपुही बिकाने बिनुमोल॥

[२०६]

दूलह लाल दुलहिनी राधा।
और नाम कवि वृथा ही धरत हैं, कहाँ यह छबि कहाँ प्रीति अगाधा॥

रूप-रासि रस-रासि रसिक दोऊ, निरखत नैंन पूजत सब साधा।
दै बीरी 'जै कृष्ण सखी हित', निकट न बिछुरत हैं पल आधा॥

[२०७]

जै जै श्रीहित दुलहिनि-दूलहु।
मौरी-मौर सेहरौ कंकन, बँधे हितहि रस झुलहु॥
करि अधरामृत दूधाभाती, रंगमहल सुख फूलहु।
'हित स्वामिनीशरण' प्रीतिहि की, ग्रन्थि कबहुँ जिन खूलहु॥

[२०८]

श्रीवृन्दावन मेंहदी राचनी, सौरभ सरस सुगंधा।
महमहाइ मंजरी मौरी, भ्रमत भँवर मद अंधा॥
मेंहदी कौ रँग चुहचुहौ, रँगे दोऊ सुकुमार।
रंग रँगमगीं सहचरी, झुकि झूमि झरोखनि-द्वार॥
सुभग सुहागिनि रँग भरी, रँगभीनौ सुहागिनि-कंता।
मँहदी के रँग रँगि रहे, मधुप मालती मंता॥
रंग कुँवरि के महल में, रंग कुँवरि के हेज।
रंग कुँवरि की बात में, रंग कुँवरि की सेज॥
रँग माती सब वन विभौ, उभै केलि रँगरासी।
जै श्री दामोदर हित कृपा तें, निरखै 'मोहनदासी'॥

[२०९]

व्याह सुख विलसि व्यारू कीन।
अँचवन करि आरोगी वीरी, आरति वारि सखीन॥

उमहि चलनि चित चौंप चाव चहि, तत्सुख सखिनु प्रवीन।
तलप निकट मेवा-फल बहु विधि, साजि प्रथम धरि दीन॥
अँतर सुगंधित पान डबा भरि, राखे भाँति नवीन।
मंगल रैंन सुहाग सु गावत, दम्पति-सुख उर भीन॥
चितवनि-मुसिकनि सहज बनी पुनि, बतियनि रस लवलीन।
बढ्यौ आजु विवि प्रेम सुरस जहँ, लाज भई वपु खीन॥
कोक-कलानि विलासनि में नित, निपुन न कोऊ हीन।
गौर-श्याम राँचे तन-मन गँसि, ज्यौं नीर अगाधहिं मीन॥
यह सुख लहि हित रूप कृपा बल, को पलटौ जु उरीन।
हित रूपा निज दासि राधिकाचरण बलैया लीन॥

[२१०]

बनी चित्रशाला। लसैं दीपमाला॥
बजैं द्वार बीना। बजावैं प्रवीना॥
घने फूल फूले। अली-वृन्द झूले॥
पढ़ैं कीर-सारौ। बढ़ै रंग भारौ॥
बने मोर-मोरी। बना संग गोरी॥
सखी रंग रागीं। सदा मोद पागीं॥
फबे सेहरा री। नये नेहरा री॥
रची पुष्प सज्जा। सची है सु लज्जा॥
यहै फूल सैनी। किधौं दुग्ध-फैनी॥
बनी जू विराजैं। बना संग राजैं॥
वधू रूप सींवाँ। किये नम्र ग्रीवाँ॥
अहा मोद माती। महा रंग राती॥
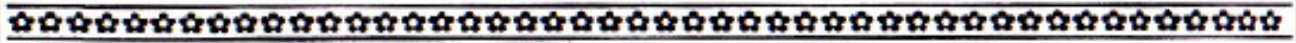
हियैं हार मोती। दिपैं अंग-जोती॥
गले पोत कारी। कुचैं पीनता री॥
लसै भाल टीकौ। रचौ है सु नीकौ॥
लटैं अल्प लोलैं। कपोलनि कलोलैं॥
दियौ है दिठौना। मनौं भृंग छौना॥
बनी भौंह ऐंठी। सदा ही अमैंठी॥
लसैं कर्णफूली। प्रभा है अतूली॥
हँसैं हैं रसाली। फबी होठ लाली॥
महा रूप जुक्ता। डुलैं नाक-मुक्ता॥
चलैं नैंन बाँके। रहैं हैं न ढाँके॥
बड़े हैं ढरारे। भरे नेह भारे॥
खुलैं फेर झंपैं। लखैं लाल कम्पैं॥
करैं चोट ऐसी। नहीं ओट तैसी॥
भरे भाय 'वृन्दा'। बने मोद कन्दा॥

❀ श्रीहित रसिक नामावली ❀

जै जै राधाबल्लभ श्रीहरिवंश।
जै जै श्रीसेवक रसिकन अवतंश॥
जै जै राधाबल्लभ श्रीहरिवंश।
जै जै श्रीवृन्दावन श्रीवनचन्द॥

❀ श्रीहित जू के निज कृपापात्र ❀

१. श्रीहित सेवकजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२. श्रीज्ञानूजी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३. श्रीछबीलेदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४. श्रीबीठलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५. श्रीमोहनदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६. श्रीनाहरमलजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
७. श्रीरंगाजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
८. श्रीमेधाजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९. श्रीगांगूजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१०. श्रीगोविन्दाजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
११. श्रीसेवाजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२. श्रीनन्दाजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३. श्रीखेमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४. श्रीसंतदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५. श्रीरुक्मिनिजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१६. श्रीकृष्णदासीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७. श्रीमनोहरीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१८. श्रीवनमालीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१९. श्रीकृष्णदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२०. श्रीगोपीनाथजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२१. श्रीमोहनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२२. श्रीसाहिबदेजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२३. श्रीराइबदेजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२४. श्रीस्वामीजू 'हरिदासजू' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२५. श्रीनरवाहनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२६. श्रीनवलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२७. श्रीव्यासदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२८. श्रीपरमानन्ददासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२९. श्रीप्रमदानन्दजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३०. श्रीपूरनदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१. श्रीप्रबोधानन्दजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२. श्रीगंगाबाई (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३३. श्रीयमुनाबाई (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३४. श्रीकर्मठीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३५. श्रीहरिवंशदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३६. श्रीहरिदास पंडित के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३७. श्रीहरीदास तुलाधार के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३८. श्रीअलिमोहनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३९. श्रीजनमोहनजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४०. श्रीखरगसैनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४१. श्रीबालकृष्णजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४२. श्रीमुरलीधरजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३. श्रीमनोहरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४. श्रीकिशोरजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४५. श्रीगोपालदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४६. श्रीनागरजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७. श्रीहरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४८. श्रीप्रियादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४९. श्रीरसिक ग्वाल के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५०. श्रीजैनी सरावगी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

❀ श्रीहित सम्प्रदायी अन्य रसिक ❀

[अ]

५१. श्रीअनन्तभट्टजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५२. श्रीअनन्यअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५३. श्रीअनन्यदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५४. श्रीअतिबल्लभदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५५. श्रीअलिभगवानजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६. श्रीअभयरामजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५७. श्रीअलबेलीशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८. श्रीअलबेलीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५९. श्रीअर्जुनहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६०. श्रीअलिहरिजनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६१. श्रीअमीरचन्द्र शास्त्री (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६२. श्रीअनन्यगोपालदासजू (झूँठास्वामी-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६३. श्रीअनुरागअलीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[आ]

६४. श्रीआनन्दीबाईजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[इ]

६५. श्रीइच्छासखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
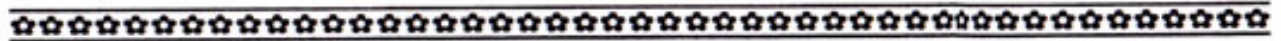
[उ]

६६. श्रीउत्तमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६७. श्रीउत्तम नेहजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
६८. श्रीउत्तमदास नागा (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ऊ]

६९. श्रीऊधमदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
७०. श्रीऊधौदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[क]

७१. श्रीकल्याणपुजारीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वनचन्द्र-शिष्य)
७२. श्रीकल्याणदास 'अलिकल्यान' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीअलिमोहन-शिष्य) (वाणीकार)
७३. श्रीकल्याणमलजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰जोरीलाल शिष्य)
७४. श्रीकल्याणीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
७५. श्रीकस्तूरीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
७६. श्रीकन्हरस्वामीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
७७. श्रीरानी कमलकुँवरिजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[का]

७८. श्रीकाशीरसिकजू 'काशीराम' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
७९. श्रीकान्हदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[कि]

८०. श्रीकिशोरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हित रूपलाल जू की प्रेरणा से बरसाने में मंडल-निर्माता)

८१. श्रीकिशोरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीझूँठास्वामी-शिष्य)
८२. श्रीकिशोरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(१७ वीं शती)
८३. श्रीकिशोरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(१९ वीं शती)
८४. श्रीकिशोरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(साहिबराम-सुत)
८५. श्रीकिशोरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कीर्तिलाल-शिष्य)
८६. श्रीकिशोरीसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
८७. श्रीकिशोरीशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
८८. श्रीकिशोरीशरण 'अलि' जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
छाप- 'किशोरी अलि' (वाणीकार)
८९. श्रीकिशोरीशरण 'सूरदास' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीपरमानन्ददास-शिष्य)
९०. श्रीकिंकर शिवप्रसादजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[की]

९१. नृप कीर्तिचन्द के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[कु]

९२. श्रीकुँवरिअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९३. श्रीकुन्दनदासजू महंत के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
९४. श्रीकुंजदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९५. श्रीकुंजदासजू (श्रीहरिदास-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९६. श्रीकुंजदासजू (गो॰रूपलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९७. श्रीकुंजदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
९८. श्रीकुंजबिहारी (मुखियाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[के]

९९. श्रीकेलिदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(१८ वीं शती)

१००. श्रीकेलिदासजू (१९ वीं शती) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१०१. श्रीकेवलरामजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
छाप- 'वृन्दावन जीवनि'

१०२. श्रीकेशवदेव ब्रजवासी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

१०३. श्रीस्वामी केशौरायजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[कृ]

१०४. श्रीकृष्णदासजू भावुक के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

१०५. श्रीकृष्णदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीहरिनाथ-सुवन एवं गो॰हरिप्रसाद-शिष्य)

१०६. श्रीकृष्णदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१०७. श्रीकृष्णप्रसादजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१०८. श्रीकृष्णअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१०९. श्रीकृष्णसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

११०. श्रीकृष्णगोपाल शर्मा के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१११. श्रीकृष्णदासजू 'रीवाँ वाले' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

११२. श्रीकृष्णदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(झूँटास्वामी-शिष्य)

११३. श्रीकृष्णाबाईजू 'कृष्णकुँवरि' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰किशोरीलाल-शिष्या)

११४. श्रीकृपाअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

११५. श्रीकृपारामजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

११६. श्रीस्वामी कृपारामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(स्वामी श्रीनन्दराम-शिष्य)

[खु]

११७. श्रीखुश्यालदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
११८. श्रीखुशवख्तरायजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नित्यवल्लभ-शिष्य)

[खे]

११९. श्रीखेमदासजू (श्रीचन्द्रसखी-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ग]

१२०. श्रीगरीबदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२१. श्रीगरीबदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीवृन्दावनशरण-शिष्य)

[गि]

१२२. श्रीगिरिधरहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२३. श्रीगिरिधरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२४. ठाकुर गिरिधारी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२५. श्रीगिरिधारीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[गु]

१२६. श्रीगुरुशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰श्रीगुलाबलाल-शिष्य)

[गो]

१२७. श्रीगोविन्दअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२८. श्रीगोविन्ददास तोमर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१२९. श्रीगोविन्दजीवनीशरण के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीपरमानन्ददास-शिष्य)
१३०. श्रीपंडित गोपीलालजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३१. श्रीगोपाल पंडित (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३२. श्रीगोपालदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१३३. श्रीगोपालप्रसाद शर्मा (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३४. श्रीगोपालदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)
१३५. श्रीगोपीनाथ पाठक (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३६. श्रीगोपीनाथ (कृपारामजी के साथ) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३७. श्रीगोपीदासजू (गो॰रूपलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३८. श्रीगोस्वामीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१३९. श्रीगोवर्धनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४०. श्रीगोवर्धननाथजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४१. श्रीगोवर्धनेशजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४२. श्रीगोवर्द्धनदासजू (बरसाने वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४३. श्रीगोरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४४. श्रीगोपालदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰चन्द्रलाल-शिष्य)
१४५. श्रीगोपालदासजू (भावनापरायण) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दयासिन्धु-शिष्य)

[गं]

१४६. श्रीगंगारामहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१४७. श्रीगंगादासजू 'हित प्रसाद' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोविन्दलाल-शिष्य) (वाणीकार)
१४८. श्रीगंगादासजू 'हित प्रसाद' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कन्हैयालाल-शिष्य) (वाणीकार)

[घ]

१४९. श्रीघनश्यामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[घा]

१५०. श्रीघासीरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(पतिराम-सुवन व गो॰हितरूप-शिष्य)
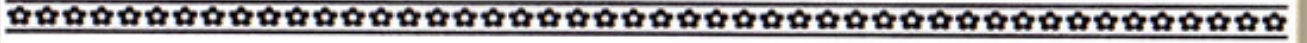
[च]

१५१. श्रीस्वामी चतुर्भुजदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५२. श्रीचतुर्भुजदास पाठक (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५३. श्रीचन्द्रसखीजू (वाणीकार) (गो॰उदयलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५४. श्रीचन्द्रसखीजू (वाणीकार) (स्वामी श्रीबालकृष्ण-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५५. श्रीहित चन्द्रलालजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५६. श्रीचतुरअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५७. श्रीचतुरसिंह गौड़ 'ललित शरण' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५८. श्रीचम्पाबाईजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१५९. श्रीचरणदास पुजारीजू (गो॰कमलनैंन-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[चि]

१६०. नृप चित्रसेन (नृप कीर्तिचंद-सुत) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१६१. श्रीचिंतामणि कायथजू (गो॰व्रजपति-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[चे]

१६२. श्रीचेतनदासजू 'चितवनि अलि' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ज]

१६३. श्रीजयमलजू 'राव' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१६४. श्रीजसवन्तजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१६५. श्रीजयकृष्णदासजू (वाणीकार) (गो॰कमलनैंन-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१६६. श्रीजयकृष्णदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कुंजलाल-शिष्य)
१६७. श्रीजयकृष्णअलिजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीललितलताअलि-शिष्य)
१६८. श्रीजयकृष्णदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)
१६९. श्रीजयकृष्ण पुजारीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७०. श्रीजयदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७१. श्रीजयदेव स्वामीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७२. श्रीजगदीशनारायणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
१७३. श्रीजगन्नाथदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७४. श्रीजमुनादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰चतुरशिरोमणिलाल-शिष्य)
१७५. श्रीजमुनाबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(शोभाराम-पत्नी एवं गो॰ रासदास-शिष्य)
१७६. श्रीजमुनाबाई (काशीराम-पुत्री) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७७. श्रीजनश्यामदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१७८. श्रीजतनी स्वामीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)

[जा]

१७९. श्रीजादौरसिकजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[जी]

१८०. श्रीजीवनधनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
१८१. श्रीजीवनदास 'संगीतज्ञ' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰बनवारीलाल-शिष्य)
१८२. श्रीजीवा भाई खत्रीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰प्रेमपति-शिष्य)
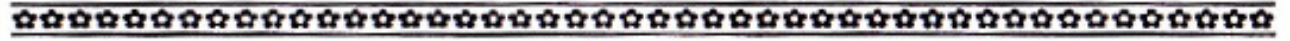
[जु]

१८३. श्रीजुगलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कुंजलाल-शिष्य)

१८४. श्रीजुगलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰चतुरशिरोमणि-शिष्य)

१८५. श्रीजुगलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰इन्द्रपति-शिष्य)

१८६. श्रीजुगलदास तुलाधारजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰व्रजपति-शिष्य)

१८७. श्रीजुगलदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीलाड़िलीदास के सत्संगी)

१८८. श्रीजुगलदास पुजारीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीसेवासखी-शिष्य)

१८९. श्रीजुगलदास पुजारीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गुलाबलाल-शिष्य)

१९०. श्रीजुगलदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गिरधरलाल-शिष्य)

१९१. श्रीजुगलसखीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१९२. श्रीजुगलकिसोरजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१९३. श्रीजुगलकिसोर ताल्लुकेदार के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

१९४. श्रीजुगलसुन्दरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰विलासदास-शिष्य)

[जै]

१९५. श्रीजैतसीजू (गो॰कुंजलाल शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[जो]

१९६. श्रीजोरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कमलनैंन-शिष्य)

[झूँ]

१९७. श्रीझूँठा स्वामीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[तु]

१९८. श्रीतुलसीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सुखलाल-शिष्य)

१९९. श्रीतुलसीदासजू (समाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२००. श्रीतुलसीदास (जैजैभैया-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[त्रि]

२०१. श्रीत्रिलोक स्वामीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२०२. श्रीत्रिवेणीदासजू (मुकुन्दपुर वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[द]

२०३. श्रीदयासखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२०४. श्रीदयानिधिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२०५. श्रीदयारामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

२०६. श्रीदयारामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजुगलदास-शिष्य)

२०७. श्रीदयालदासजू (गो॰हितरूप-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दा]

२०८. श्रीदामोदर स्वामीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२०९. श्रीदामोदरदासजू (मुखिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२१०. श्रीदामोदरजू (गो॰हितरूप-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२११. श्रीदामोदरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीहरिदास-शिष्य)

२१२. महंत दामोदरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२१३. श्रीदामोदरबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्या)
२१४. श्रीदामोदरदासजू 'जपराधे बाबा' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२१५. श्रीदासानिदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[द्वा]

२१६. श्रीद्वारिकादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दी]

२१७. श्रीदीनदयालजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२१८. श्रीदीपाबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दु]

२१९. श्रीदुलहिनिदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दे]

२२०. श्रीदेवकीजू (गो॰हितरूप-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दौ]

२२१. श्रीदौलतरामजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[दं]

२२२. श्रीदंपतिअलिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२२३. श्रीदंपतिदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ध]

२२४. श्रीधरनीधरदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२२५. श्रीधर्मदासजू (समाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
२२६. श्रीधनराज राठौर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[धी]

२२७. श्रीधीरजदासजू 'हित धीरज' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
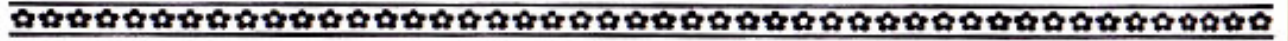
[ध्रु]

२२८. श्रीध्रुवअलिशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[न]

२२९. श्रीनरोत्तमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३०. श्रीनवलसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३१. श्रीनवलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

(श्रीजादौरसिक-शिष्य)

२३२. श्रीस्वामी नन्दरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३३. श्रीनवनीतरायजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

(श्रीहरिनाथ-सुवन एवं गो॰हरिप्रसाद-शिष्य)

२३४. श्रीनवेलीशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

(गो॰किशोरीलाल अधिकारी-शिष्य)

[ना]

२३५. श्रीनेहीनागरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३६. श्रीनाथभट्टजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३७. श्रीनारायणदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३८. श्रीनारायणदासजू (उत्कल वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२३९. श्रीनाथूरामजू (गो॰हितरूप-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२४०. श्रीनाइक गुपालजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

(गो॰दामोदरवर-शिष्य)

२४१. श्रीनायकरसिकमुकुन्दजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[नि]

२४२. श्रीनित्यानंददासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२४३. श्रीनिकुंजअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२४४. श्रीनिकुंजदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२४५. श्रीनिर्मलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[नैं]

२४६. श्रीनैंनसुखजू (गो॰हितरूप-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[प]

२४७. श्रीपद्मनाभिहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२४८. श्रीपरमानन्ददासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वनचन्द्र-शिष्य)

२४९. श्रीपरमानंददासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गुलाबलाल-शिष्य)

२५०. श्रीपरमानंदजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

२५१. श्रीपरमानन्ददासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(सूरदासजी के गुरु)

२५२. श्रीपतिरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[पा]

२५३. श्रीपानाबाई (हरिलालव्यास-पुत्री) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[पी]

२५४. श्रीपीतांबर स्वामीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२५५. श्रीपीतांबरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

२५६. श्रीपीतांबरदासजू (जलभरिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[पु]

२५७. श्रीपुहुकरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[प्र]

२५८. श्रीप्रहलाददासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[प्रा]

२५९. श्रीप्राणनाथजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[प्रि]

२६०. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल-शिष्य)

२६१. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रसिकानन्द-शिष्य)

२६२. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितलाल-शिष्य)

२६३. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰चन्द्रलाल-शिष्य)

२६४. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सनेहीलाल-शिष्य)

२६५. श्रीप्रियादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गिरिधरलाल-शिष्य)

२६६. श्रीप्रियादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰जुगलकिशोर-शिष्य)

२६७. श्रीप्रियादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नन्दकिशोर-शिष्य)

२६८. श्रीप्रियादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰इन्द्रलाल-शिष्य)

२६९. श्रीप्रियादास पखावजी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२७०. श्रीप्रियादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(निकुंजदास के सत्संगी)

२७१. श्रीप्रियादासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्द्धनलाल-शिष्या)

२७२. श्रीप्रियाअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२७३. श्रीप्रियादत्तजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
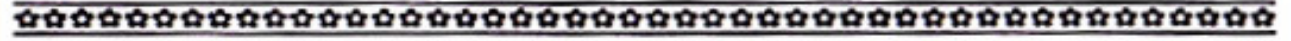
[प्री]

२७४. श्रीप्रीतमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[प्रे]

२७५. श्रीप्रेमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल-शिष्य)

२७६. श्रीप्रेमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नवललाल-शिष्य)

२७७. श्रीप्रेमदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गिरिधरलाल-शिष्य)

२७८. श्रीप्रेमदासजू (गो॰चुन्नीलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२७९. श्रीप्रेमाकविजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२८०. श्रीप्रेमसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२८१. श्रीप्रेमदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२८२. श्रीप्रेमकुँवरिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२८३. श्रीप्रेमिनिबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्या)

२८४. श्रीप्रेमपथपथिकजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[फ]

२८५. श्रीफतेहसिंहजू 'हितराम' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

२८६. श्रीफलतारामजू (गो॰सुखलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[फू]

२८७. श्रीफूलसखीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीभोरीसखी के सत्संगी)

२८८. श्रीफूलवतीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ब]

२८९. श्रीबलीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२९०. श्रीबल्लभसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कमलनैंन-शिष्य)

२९१.श्रीबल्लभदासजू 'हितवल्लभ' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (गो॰रूपलाल-शिष्य)

२९२. श्रीबल्लभदासजू 'बल्लभसखी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (श्रीरसिकसखी-शिष्य)

२९३. श्रीबल्लभदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰किशोरीलाल-शिष्य)

२९४. श्रीबल्लभरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰प्रियालाल-शिष्य)

२९५. श्रीबल्देवकविजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२९६. श्रीबड़ेरायजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)

[बा]

२९७. श्रीबालकदासजू (जलभरिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

२९८. श्रीबालकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीखेमदास-शिष्य)

२९९. स्वामी बालकृष्णजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (गो॰हरिलाल-शिष्य)

३००. श्रीबालकृष्णजू समाजी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

३०१. श्रीबालकृष्ण-तुलारामजू 'बावरी सखी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[बि]

३०२. श्रीबिहारिनदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गुलाबलाल-शिष्य)

३०३. श्रीबिहारीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰श्रीवल्लभ-शिष्य)

३०४. श्रीबिठ्ठलदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नागरवर-शिष्य)

[बु]

३०५. श्रीबुलाखीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[बै]

३०६. श्रीबैजनाथजू 'नाथअली' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[ब्र]

३०७. श्रीब्रजनागरिहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३०८. श्रीब्रजदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰प्रीतमलाल-शिष्य)
३०९. श्रीब्रजदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीहरिनाथ-सुवन एवं गो॰हरिप्रसाद-शिष्य)
३१०. श्रीब्रजदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३११. श्रीब्रजदास बरसानिया के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हरिलाल-शिष्य)
३१२. श्रीब्रजदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१३. श्रीब्रजनाथ शास्त्रीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१४. श्रीब्रजगोपालजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१५. श्रीब्रजजीवनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१६. श्रीब्रजबिहारीजू (मुखिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३१७. श्रीब्रजबल्लभजू (मुखिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[भ]

३१८. श्रीभगवानदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीरसिकवल्लभ-शिष्य)
३१९. श्रीभगवानदास समाजी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२०. श्रीभगवानदास सोनी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

३२१. श्रीभगवानबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰श्रीहितरूप-शिष्या)
३२२. श्रीभजनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२३. श्रीभक्तदास मिश्रजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२४. श्रीभजनसहायकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[भा]

३२५. श्रीभागवतावतंशजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२६. श्रीभागमतीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२७. श्रीभावन भट्टजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३२८. श्रीभानसखी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰श्रीहितरूप-शिष्य)
३२९. श्रीभागीरथदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[भु]

३३०. श्रीभुवनरसिकजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[भो]

३३१. श्रीभोलानाथजू 'भोरी सखी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰व्रजपति-शिष्य) (वाणीकार)
३३२. श्रीभोलानाथजू 'हित भोरी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्धनलाल-शिष्य) (वाणीकार)

[भृं]

३३३. श्रीभृंग रसिक के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजादौरसिक-शिष्य)

[म]

३३४. श्रीमधुरानन्दजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३३५. श्रीमथुराहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३३६. श्रीमदनमोहनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३३७. श्रीमनोहरदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

३३८ श्रीमनोहरअली जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्धनलाल-शिष्य)
३३९. श्रीमनसाराम जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰किशोरीलाल-शिष्य)
३४०. श्रीमयाराम जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३४१. श्रीमनीराम जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰ हितरूप-शिष्य)
३४२. श्रीमधुसूदन जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हरिलाल-शिष्य)
३४३. श्रीमयाराम महाजन के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)
३४४. श्रीमहाराज छत्रीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३४५. श्रीमहादेवदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल अधिकारी-शिष्य)
३४६. श्रीमनुआलाल पुजारी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[मा]

३४७. श्रीमानिकचन्दजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(बाबई वाले)
३४८. श्रीमाणिकचंदजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(उत्तमचंद के गुरु भ्राता)
३४९. श्रीमाधौरसिकजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३५०. श्रीमाधौदासजू 'माधौ मुकुन्द' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
३५१. श्रीमाधौ मसालची के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰प्रियालाल-शिष्य)
३५२. श्रीमाधुरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)
३५३. श्रीमाधुरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰मन्नूलाल-शिष्य)

३५४. श्रीमाधुरीदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰ बनवारीलाल-शिष्य)
३५५. श्रीमाधुरीशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३५६. श्रीमाखनचोरदासजू 'चोरअली' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[मी]

३५७. श्रीमीठा भाई 'मिष्ट सखी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[मु]

३५८. श्रीमुरलीसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३५९. श्रीमुरलीधरजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)
३६०. लाला मुरलीधरजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰विलासदास-शिष्य)

[मू]

३६१. श्रीमूलचन्द्र मेद के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[मे]

३६२. श्रीमेघराजजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सुखलाल-शिष्य)

[मो]

३६३. श्रीमोहनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)
३६४. श्रीमोहनमत्तजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३६५. श्रीहितमोहनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३६६. श्रीमोहनदास पुजारीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३६७. श्रीमोहनजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३६८. श्रीमोती महाजन के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीचरणदास-सुत)

३६९. श्रीमोहिनीशरण के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीपरमानन्ददास-शिष्य)

[मौ]

३७०. श्रीमौनी बाबा के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(हितध्रुवकुटी-निवासी)

[य]

३७१. श्रीयज्ञेश्वर द्विज (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३७२. श्रीयमुनादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दयासिन्धु-शिष्य)

[र]

३७३. श्रीरसिकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (गो॰धीरीधर-शिष्य)
३७४. श्रीरसिकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(भावनापरायण)
३७५. श्रीरसिकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(भोरीसखी-शिष्य)
३७६. श्रीरसिकदासजू वैरागी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(लाड़िलीदास के सत्संगी)
३७७. श्रीरसिकदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल अधिकारी-शिष्य)
३७८. श्रीरसिकदास 'रसिकसखी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीचंद्रसखी-शिष्य) (वाणीकार)
३७९. श्रीरसिकगोपालजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सुखलाल-शिष्य)
३८०. श्रीरसिकरायजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
३८१. श्रीरसिकमुकुन्दजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल-शिष्य)
३८२. श्रीरसिकवल्लभजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीसेवासखी-शिष्य)

३८३. श्रीरतनदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्धनलाल-शिष्य)

३८४. श्रीरतनबाई (श्रीमीठाजी-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

३८५. श्रीरत्नावतीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीनरवाहन-सुत सुलखानजी की पुत्री)

३८६. श्रीरतिरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰किशोरीलाल-शिष्य)

३८७. श्रीरसनभाईजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

३८८. श्रीरसरंगीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

३८९. श्रीरघुनाथदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰व्रजलाल-शिष्य)

३९०. श्रीरघुवरदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[रा]

३९१. श्रीरामदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कृष्णदास-शिष्य)

३९२. श्रीरामजीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

३९३. श्रीरामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीश्यामदास-शिष्य)

३९४. श्रीरामदासजू माड़िया के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰जुगलकिशोर-शिष्य)

३९५. श्रीरामदासजू कालिया के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰जुगलकिशोर-शिष्य)

३९६. श्रीरामदासजू (प्रथम) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नन्दकिशोर-शिष्य)

३९७. श्रीरामदासजू (द्वितीय) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नन्दकिशोर-शिष्य)

३९८. स्वामी रामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कुंजलाल-शिष्य)

३९९. श्रीस्वामी रामदासजू 'जन्त्री स्वामी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)
४००. श्रीरामलाल पंडित के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४०१. श्रीरामरतनजू राठौर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(डोल स्थल के निर्माता)
४०२. श्रीरामकृष्ण मेहता के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(बड़ौदा वासी)
४०३. श्रीरामकृष्णजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)
४०४. श्रीरामकृष्ण चौबे (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४०५. श्रीरामकृष्णजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीसहजराम-शिष्य)
४०६. श्रीरामकृष्णजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीरसिकवल्लभ-शिष्य)
४०७. श्रीरामनारायणदास 'जैजैभैया' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४०८. श्रीराधिकाचरणदासजू 'ढोंगी बाबा' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (गो॰रूपलाल अधिकारी-शिष्य)
४०९. श्रीराधिकादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सुखलाल-शिष्य)
४१०. श्रीराधिकादासजू 'समाजी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजादौरसिक-शिष्य)
४११. श्रीराधिकादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰बद्रीलाल-शिष्य)
४१२. श्रीराधादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीगोपालदास-शिष्य)
४१३. श्रीराधापदपद्मदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीगंगादास-शिष्य)
४१४. श्रीराधाचरणदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰जुगलबल्लभ-शिष्य)

४१५. श्रीराधिकावल्लभशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
(छाप- 'सुखदेव', 'महादेव' और 'हड़िया बाबा')
४१६. श्रीराधावल्लभशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४१७. श्रीराधावल्लभशरणजू 'रामनाथ' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४१८. श्रीराधिकाशरणजू 'संतदास' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (गो०गोवर्धनलाल-शिष्य)
४१९. श्रीराधिकाशरणजू 'सन्तदास' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो०राधालाल-शिष्य) (वाणीकार)
४२०. श्रीराधादासीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४२१. श्रीरायभक्तजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४२२. श्रीराजकुँवरिबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४२३. श्रीराजराजेशजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४२४. श्रीरासरँगीलीदासीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४२५. श्रीराधाबालकृष्ण हित के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४२६. श्रीराधामोहनदासजू 'बलभद्र' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४२७. श्रीराधामोहनमालीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४२८. श्रीराघौ स्वामी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीझूँठास्वामी-शिष्य)

[रु]

४२९. श्रीरुक्मिणीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो० गोवर्धनलाल-शिष्या)
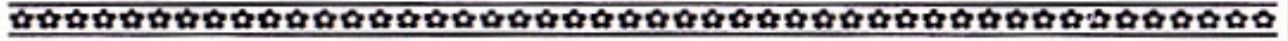
[रू]

४३०. श्रीरूपअलीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३१. श्रीरूपदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३२. श्रीरूपराम कटारे के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(जिनकी नव निर्मित हवेली में श्रीराधाबल्लभलालजू एक वर्ष तक विराजे)

[रं]

४३३. श्रीरंगीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ल]

४३४. श्रीसंतललितसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३५. श्रीलक्ष्मीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३६. श्रीललिताशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३७. श्रीललितमंजरीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३८. श्रीलहरीजू (गो॰बद्रीलाल-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४३९. श्रीलक्ष्मणभगतजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४०. श्रीलड़ैतीदासजू 'तालधारी' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४१. श्रीलल्लूभाई गुजराती के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वर्तमान श्रीराधाबल्लभ मन्दिर के निर्माता)
४४२. श्रीलल्लू पुजारी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४३. श्रीलल्लूजी नागार्च 'राधाचरण' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४४. श्रीललितकिशोरीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४५. श्रीललिताशरण (वाणीकार) (गो॰जुगलबल्लभ-शिष्य) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४६. श्रीलक्ष्मीनारायणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४४७. श्रीलक्ष्मावतीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)

[ला]

४४८. श्रीलालस्वामीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४४९. श्रीलालदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीचन्द्रसखी-शिष्य)
४५०. श्रीलालभक्त (वर्द्धमानपुर वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४५१. श्रीलालसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४५२. श्रीलाड़िलीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल-शिष्य) (वाणीकार)
४५३. श्रीलाड़िलीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰घनश्यामलाल-शिष्य)
४५४. श्रीलाड़िलीदासजू (खीरस्तवकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४५५. श्रीलाड़िलीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(पूर्व नाम-गुमानराय, गो॰मुकुन्दलाल-शिष्य)
४५६. श्रीलाड़िलीदास 'निर्मोही' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४५७. श्रीलाड़िलीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीबालकदास-शिष्य)
४५८. श्रीलाड़िलीदासीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४५९. श्रीलाड़ाबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्या)
४६०. श्रीलाखनदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीपुरुषोत्तमदास-शिष्य)

[लो]

४६१. श्रीलोकनाथजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[व]

४६२. श्रीवखतकुँवरि 'प्रियासखीजू' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार) (दतिया की रानी)

४६३. श्रीवनमालीदास 'फूलसेवी' के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[वा]

४६४. श्री पं०वासुदेव खेमरिया के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[वि]

४६५. श्रीविष्णुसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४६६. श्रीविपिनदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४६७. श्रीविमलादासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४६८. श्रीविष्णीबाईजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४६९. श्रीविजय सुकवि (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[वी]

४७०. श्रीवीरभाईजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[वै]

४७१. श्रीवैष्णवदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७२. श्रीवैंणी कवि जू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[वृ]

४७३. श्रीवृन्दावनदासजू (चाचाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४७४. श्रीवृन्दावनदासजू (पटना वाले) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
४७५. श्रीवृन्दावन मिश्रजू (कोसी वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७६. वृन्दावनदास लाला के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७७. श्रीवृन्दावनदासजू (जलभरिया) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७८. श्रीवृन्दाअलीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
४७९. श्रीवृन्दावनशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[वं]

४८०. श्रीवंशीधरजू (वरसानियाँ) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो०कमलनैंन-शिष्य) (वाणीकार)
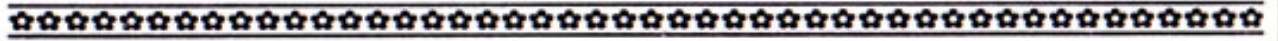
४८१. श्रीवंशीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वृन्दावनबल्लभ-शिष्य)

[श]

४८२. श्रीश्यामशाहजू तूँवर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

४८३. श्रीश्यामदासजू ढाँढ़िनि के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

४८४. श्रीश्यामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰घनश्यामलाल-तनय-शिष्य)

४८५. श्रीश्यामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीचन्द्रसखी-शिष्य)

४८६. श्रीश्यामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰आनन्दलाल-शिष्य)

४८७. श्रीश्यामदास ढूँढारिया के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४८८. श्रीश्यामदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीराधिकाचरणदास 'ढोंगी बाबा'-शिष्य)

४८९. श्रीश्यामदासजू (श्रीबीठलदास-सुत) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४९०. श्रीश्यामदासजू (समाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४९१. श्रीश्यामदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजुगलदास-शिष्य)

४९२. श्रीश्यामसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

४९३. श्रीश्यामादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीवैष्णवदास-शिष्य)

[श]

४९४. श्रीशशिमुखीअलिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[शी]

४९५. श्रीशीलसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[शो]

४९६. श्रीशोभारामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीहरिनाथ-सुवन एवं गो॰हरिप्रसाद-शिष्य)

[शं]

४९७. श्रीशंकरदत्तजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[स्ट]

४९८. श्रीस्वामिनीशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[स]

४९९. श्रीसदाशिवलालजू 'सुन्दरदास' (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५००. श्रीसहचरिसुखजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कमलनैंन-शिष्य)

५०१. श्रीसर्वसुखदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीरतनदास-शिष्य)

५०२. श्रीसर्वसुखरायजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीगुलाबलाल-शिष्य)

५०३. श्रीसदारामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

५०४. श्रीसहजरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीसेवासखी-शिष्य)

५०५. श्रीसहजीबाई के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰कीर्तिलाल-शिष्या)

५०६. श्रीसखीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰नवनीतलाल-शिष्य)

५०७. श्रीसनेहीजी (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५०८. श्रीसज्ञानसखीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५०९. श्रीसहितसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५१०. श्रीसाहिबरायजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰सुखलाल-शिष्य)

[सा]

५११. श्रीसाहिबराम व्यास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीप्रेमदास-शिष्य)
५१२. श्रीसाहिबसखीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰प्रियालाल-शिष्य)
५१३. श्रीसाधुशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[सिं]

५१४. श्रीसिंगारसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[सु]

५१५. श्रीसुजनसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५१६. श्रीसुखदसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५१७. श्रीसुखसखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीकृष्णदास-शिष्य)
५१८. श्रीसुखसजनीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५१९. श्रीसुघररायजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५२०. श्रीसुन्दरदासजू कायथ के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(लाल प्रस्तर वाले श्रीराधाबल्लभ मंदिर के निर्माता)
५२१. श्रीसुन्दरदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीभोलानाथ-शिष्य)
५२२. श्रीसुन्दरदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हुलासलाल-शिष्य)
५२३. श्रीसुन्दरदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हरिलाल-शिष्य)
५२४. श्रीसुन्दरीशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
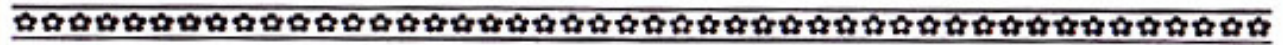
५२५. श्रीसुकुमारीशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीस्वामिनीशरण-शिष्य)
५२६. श्रीसुखदान कवि जू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)
५२७. श्रीसुखानन्दजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)
५२८. श्रीसुलखान रसिक के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीनरवाहन-सुत)
५२९. श्रीसुन्दरबल्लभजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हितरूप-शिष्य)

[सू]

५३०. श्रीसूरध्वज सूर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[से]

५३१. श्रीसेवासखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५३२. श्रीसेवादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दयानिधि-शिष्य)
५३३. श्रीसेवादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजुगलदास-शिष्य)
५३४. श्रीसेवादासजू (चैनपुर वासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(दासानिदास के बन्धु)
५३५. श्रीसेवादासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰इन्द्रलाल-शिष्य)
५३६. श्रीसेवकहितजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(सेवकजी से पृथक)
५३७. श्रीसेवकरामजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हलधर-शिष्य)
५३८. श्रीसेवकशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्धनलाल-शिष्य)
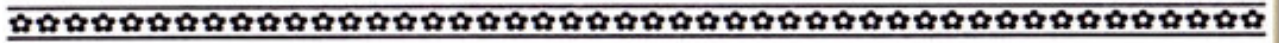
[सो]

५३९. श्रीसोहनसिंहजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५४०. श्रीसोढास्वामीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वनचन्द्र-शिष्य)

५४१. श्रीसोमनाथ भट्टजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वनचन्द्र-शिष्य)

५४२. श्रीसोनीराम छत्रीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५४३. श्रीरानीसोनकुँवरिजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(वाणीकार)

[सं]

५४४. श्रीसंतदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰दामोदरवर-शिष्य)

[श्री]

५४५. श्री श्रीपतिशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ह]

५४६. श्रीहस्तेरेईशजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हरिलाल-शिष्य)

५४७. श्रीहरिवंशदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५४८. श्रीहरिवंशदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(मानसरोवर वासी)

५४९. श्रीहरिवंशशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजैजैभैया-शिष्य)

५५०. श्रीहरेकृष्णजू पुजारी के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५५१. श्रीहरिकृष्णदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰हरिलाल-शिष्य)

५५२. श्रीहरिजीमलजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५५३. श्रीहरिवंशदासीजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५५४. श्रीहरिलालव्यासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५५५. श्रीहरिनाथजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीकिशोरीदास-सुवन)
५५६. श्रीहरिनाथजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰किशोरीलाल-शिष्य)
५५७. श्रीहरिचरणदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(जंत्रीस्वामी की शाखा में)
५५८. श्रीहरिसुखजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५५९. श्रीहरीदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६०. श्रीहरीदासजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰राधालाल-शिष्य)
५६१. श्रीहरीदासजू (समाजी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६२. श्रीहरीदासजू (गोवर्धनवासी) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६३. श्रीहरीदास तोमर के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[हि]

५६४. श्रीहितध्रुवदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६५. श्रीहितअनूपअलिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६६. श्रीहितरघुनाथजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५६७. श्रीहितदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(अग्रवन वासी)
५६८. श्रीहितदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(भोरी सखी-शिष्य) (मालवा वासी)
५६९. श्रीहितदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰गोवर्धनलाल-शिष्य)
५७०. श्रीहितदासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(मंडला नगर के निकट 'नारा' ग्राम वासी)
(गो॰वृन्दावनवल्लभ-शिष्य)
५७१. श्रीहितदासीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(१८ वीं शती)
५७२. श्रीहितचरणदास के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

५७३. श्रीहितशरणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰रूपलाल अधिकारी-शिष्य)
५७४. श्रीहितबल्लभशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीपरमानन्ददास-शिष्य)
५७५. श्रीहितअलीशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५७६. श्रीहितरूपशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(श्रीजैजैभैया-शिष्य)
५७७. श्रीहितशरणजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰वृन्दावनबल्लभ-शिष्य)
५७८. श्रीहितसुखजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
(गो॰लड़ैतीलाल-शिष्य)
५७९. श्रीहितगोपालजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८०. श्रीहितरसिकजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८१. श्रीहितनिधिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८२. श्रीहितब्रलभद्रजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८३. श्रीहितभगवानजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८४. श्रीहितभूषणजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८५. श्रीहितमथुरेशजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८६. श्रीहितराधामोहनजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८७. श्रीहितूलड़ैतीअलिजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

[ही]

५८८. श्रीहीरादासजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५८९. श्रीहीरासखीजू (वाणीकार) के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
५९०. श्रीहीरानन्दजू के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
श्री सब रसिकनि के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
श्री सब भक्तनि के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
श्री सब अवतारनि के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।
श्री जीवमात्र के प्रान जीवन धन श्रीहरिवंश।

जै जै राधाबल्लभ श्रीहरिवंश। जै जै श्रीसेवक रसिकन अवतंश॥
जै जै राधाबल्लभ श्रीहरिवंश। जै जै श्रीवृन्दावन श्रीवनचन्द॥